सम्पूर्ण हिन्दी मुरली शब्दकोश

मुरली में आने वाले हिन्दी, अंग्रेजी और कहावतों के सरलीकृत अर्थ व्याख्या सहित

यहां साकार और अव्यक्त मुरलियों के कठिन शब्दों को शब्दकोश में शामिल किया गया है। देश-काल, भाषा की समझ,ज्ञान- स्तर में भिन्नता होने के कारण हर किसी के लिए कठिन और सरल शब्द का मानदण्ड भिन्न - भिन्न हो सकता है। अतएव शब्दों के चयन में सामान्यीकरण पर विशेष ध्यान दिया गया है।यत्र - तत्र शब्दों के अर्थ को स्पष्ट करने के लिए मुरली के महावाक्यों को उद्धरण के रूप में प्रस्तुत किया गया है।अज्ञानता या भ्रम की स्थिति होने पर मुरली के शब्दों के सही अर्थ न समझने पर अर्थ का अनर्थ हो जाता है। अतएव इस शब्दकोश में चयनित 1728 शब्दों के सरलीकृत अर्थ मुरली को समझने एवं बोधगम्य बनाने में सहायक होंगे।

मुरली मे आने वाले हिन्दी शब्दों के अर्थ

---

(1)- सिकीलधे = बहुत सिक- सिक से मिलते हैं। आत्मा परमात्मा अलग रहे बहुकाल तुम 5 हजार वर्ष बाद फिर आकर मिले हो, इनको कहते हैं बेहद के सिकीलधे बच्चे।
(सिन्धी शब्द पर मूलतः फारसी भाषा का शब्द)

(2)- मनमनाभव = स्वयं को आत्मा समझ एक बाप परमपिता शिव को याद करना|

(3) - मामेकम् = सिर्फ मुझ एक बाप/शिव को याद करो |

(4) - अशरीरी=शरीर में रहते हुए शरीर से अलग/डिटैच/ भिन्न/ बिना |

(5)- आत्मभिमानी = देह में रहते अपने को आत्मा रूप में स्थिर रहना या अनुभव करना |

(6) - देही = देह को चलानेवाली/मालिक/आत्मा |

(7) - विदेही =बिना देह की/ शरीर से बिल्कुल अलग

(8)- कलंगीधर = कलंक को धारण करना |

(9) - मध्याजी भव = स्वर्ग के सम्पूर्ण रूप (विष्णु) का स्वरूप को याद करो।

(10) - कृष्णपुरी = सतयुग में श्रीकृष्ण का राज्य

(11)- बल्लभ = पृथ्वी के राजा के अर्थ में/इसका एक अर्थ प्रिय भी/ दुनियावी रिश्तो से पार

(12) - कल्प = 5000 वर्ष का एक चक्र का नाटक / ड्रामा

(13) - युग = सृष्टिचक्र का ¼ एक चतुर्थांश/ 1250 वर्ष

(14) - वर्सा = शिवबाबा से मिलने वाले ज्ञानयोग के बल से सतयुग मे प्राप्त होने वाली राजाई अर्थात् राज्याधिकार |

(15) - पारलौकिक = इस साकारी लोक या दुनिया से पार/ बहुत दूर/सूक्ष्मलोक से भी ऊपर/ दुनियावी रिश्तों से परे

(16) - लौकिक = दुनियावी/ सांसारिक रिश्ते /सम्बन्ध

(17) - माया = 5 विकार(काम, क्रोध, मोह, लोभ और अहंकार) बाबा के ज्ञान से परे इसका अर्थ धन- सम्पत्ति के अर्थ में रूढ़ था।

(18) - बेहद = इस मायावी/ सांसारिक दुनिया के हद / सीमा से पार/ असीम

(19) - मूसल = मिसाइल्स/ अणुबम/प्रक्षेपकास्त्र जैसे अन्य विध्वंशकारी अस्त्र- शस्त्र

20) - रूहरिहान = आत्मा की आत्मा से/ आत्मा की परमात्मा के साथ बातचीत

21) - मास्टर ज्ञान सूर्य = ज्ञान-सूर्य (शिव बाबा) का शिष्य/ बेटा/ स्वरूप।

(22)- निराकार सो साकार = साकार मे कर्म करते हुए अपने निराकार स्वरूप (stage) की स्मृति/याद में रहना

(23)- पोतामेल = हिसाब-किताब, रोजनिशी, शिव बाबा को प्रतिदिन का पोता मेल दे दिया तो धर्मपुरी में नहीं आना पड़ेगा

(24)- स्वदर्शन चक्रधारी = स्वयं को आत्मा समझते हुए सृष्टि चक्र और 84 जन्मों को स्मृति/याद में रहना

(25)- सतोगुण = अच्छे गुणधारी, विशेष रूप से सतयुग फिर 14 कला सम्पन्न त्रेतायुग तक की यह स्थिति।

(26) रजोगुण= राजसिक/ उपरोक्त दो युगों से कम गुण विशेषकर द्वापर से जहां ईर्ष्या-द्वेष रूपी रज/ धूल प्रारम्भ होती हैं।

(27) तमोगुण = गुणों में सबसे निम्न स्तर/(4 कला सम्पन्न कलियुग से/ भारत मे अरबो के आक्रमण से शुरू)

(28) - उतरती कला = उत्तरोत्तर या सतयुग से धीर धीरे 16 कलाओं में ह्रास/कमी आना

(29)- शो करना/बाजी = दिखावा/नाम मान शान के पीछे चलना/ प्रसिद्धि के लिए प्रयासरत (संकर/ मिश्रित शब्द)

(30) मुंझना = समझ में न आना

(31) - राजाई= बादशाही, (विशेषकर सतयुग व त्रेतायुग में राज्य प्राप्त करने के सन्दर्भ में)16 कला सम्पन्न - मानव स्वभाव/व्यवहार की सर्वश्रेष्ठ कला(१००% सर्वगुण सम्पन्न)

32 - निर्विकारी = विकार (बुराइयों) रहित (रजो, तमो से सम्बन्धित

(33)– (क) डबल ताजधारी = संगमयुगी ब्राह्मण का और सतयुगी देवता दोनों के आभामंडल की लाइट का ताज धारण करना।

(ख) डबल अहिंसक- प्रथम हिंसा कामविकार और मन वचन कर्म की हिंसा से मुक्त होना।

(34) कुख वंशावली = गर्भ से जन्म (लौकिक)।

(35) मुख वंशावली = ब्रह्मा मुख से जन्म (अलौकिक)।

(36) अकालमूर्त = जिसका काल भी न कुछ बिगाड़ सके/ अमर/ मृत्युंजय स्वरूप।

(37) सालिग्राम = आत्माएं/ जल के बहाव से नदी - समुद्र में सबसे चिकना सुन्दर पत्थर जो हिन्दू धर्म में पूज्य शिव बाबा हम बच्चों को शालिग्राम कहते हैं जिनकी शिवलिंग के साथ भक्त लोग पूजा करते हैं।

(38) मूल वतन = परमधाम/ सर्व आत्माओं का मूल घर।

(39) रस = प्राप्ति का सार/ आनन्द।

(40) विनाश काले विपरीत बुद्धि = अन्त समय दुर्बुद्धि का आना / अन्त समय भगवान को भूलना विनाश काले प्रीतबुद्धि-----पांडव विनाश काले विपरीत बुद्धि--कौरव। जो सृष्टि के अंत के समय विनाश के निमित्त बनते हैं।

(41)माया=माया से तात्पर्य संन्यासी साधक धनसम्पत्ति के मोहसे लेते हैं, किन्तु मुरली में बाबा ने काम ,क्रोध, मोह,लोभ आदि 5 विकारों को माया की संज्ञा दी है।

(42) बलिहार जाना =न्यौछावर/समर्पित/कुर्बान कर देना।

(43) विकर्माजीत =काम, क्रोध आदि विकर्मों से दूर/शून्य।

(44) वर्सा =परमात्मा / बड़ो से सम्पत्ति का स्वतः बच्चों/ छोटों को मिलना।स्वर्ग का वर्सा लेने और स्वर्ग में ... पूरा पवित्र बनें तो राजाई पद मिलता है।बाप से पूरा वर्सा लेने के लिए पवित्र जरूर बनना है।

(45) नष्टोमोहा =पुरानी दुनिया से मोह ममत्व का त्याग, निर्मोही स्थिति।घरबार सम्भालते, पुरानी दुनिया में रहते सभी से ममत्व मिटा देना। देह सहित जो भी पुरानी चीजें हैं उन्हें भूल जाना।

(46) ममत्त्व रखना =मोहमाया/अपनेपन के भाव में रहना।

(47) माटेले/मोतेले और सौतेले
=जो माँ को पसन्द हो/ सगा, जो सौतेला न हो।जो पढ़ाई और योग पर अटेन्शन नहीं देते, जो मातेले बन बाप पर पूरा-पूरा बलिहार जाते हैं उन्हें राजाई पद प्राप्त होता है।
इसके विपरीत जो पढ़ाई और योग पर पूरा टेंशन नहीं देते वह सौतेले।जो सौतेले हैं, बलिहार नहीं जाते हैं वो 21 जन्म ही प्रजा में चले जाते हैं।

(48) सत्कर्म =वह पुरुषार्थी कर्म जो भविष्य/ आगे के लिये सुरक्षित हो।

(49)अकर्म = जिस कर्म का खाता ही न बने अर्थात् सत्कर्म के खाते का क्षीण होना (देवताओं का कर्म इसी कोटि में आता है।)

(50) विकर्म = जिस कर्म से भविष्य में दुःख का खाता बढें।

(51) निर्लेप= जिस पर विकारों का लेप ना लगा हो/ निर्विकारी स्थिति स्टेज/ जिस पर पाप और पुण्य का लेप ना लगा हो।

(52) सुबह का साई= जो सुबह मिलता हो अर्थात् ईश्वर/ शिव बाबा।

(53) बेहद का बाप = प्रजापिता/ बापदादा/ शाब्दिक अर्थ जो सीमा से परे हो ।

(54) मूसलाधार = लगातार/ बिना रूके (संकर शब्द)।

(55) फानन = अचानक/तुरन्

(56) मिसाल- राज्य = राज्य का नमूना/ उदाहरण।

(57) मृगतृष्णा/ मरीचिका= जो दिखाई तो देता हो पर वास्तव में होता ही नहीं।इच्छा के बारे मे संम्पूर्ण - अज्ञान। इच्छाए मृगतृष्णा के समान है जिसके पीछे भागने से और ही दूर चलती चली जाती है और हमें असंतुष्ट करते रहती है। इस संबध में बाबा हमें बहुत अच्छी युक्ति बताते है कि जब हमें इच्छाओं के बारे में कुछ ज्ञान ही नहीं रहता तब मन कि ऊंची स्थिति द्वारा हमारी हर मनोकामना स्वतःपूर्ण हो जाती है। यह युक्ति है सदा संतुष्ट और तृप्त रहने कि।

(58) स्वचिन्तन= स्वयं का आध्यात्मिक मनन- चिन्तन/ आत्मा की समझ।

(59) अन्तर्यामी = मन के ज्ञाता/ सबकुछ जानने वाला।

(60) बाह्यामी =बाहरी/ दुनियादारी का अनुभवी ।

(61) अन्तर्मुखी = जिसके विचार और ऊर्जा बाहरी रूप से निर्देशित होने के बजाय आंतरिक रूप से केंद्रित होते हैं।

(62) खग्गे/कन्धे उछालना= खुशी में रहना।

(63) गांवड़े= गाँव का रहने वाला ।

(64) गरीब- निवाज़ = गरीबों का रहनुमा/ मददगार शिव परमात्मा।बाबा कहते हैं मैं हूँ गरीब निवाज इसलिए अभी गरीब बच्चों की सब आशायें पूरी होती हैं।कन्यायें मातायें बिल्कुल गरीब हैं, उनके हाथ में कुछ भी नहीं।

(65) पत्थरपुरी= कलियुगी/दिलो दिमाग पत्थर सदृश (पत्थर पूजे हरि मिले, तो मै पूजूं पहाड़.....)

(66) पत्थरनाथ = माया/विकारों के वशीभूत।

(67) पारसपुरी = स्वर्ग/सतयुग(दिलोदिमाग जहाँ पारस पत्थर जैसा हो।

(68) पारसनाथ/बबुलनाथ/गौरीनाथ = परमात्मा/ हम ब्राह्मण आत्माओं को पारस सदृश बनाने वाला
गौरीनाथ या बबुलनाथ अर्थात् बबुल जैसे कांटों को फूल और जो सांवरे बन पड़े हैं उनको गोरा बनाने वाले हैं। महिमा सारी है ही एक शिव की।

(69) पथ प्रदर्शक =
पैगम्बर/रास्ता दिखाने वाला/गाइड।

(70) शिरोमणि= सर्वश्रेष्ठ/मुख्य/चोटी सर्वोच्च ।

(71) सूक्ष्म-वतन/लोक = स्थूल या साकारी लोक और मूलवतन या परमधाम के बीच का वह स्थान जहाँ ब्रह्मा, विष्णु,महेश के साथ फरिश्तों की दुनिया है।

(72) ऊँ शान्ति =
मैं आत्मा शान्त स्वरूप हूँ।

(73) अंगद के समान = अचल अडिग/ कैसी भी परिस्थिति में स्थिर रहना।-विनाशक बन कर अंगद समान माया पर विजय प्राप्त करो।

(74) अविनाशी बृहस्पति= अविनाशी राज्यभाग(ब्रह्मा के साथ) बाप शिव शक्तियों द्वारा भारत पर अविनाशी बृहस्पति की दशा लाते हैं।

(75) मायाजीत जगतजीत = माया पर विजय पाने वाले को जगत की बादशाही मिलेगी।

(76) मुक्तिदाता = सर्वदुःखों से मुक्ति/आजादी दिलानेवाले, शिव बाबा।

(77) रौरव नरक= नरक की अति/पुराणों में एक भीषण नरक का नाम जो २१ नरकों में से पाँचवाँ कहा गया है।

(78) निधनके = सर्वव्यापी के ज्ञान ने ही निधनका अर्थात् बेमुख, नास्तिक,कंगाल बना दिया है।बाबा के ज्ञान से हम अब धनका बन रहे हैं।

(79) बेअन्त = अनादि/ अन्तहीन /जिसका अन्त न हो।पहले कह देते थे ईश्वर सर्वव्यापी है, बेअन्त है। आगे हम भी समझते थे यह ठीक कहते हैं।

(80) हठयोग= हठ करके योग लगाना/
जिसमें शरीर को साधने के लिये बड़ी कठिन कठिन मुद्राओं और आसनों आदि का विधान है। विशेष—नेती, धौती आदि क्रियाएँ इसी योग के अंतर्गत हैं।शरीर के भीतर कुंडलिनी, अनेक प्रकार के चक्र

तथा मणिपूर आदि स्थान माने गए हैं। मत्स्येंद्रनाथ और गोरखनाथ इस योग के मुख्य आचार्य हो गए है।

(81) रूद्रमाला

➡शिव की माला जिसमें 08,108,16108 की माला सम्मिलित है।

(82) नूँथ होना

➡जुड़ा हुआ।पहले से लिखा हुआ है।तुम्हारा नाम कितना अच्छा है - स्वदर्शन चक्रधारी कितना गुप्त राज़ ड्रामा में नूंधा हुआ है माला में पिरोया हुआ

(83) खाद

➡पांच विकारों का लेप हो/ द्वापर युग से आत्मा में विकार रुपी खाद पड़ती है।जो संगम युग पर ब्राह्मण योग बल द्वारा अथवा कर्म योग द्वारा खत्म करते हैं।

(84) शान्ति का घमंड/

➡शान्ति/साइलेन्स की शक्ति। ब्राह्मण की शान्ति शक्ति द्वारा संगम पर माया पर विजय प्राप्त करते हैं।

(85) साकारी सो अलंकारी

➡देवता (शरीर में रहते💯 सर्वगुण धारी)

(86) पद्मपति जज

➡अखुट सम्पत्ति(ज्ञान - योग धन) का स्वामी

(87) मत-पंथ

➡गुरूओं के बताये मत व उनके द्वारा दिखाये गये रास्ते पर 🚶 चलना

(88) धरिया

➡धुरण्डी (होली के अगले दिन का एक त्यौहार)

(89) आश्चर्यवत सुनन्ती, कथन्ती, भागंती

➡सब कुछ सुनकर फिर छोड़ने वाला।गाया हुआ है आश्चर्यवत सुनन्ती, कथन्ती, भागन्ती... चलते-चलते माया की प्रवेशता होने के कारण ज्ञान से दूर हो जाते हैं।

(90) कच्छ- मच्छ

➡परमात्मा के अवतारों के पौराणिक नाम यथार्थ- मत्स्यावतार, कच्छ,वराह

(91) मर्तबा

➡पद/ पोजीशन

(92) ताउसी तख्त

➡राज्य-भाग। सतयुग में बाबा की सपूत बच्चों को राज्यभाग तक मिलता है

(93) टिंडन

➡बिच्छू - टिंडन जैसे जहरीले जीव

(94) असल

➡सही मायने में/ सच/ वास्तव में

(95) शिवपुरी

➡शिव परमात्मा का निवास स्थान (परमधाम में सबसे ऊपर)

(96) विष्णुपुरी

विष्णु का निवास स्थान(सूक्ष्मलोक)

(97) साकारपुरी

➡मनुष्यलोक(जिसमें सभी ग्रह-नक्षत्र और जीवधारी, जड़- चेतन आते हैं)

(98) फराक दिल

➡रहमदिल/साफ-शुद्ध चित्त वाला

(99) कखपन

➡बुराई/अवगुण।बाप को अपना कखपन दे, बलिहार हो, सबसे ममत्व मिटा देना है।

(100) तत्त्वज्ञानी

➡जीवन / संसार के सार या मूल को जाननेवाला।

---

101) ब्रह्मज्ञानी

➡ ब्रह्म -तत्त्व को जाननेवाला

(102) लौकिक

इस संसार में रहते हुए व्यवहार करे

(103) अलौकिक

➡जो इस लोक से परे का व्यवहार करे, अद्भुत अपूर्व।

(104) कवच

बख्तर/ युद्ध में छाती की रक्षा के लिये उपयोगी आवरण

(105) बेगर

➡अकिंचन/भिक्षुक/दरिद्र

(106) विदेही बाप

➡अशरीरी बाप/शिव परमात्मा

(107) बैकुण्ठनाथ

➡स्वर्ग(सतयुग-त्रेतायुग) के मालिक/ राजा

(108) त्रिलोकीनाथ

➡तीनों लोकों का मालिक शिव परमात्मा

(109) आदमशुमारी
➡बहुतायत/अति/जनगणना

(110) समजानी
➡ समझाना, राय देना, समझदारी/समझ

(111) अभूल
➡भूल न करने वाला

(112) अष्टरत्न
➡सबसे आगे का नम्बर /पास विद् आनर केवल आठ आत्माएं/ आठ की माला इन्हीं से बनती है।

(113) होवनहार
➡सम्भावित/ भविष्य में होने वाला

(114) निर्वाणधाम
➡ समस्त आत्माओं के साथ परमात्मा का भी निवास स्थान/ परमधाम/परलोक/ब्रह्मलोक

(115) करनकरावनहार
➡सब कुछ करने कराने वाला परमात्मा

(116) भंडारा

➡खाने-पीने की वस्तुओं का संग्रह स्थल

(117) कर्मभोग

➡विकर्मों का खाता जिसे भोगना पड़ता है या योगबल से मिटाया जा सकता है।

(118,)कर्मातीत

- अपनी पिछली कर्मों के हिसाब किताब के बंधन से मुक्त।कर्मयोग की स्थिति से कर्मभोग को परिवर्तन कर देना - यही कर्मातीत स्थिति है।

(119) निर्माण चित्त

➡जिसका मन निर्मल/साफ हो/ निर्माण करने का जिसमें हृदय हो

(120) अलबेलापन

➡आलस्य (पांच विकारों पर भी भारी पड़ने वाला विकार) बाबा ने अलबेलापन को छठे विकार की संज्ञा दी है।

(121) सर्वोदय लीडर

➡सब पर दया करने वाला

(122) शुरूड़

तीक्ष्ण बुद्धि/प्रखर

(123) सूर्यवंशी
सतयुगी देवी देवता

(124) चन्द्र वंशी
त्रेतायुगी देवी देवता

(125) कल्प-कल्पान्तर
➡हर कल्प में (सतयुग से संगमयुग तक)।5000 वर्ष का एक चक्र का नाटक/ड्रामा.
अब जो कर्म करेंगे वही कल्प-कल्पान्तर ऊंच पद पायेंगे। अभी फेल हुए तो कल्प कल्पान्तर फेल।

(126) आप ही पूज्य आपे पुजारी
➡स्वयं की (अपने देव स्वरूप की) स्वयं ही पूजा करने वाली देवता वंशावली की आत्माएं।तुम आत्माओं की पूजा होती है। हम पूज्य और पुजारी कैसे बनते हैं वह अब समझते हो।

(127) आत्माएं अंडेमिसल रहती
➡परमधाम में ऊपर परमात्मा के नीचे नम्बरवार आत्माएं अण्डे की तरह रहती है।

(128) विचार सागर मंथन

➡अच्छी रीति सोचना समझना।मुरली और ईश्वरीय विचारों के बिन्दु POINT सुनकर, नोट कर सवेरे सवेरे उस पर गौर कर विचार मनन करना

(129) भस्मासुर
➡एक असुर जो किसी को या स्वयं को भी भस्म कर सकता है। बाप के सिवाए और किसी के संग जोड़ा तो भस्मासुर बन जायेंगे इसलिए श्रीमत पर चलते चलो।

(130) डोडा
➡ जवारी, ज्वारे / बाजरी कि रोटी

(131) मुरीद
➡आकर्षित/प्रशंसक

(132) भागीरथी
➡भाग्यशाली रथ ब्रह्मा का /भगीरथ की तपस्या के समान। भारी। बहुत बड़ा।

(133) जिन्न जैसी बुद्धि
➡अथक परिश्रमी (जिन्न का अर्थ भूत)

(134) नंदीगण

➡बैल की प्रतिकृति जो शिवमन्दिर में होती है/कलियुग अन्त में शिव बाबा जिन दो रथों/तन (ब्रह्मा बाबा व गुलजार दादी) का सहारा लेते हैं, यही नन्दीगण के प्रतीक है।

(135) उजाई माला

➡बुझी हुई माला।

(136) अजामिल

➡पुराण 📖के अनुसार एक पापी ब्राह्मण का नाम जो मरते समय अपने पुत्र 'नारायण' का नाम लेते हुए उसका उद्धार होगया ।

(137) मुरब्बी बच्चा

➡आज्ञाकारी/पसंदीदा/समान।

(138) भगवानुवाच

➡ शिव परमात्मा के महावाक्य/ विशेषतः मुरली पूरी तरह भगवानुवाच ही है

(139) कागविष्ठा सुख

➡ अल्पकाल क्षणभंगुर सुख, जिसे कहते हैं कागविष्ठा समान सुख है ।बहुत थोड़ा/ कौए की लीद जैसा गन्दा।

(140) नामी-ग्रामी

➡ प्रसिद्धि प्राप्त करने वाला

(141) युगल

➡जोड़ा/दम्पत्ति / पति-पत्नी

(142) सम्पूर्ण ब्रम्हा

➡सूक्ष्म शरीरधारी वतनवासी ब्रह्मा/साकार में कर्मातीत ब्रह्मा

(143) व्यक्त ब्राह्मण

➡शरीरधारी ब्रह्मा और ब्राह्मण

(144) अव्यक्त सम्पूर्ण ब्रह्मा

➡सूक्ष्म वतनवासी ब्रह्मा

(145) प्रजापिता

➡सभी ब्राह्मण आत्माओं के पिता ब्रह्मा द्वारा ब्राह्मण कुल की रचना हुई।

(146) सम्पूर्ण सरस्वती

➡सूक्ष्म शरीरधारी/वतनवासी सरस्वती

(147) नाम बाला

➡प्रसिद्ध करना

(148) श्रीमत

➡शिव परमात्मा के द्वारा उच्चारित मुरली ज्ञान आधारित मत/ विचार मुरलियाँ, शिव बाबा के सत्य वचन, ब्रह्मा मुख के माध्यम से साकार रूप में 1951 से 1969 तक उचारे गये महावाक्य हैं। 1969 से गुलजार दादी के तन में जो अव्यक्त मुरली बाबा ने सुनाई,।वे दोनों ही श्रीमद् के अंतर्गत आती हैं।

(149) गुरूमत

➡प्रसिद्ध गुरूओं के मत विचार पर आधारित नियम

(150) शास्त्रमत

➡वेद, पुराण, उपनिषद, बाइबिल ,कुरान आदि पर आधारित मत

(151) मन्मत्/मनमत्

➡स्वयं के तर्क /विवेक बुद्धि पर आधारित विचार

(152) पक्का महावीर

➡विजयी ,सफल, दृढ़, सफलतामूर्त। सपूत ब्राह्मण बच्चे महावीर के प्रतीक हैं।

(153) रसातल

➡बुराई की अति

(154) अनादि

➡जिसका न कोई आदि/आरम्भ हो, न अन्त हो।5 स्वरूप के अभ्यास में पहला अनादि स्वरुप हैं। अनादि स्वरूप ज्योति बिन्दु हैं।

(155)आदि स्वरूप
- आदि का अर्थ होता है प्रथम/शुरुआत।5 स्वरूप के अभ्यास में दूसरा स्वरूप आदि स्वरूप है। सृष्टि के आरंभ में आत्मा देव रूप में होती है।

(156) कब्रदाखिल
➡अकाले अवसान/मृत्यु/ समाप्ति।वास्तव में हम सब कब्रदाखिल थे। रावण ने कब्रदाखिल बना दिया है। बाप आकर कब्र से निकालते ..

(157) परिस्तान
➡फरिश्तों की दुनिया/सतयुगी दुनिया

(158) ज्ञान की कंठी
➡ज्ञान की माला/प्राप्ति

(159) अजपाजप
➡लगातार जाप करना(वह जप जिसके मूल मंत्र 'हंसः' का उच्चारण श्वास- प्रश्वास के गमनागमन मात्र से होता जाय),इस जप की संख्या एक दिन और रात में २१,६०० मानी गइ है।

(160) पद्मापद्म

➡अनेकानेक,अखुट,असीम, १००० खरब का एक पद्म होता है। संगम पर किया हुआ पुरूषार्थ पद्मापद्म, पद्मगुणा फलदाई होता है।

(161) शक्ति फर्स्ट

➡माताओं को आगे रखना। बाबा ने रुद्र ज्ञान यज्ञ में माता और बहनों को आगे रखा और ज्ञान कलश उन पर रखा।

(162) भासना आना

➡अनुभव होना

(163) रूहानी लीला

➡आत्मिक स्वरुप में स्थित रहना/देहीभिमानी होना

(164) मनसा

मन की शक्ति से/ मनसा सेवा।मन्सा सेवा: से शुभ भावना-कामना द्वारा दूर बैठी आत्मा को भी शान्ति शक्ति के प्रकंपन/ वाइब्रेशन प्राप्त करा करा सकते हैं।

(165) फौरन

➡तुरन्त, फटाफट

(166) मलेच्छ

➡पापी/ भ्रष्टाचारी

(167) रायल घराना
राजाई घराना/ सतयुगी देवी देवता का परिवार

(168) बेगर टू प्रिन्स ⇒
➡ विकारों के कारण दुखी आत्माओं को ज्ञान व योग द्वारा शिव बाबा राजकुमार अर्थात् धनवान, राज्य-अधिकारी बनाते है।

(169) अकर्ता
➡ कर्म के खाते से दूर/ निर्लिप्त /निर्बंधन। शिव बाबा को अजन्मा अकर्ता अभोक्ता कहा जाता है। क्योंकि शिव बाबा का कोई शरीर नहीं है।

(170) एक ओंकार
➡परम शक्ति एक ही है

(171) भ्रमरी मिसल
➡भ्रमरी की तरह दीपक में भूं भूं करना। ब्राह्मण बच्चे भ्रमरियाँ हो। भूँ-भूँ कर आप समान बनाना पड़ता है।

(172) कौड़ी मिसल
➡कौड़ियों के मोल/ मूल्यहीन।
संगम पर अभी हम कौड़ी से हीरे जैसा बन रहे हैं।
(173) जानीजाननहार

➡ सर्वज्ञ/सबकुछ जानने वाला शिव बाबा

(174) शमा
➡ अग्नि / शिव बाबा को शमा कहा है और हम आत्माएं *शमा* पर फिदा *परवाने*

(175) नूँथ
➡ पहले से लिखा हुआ

(176) खिव्वैया
➡ नाव को खेने वाला परमात्मा हमारी ज़िन्दगी रूपी नैया की पतवार को चला कलियुगी दुनिया से पार ले जाने वाला

(177) छि-छि-पलीती
➡ गन्दा(नये जन्में शिशु के कपड़ों जैसा)
मूत पलीती कपड़ु धोएं
- अगर (कोई) कपड़ा मूत्र से गंदा हो जाए, तो साबुन लगा के उसको धो लेते हैं। शिव बाबा संगम पर आकर हम बच्चों को विकारों से पवित्र कर देते हैं।

(178) सोमरस
देवताओं का अमृत

(179) नामाचार

➡ प्रसिद्ध/ लोक विश्रुत

(180) बांधेलिया

➡ बन्धन युक्त आत्मायें। वे ज्ञानी स्त्रियां जो शिव बाबा को तो याद करती हैं। परंतु प्रताड़ना आदि के कारण न चाहते हुए पवित्र नहीं रह पाती।

(181) हथेली पर बहिश्त

➡ हथेली पर/हाथ में स्वर्ग की बादशाही। शिव बाबा हम बच्चों को पुरुषार्थ कराकर स्वर्ग की राजाई सौंपते हैं।

(182) अल्लफ

➡ एक परमात्मा

(183) चात्रक रहना

➡ जिज्ञासु बने रहना, हमेशा तैयार

(184) मैं पन

➡ देह अभिमान

(185) नेष्टा

➡ नियम प्रमाण/योग।

(186) सचखण्ड

➡ सतयुग। शिव बाबा सचखंड स्थापना करने वाले हैं।झूठ खंड है कलयुग

(187) 8 बादशाही

➡ सतयुग में लक्ष्मी नारायण सहित 8 वंश की बादशाही चलती है , अष्टरत्न

(188) आदम - ईव

सृष्टि के शुरू में आने वाले प्रथम नर-नारी/ हिन्दू धर्म में मनु-श्रद्धा। संगम पर ब्रह्मा बाबा।

(189) सिजरा

➡ फूलों का गुलदस्ता सिजरा संगम की श्रेष्ठ आत्माओं का भी होता है। जो बाबा को पूरा बालों करते और पढ़ाई पर पूरा ध्यान देते हैं।

(190) दग्ध करो

➡ खत्म करो

(191) नटशेल

➡ सार रूप (संक्षिप्त)

(192) मच्छरों सदृश वापस जाना

➡ अन्त समय एक साथ अनेक आत्माएं मच्छरों के समान परमधाम जायेंगी।

(193) न्यारा और प्यारा

➡ सबसे न्यारा/अलग होते हुए भी सबका प्यारा होना

(194) रूहानियत

➡ आत्मिक स्थिति/ आत्मिक स्वरूप में स्थिर रहना

(195) हद का पेपर

➡ स्वयं या ब्राह्मण परिवार द्वारा पेपर

(196) मूलवतन

➡ आत्मा-परमात्मा का निवास स्थान, परमधाम,निर्वाणधाम, ब्रह्मलोक,शिवपुरी, परमधाम, शांतिधाम

(197) झांझ

➡ एक वाद्ययंत्र/ संगीत निकालने वाला स्थान

(198) भट्ठी

➡ जिसमें तपकर सोने में निखार आये/आबू जैसी पावन तपस्याभूमि में जाकर वरिष्ठों की क्लास आदि का श्रवण-चिन्तन-मनन से ब्राह्मणत्व में सुधार लाना

(199) राजयोग

➡ परमात्मा को याद करने की सर्वोच्च सहज विधि, जिसमें आंखें 👀खोलकर अपने को आत्मा समझकर परमात्मा के ज्योति स्वरूप का ध्यान किया जाता है।

(200) सुखधाम

➡स्वर्ग/सतयुग

---

(201) शांतिधाम

➡आत्मा-परमात्मा का निवास स्थान, परमधाम,निर्वाणधाम, ब्रह्मलोक,शिवपुरी, परमधाम

(202) परमधाम

➡ स्थानआत्मा-परमात्मा का निवास स्थान, परमधाम,निर्वाणधाम, ब्रह्मलोक,शिवपुरी, ,शांतिधाम,मूलवतन

(203) निर्वाणधाम

➡आत्मा-परमात्मा का निवास स्थान
/ ब्रह्मलोक, मूलवतन भी कहते हैं

(204) तदबीर

➡ अभीष्ट सिद्धि करने का साधन/ तरकीब/ यत्न/कर्म

(205) तकदीर

➡भाग्य/प्रारब्ध/ किस्मत

(206) लेप- छेप

➡ कर्मों का खाता

(207) गर्भ जेल

➡ गर्भ जेल में रहते कर्म बन्धन के हिसाब किताब चूकतू करना। द्वापर से आत्मा काम विकार/भोगबल से जन्म लेती है। गर्भ में दुख,कष्ट का अनुभव करती है।

(208) गर्भमहल

- सतयुग त्रेता में योगफल से जन्म लेने वाली आत्मा को गर्भ मे सुख अनुभव होने के कारण गर्भमहल कहा जाता है।

(209) अन्तर्मुखता

➡आत्मिक स्थिति में रहना/भीतर की ओर उन्मुख/आंतरिक ध्यानयुक्त।

(210) पित्र खिलाना

➡ परम्परा से चली आ रही भारतीय रस्म जिसमें लोग मृत व्यक्ति की आत्मा को ब्राह्मणों के शरीर में आह्वान कर पितरों की इच्छाओं को पूरा करने का प्रयास किया जाता है ।

⇔ ⇔ ⇔ ⇔ ⇔ ⇔ ⇔ ⇔ ⇔ ⇔ ⇔ ⇔ ⇔ ⇔

(211) शंख ध्वनि

➡ ज्ञान सुनाना बाप मुख से जो नॉलेज देते हैं – यह शंखध्वनि है। यही शंख ध्वनि ब्राह्मण बच्चों को भी करनी है।

(212) मौलाना मस्ती

➡भगवान की याद में मस्त

(213) अलाव

स्वीकार करना/ ज्ञान देना

(214) मोचरखाना

➡ मार/सजाये खाना

(215) अलबेलापन

➡ गैर जिम्मेदाराना व्यवहार/कर्म/आलस्य

(216) आपे ही तरस परोई

➡ देवताओं की बड़ाई और अपनी बुराई की भक्ति का गायन

(217) फारगति देना

➡ छोड़ के जाना/ भाग जाना/तलाक देना

(218) भंभोर

➡ गोल दुनिया।इस सारी दिुनया को ही भंभोर कहा जाता है।अब जागो, नहीं तो भंभोर को आग लगने के समय हाय-हाय करेंगेसारे सृष्टि रूपी भंभोर को आग लगनी है।

(219) तिजरी की कथा

➡ भक्ति मार्ग की सत्य नारायण की काल्पनिक कथा के मध्य में सुनाई जाने वाली एक कथा

(220) सचखण्ड

➡ स्वर्ग/सतयुग

(221) शूबीरस

➡ स्वर्ग का एक पेय/अमृत

(222) बनियन ट्री

➡प्राचीन वटवृक्ष जिसकी जड़ का पता नहीं (कोलकाता के बोटेनिक गार्डन में है)दुनिया का सबसे विशालकाय बरगद का पेड़ भारत में है। ... इसे कहते हैं 'द ग्रेट बनियान ट्री'।

(223) डबल सिरताज

➡ स्वर्ग में डबल सिरताज होते देवी देवता एक लाइट अर्थात पवित्रता का ताज और दूसरा रतन जड़ित ताज

(224) प्लानिंग बुद्धि

➡ लक्ष्य पर सोचती बुद्धि

(225) प्लेन बुद्धि
➡ साफ बुद्धि

(226) निर्लेप
➡ जिसको पाप पुण्य का लेप क्षेप न लगता हो।कर्म बन्धन से मुक्त

(227) काम कटारी
➡ काम विकार में जाना

(228) अविद्याभव
➡ अज्ञानता के कारण भूल जाना

(229) सालिग्राम
➡ शिव लिंग के साथ जो छोटे छोटे शिवलिंग आकार के पत्थर होते हैं। जो हम ब्राह्मण आत्माओं के प्रतीक हैं।

(230) नम्बरवार
➡कोई होशियार कोई बुद्धू / क्रमोत्तर गिरती हुई स्थिति में होना। नम्बरवार होने लक्ष्य सभी का है। नम्बरवन का है ,लेकिन लक्षण नम्बरवार हैं।नम्बरवार होने के कारण माया का है।

(231) जड़जड़ीभूत होना

➡ खोखला होना।इस समय सारी दुनिया जड़जड़ीभूत है। बनेन ट्री का मिसाल देते ...। तमोप्रधान जड़जड़ीभूत सृष्टि है, इनका विनाश होना है ...

(232) बहिश्त

➡ स्वर्ग/ सतयुग त्रेतायुग

(233) खिव्वैया

➡ तारणहार/ नैया पार लगाने वाला शिव बाबा

(234) करनीघोर

➡ जिन्हें मुर्दे💀 की पुरानी चीजें दी जाती हैं। इस प्रकार हमें शिव बाबा को अपने पुराने विकारों को देकर निश्चित हो जाना चाहिए।

(235) गुलशन

➡ बगीचा

(236) अन्तर्मुखी

➡ शान्त/ जो शिव बाबा की याद में अन्तर्मुखी स्वभाव वाला हो जाये

(237) नैन चैन

आंख 👀की हलचल व व्यवहार द्वारा,नेत्र सुख

(238) जिस्मानी यात्रा

➡ शारीरिक यात्रा। भक्ति मार्ग से इस यात्रा से तो धक्के खाते रहते हैं। मनुष्यों का बुद्धियोग है स्थूल जिस्मानी यात्रा तरफ। तुम्हारा बुद्धियोग है रूहानी यात्रा यरफ

(239) मुलम्मे

➡ कमतर/निम्न बर्तन की गन्दगी करने से संबंधित

(240) कुम्भीपाक नर्क

➡ पुराणों 📖में वर्णित एक घोर नर्क।

कुम्भी पाक हिन्दू धार्मिक मान्यताओं और ग्रंथानुसार एक नरक का नाम है।जो मनुष्य अपने स्वाद के लिए या पेट के लिए जीवित पशु-पक्षियों को मारकर पकाता और खाता है, उसका स्वयं का अन्तःकरण भी, सीजता रहता है। यही “कुम्भी पाक नरक” कहलाता है, जिसमें वह शरीर रूपी कुम्भ में अन्दर ही अन्दर स्वयं सीजता या भुना करता है।

(241) सिरताज

➡ बाबा के सिर के ताज / आज्ञाकारी

(242) मोहताज

मोह के ताजधारी/ माया के वशीभूत

(243) अकालमूर्त

➡ जिसको काल ना खा सके/नित्य/अविनाशी ।

(240) फरमान बरदार

➡ आज्ञाकारी होना

(245) रमता जोगी

➡ एक जगह जमकर न रहनेवाला। घूमता फिरता। जैसे,—रमता जोगी बहता पानी इनका कहीं ठिकाना नाहिं।

(246) हमजिन्स

➡ बन्धु,मित्र

(247) फखुर/ फक्र/फलक

➡ नशा/ गर्व

(248) समर्थ

➡ फायदेमंद/ सम्पन्न

(249) समर्थी

➡ सम्पन्नता

(250) व्यर्थ

➡ जो फायदेमंद नहीं हो/ अनावश्यक

(251) कौरव

➡ दुःख देने वाले मनुष्य , *जो ईश्वरीय नियम मर्यादाओं को न मानते है और न उनकी श्रीमत पर चलते है, कौरव कहलाते है!* भारत में कौरव वंशियों का महाविनाश के समय आपस में गृहयुद्ध होगा।

(252) पाण्डव

➡ जिनको ईश्वरीय नियम वा मर्यादाओं पर सम्पुर्ण निश्चय है और ईश्वरीय पार्ट को पहचान कर ईश्वरिय ज्ञान से जीवन मे धारण करते है वही सच्चे पांडव कहलाते है, परमात्मा भी इनके साथी बनते हैं।

(253) यादव

➡ जिन्होंने खुद के कुल का विनाश स्वयं (बॉम्ब ,मिसाईल) बनाकर करगें। युरोप आदि पश्चिम देश विज्ञान की शक्ति द्वारा परमाणु अस्त्र शस्त्रों द्वारा अपने ही मानव कुल का विनाश करेगें *

विशेष मुरली से = शास्त्रों में दिखाते हैं– लड़ाई में यादव कौरव मारे गये। पाण्डव 5 थे। फिर हिमालय पर जाकर गल मरे।अर्थात 5 % आत्माएँ तपस्या द्वारा शरीर के भान को समाप्त कर स्वर्ग अर्थात सतयुग में जाने की अधिकारी बनती हैं।

(254) रडिया मारना

➡ चीखना-चिल्लाना

(255) पोतामेल

➡ आत्मा जो मन वाणी कर्म द्वारा कार्य करे उसके रोज का हिसाब-किताब

(256) कर्म
➡ शारीरिक मानसिक वाचिक द्वारा किया गया कोई भी कार्य

(257) शफा पाना = फायदा/भला होना। आजकल के समय और सरकमस्टान्स प्रमाण अभी सेकण्ड में शफा पाने की इच्छुक हो जाओ

(258) टीवार्ट
➡ तिराहा/तीन रास्ते

(259) लवलीन
➡ प्यार में मस्त बाबा कहते हैं एक परमात्म प्यार में लवलीन होना ही ... संपूर्ण डिटैच हो जाए अपने देह से.

(260) मासी का घर
➡आसान/सरल लक्ष्मी-नारायण बनना मासी का घर थोड़े ही है। बड़ी राजधानी स्थापन हो रही है, कोटों में कोई ...
पूरा रिगॉर्ड रखना मासी का घर नहीं है। माया के भूत योग तुड़वा देते हैं।
जहां आसानी से आया जाया जा सके।

(261) सब स्टेशन

➡ शान्ति प्राप्त कर आगे भेजने वाला

(262) लड़ाई वालों का मिसाल

➡ कोई सैनिक का उदाहरण।उनमें थोड़ा बड़ा होने से ही मिलेट्री में दाखिल हो जाते ...

(263) लोन लेकर

➡ किराये पर, शिवबाबा भी पुराने शरीर ब्रह्मा बाबा और आदरणीय गुलजार दादी के तन का लोन लेते हैं।

(264) स्वदर्शन चक्र

➡ जो माया के अनेक चक्करों को समाप्त कर सृष्टि चक्र में स्व/आत्मा का दर्शन करते हुए प्रसन्न रहने वालों को बाप-दादा स्वदर्शन चक्रधारी कहते हैं।

सृष्टि चक्र के 84 जन्म के पार्ट को जानने/देखने वाले अर्थात कैसे एक देह छोड़ दूसरा लिया... कभी स्त्री का तो कभी पुरुष का... कभी उत्तर में तो कभी दक्षिण में.जन्म लिया।.. अपने 84 जन्मों की माला को देखें...

(265) वाममार्ग

➡ जब से देवताओं ने विकर्म करना शुरू किया तब से वाममार्ग शुरू हुआ। कर्मों अनुसार दूसरा शरीर लेते हैं

(266) गोया
➡ मानो/ अर्थात्

(267) माया
➡ काम, क्रोध, मोह, लोभ, अहंकार रूपी पांच विकार/भक्ति मार्ग में धन-संपत्ति

(268) शो करना
➡ नाम बढ़ाना। अपनी दैवी मीठी चलन से और बाबा को फालो कर बाप का शो करना है।

(269) चों चों का मुरब्बा
➡ बेमेल वस्तुओं का मेल / किस चीज से बना ये पहचानना मुश्किल/ सब कुछ मिक्स

(270) ओम्
➡ मैं आत्मा

(271) रूद्र-ज्ञान यज्ञ
➡ शिवबाबा ने स्वयं ज्ञान देकर जिस यज्ञ की स्थापना की हो।"तो यह है रुद्र राजस्व अश्वमेध अविनाशी ज्ञान यज्ञ। दक्ष प्रजापति का यज्ञ दिखाते हैं, उसमें घोड़े को जलाते हैं।बाप समझाते हैं यह है मेरा अविनाशी ज्ञान यज्ञ। अविनाशी द्वारा अविनाशी यज्ञ। जब सारी दुनिया के स्वाहा होने का समय आये तब तक यह यज्ञ चलना है।

(272) मिस न करना

➡ कभी न छोड़नाबाबा कहते बच्चे मुरली में तो नई-नई बातें निकलती हैं।जैसे बाप मुरली मिस नहीं करते ऐसे बच्चों को भी मुरली मिस नहीं करना है।

(273) इत्तला देना

➡ जानकारी देना, सूचना देना

(274) एक ओंकार

➡ एक मात्र भगवान 'एक ओंकार' का मतलब है कि केवल एक ही निर्माता है जिसने सब कुछ बनाया है।,सिख धर्म के मूल दर्शन का प्रतीक है, जो कहता है कि 'परम शक्ति एक ही है'।

मुरली में आने वाली कहावतों के अर्थ

---

(275) अपनी घोट तो नशा चढ़े

➡ अपनी बुद्धि से मनन-चिन्तन जितना करेंगे, उतना नशा चढ़ेगा। पुरूषार्थ करने वाले को नशा और खुशी रहती है इसलिए कहा जाता है – अपनी घोट तो नशा चढ़े।

(276) एक बाप दूसरा न कोई

➡ लौकिक व्यवहार में रहते हुए बुद्धि में परमात्मा के सिवा कोई । अब एकता पैदा करो, पवित्रता जीवन में अपनाओ माना एक बाप दूसरा न कोई। समय से वो आत्मा सुखी होगी दुःख लेश मात्र भी अनुभव नहीं कर सकती। ये गारंटी है।

(277) हथ कार डे दिल यार डे

➡ हाथों से काम करते रहो,दिल से शिव बाबा को याद करते रहो अर्थात् कर्मयोगी बन जाओ।

(278) घट में ही ब्रह्मा,घट में ही विष्णु,घट में ही नौ लख तारे।

➡ एक सेकण्ड में शिव बाबा ब्रह्मा बाबा के तन में आकर ज्ञान देते और ब्रह्मा से विष्णु और नौ लाख प्रजा तैयार हो जाती।

(279) चिंता ताकी कीजिए जो अनहोनी होय

➡ किसी भी बात की चिंता नहीं करनी चाहिए, क्योंकि जो होना है वही हो रहा।गाना भी है चिंता ताकी कि
जो अनहोनी होए। जो कुछ होता है ड्रामा में नहीं । तो जो टूटे हुए दिल वाले होते हैं वो रोते हुए दिखते हैं। है तो यह ड्रामा . ये रीयल है, इसमें हर आत्मा अपना पार्ट
बजाती है। कभी भी चिंतित नहीं होना है।

(280) चुल पे सो दिल पे

➡ जो साथ रहे हैं, वही दिल पर रहते हैं।

(281) जिन सोया तिन खोया

➡ जो अमृतवेले सो जाते हैं,वे सर्व प्राप्तियों को खो देते हैं। उस वक्त मुझे बाप को याद करो तो तुम बख्तर बन जाओ। अगर सवेरे-सवेरे नहीं हैं तो जिन सोया तीन खोया। सिर्फ सोना और खाना - ये तो गायन है इसलिए सवेरे रीस्टार्ट की आदत डालो।

(282) जो ओटे सो अर्जुन

➡ जो अपने आप आकर सेवा की जिम्मेदारी उठाता है, वही अर्जुन (नम्बरवार) में आता है।अमृतवेले सो जाते हैं, वे सर्व प्राप्तियों को खो देते हैं। जो अपने आप आकर सेवा की जिम्मेदारी उठाता है, वही अर्जुन (नम्बरवार) में आता है।

(283) टट्टू को टारा काजी को इशारा

➡ समझदार केवल इशारे से समझ जाता है जबकि मूर्ख चाबुक/ दण्ड से ही समझता है।

(284) तुरन्त दान महाकल्यान

➡ दान देने का संकल्प आते ही दान कर देना, क्योंकि इसमें महापुण्य का फल समाया हुआ है।

तुरंत दान महादान" वाक्य के संदर्भ में बाबा ने समझानी दी है कि : दान महापुण्य' कहा जाता है।* अगर तुरंत दान नहीं किया, सोचा, समय लगाया, प्लैन बनाया फिर प्रैक्टिकल में लाया तो इसको तुरंत दान नहीं कहा जायेगा। दान कहा जायेगा। तुरंत दान

और दान में अन्तर है। *तुरंत दान महादान है। महादान का फल महान होता है।*

(285) धन्ने सब में धूर, बिगर धन्धे नर से नारायण बनने के
➡ सब धन्धे में वही धन्धा सर्वश्रेष्ठ है जो नर से नारायण बना दे। बाकी किसी धन्धे से अविनाशी धन की प्राप्ति हो नहीं सकती।

(286) मिठरा घुर त घुराय
➡ मीठा बनो तो सब आपसे मीठा व्यवहार करेंगे।प्यार करो तो प्यार मिलेगा। बाप कहते हैं जो मेरे अर्थ बहुत बहुत सर्विस करते हैं, मनुष्य से देवता बनने के लिए बहुत प्यार करते हैं वही वर्स के अधिकारी होते हैं।

(287) बच्चू बादशाह पीयू वजीर
➡ काम विकार🗿 अगर विकारों का ♔राजा है,तो क्रोध उसका वजीर ♕ है।दोनों का आपस में बहुत गहरा नाता है।
बच्चू बादशाह पीरू वजीर. बनी बनाई बन रही अब कुछ बननी नांहि, चिंता ताकि कीजिए, जो अनहोनी होय

(288) बम-बम भोले भर दे झोली
➡ हे! परमात्मा हमारी बुद्धि रूपी झोली ज्ञान रत्नों से भर दो।

(289) मनुष्य से देवता किये,करत न लागी बार।

➡ भगवान को मनुष्य से देवता बनाने में तनिक भी देर नहीं लगती।ईश्वर की गोद ली है मनुष्य से देवता बनने के लिए, उनकी श्रीमत पर चलते हो।मनुष्य को देवता बनाना - यह कोई मनुष्य का काम नहीं है। बाप को ही रचता कहा जाता है।

(290) मूत-पलीती कप्पड़ धोये

➡ विकारों से मलिन मन रुपी कपड़ों को परमात्मा के याद रुपी साबुन से ही धोया जा सकता है।

(291) शेरनी का दूध सोने के बर्तन में ही ठहरता है।

➡ बाबा का श्रेष्ठ ज्ञान स्वच्छ मन वचन बुद्धि में ही धारण हो सकता है।दिव्य ज्ञान केवल शुद्ध बुद्धि में ही रहता है)। इसलिए अब, भगवान की पहली सलाह का पालन करना चाहिए, जो है 'पवित्र बनना'। सामान्य शब्दों में – पूर्ण ब्रह्मचर्य या ब्रह्मचर्य का पूरा पालन करें।

(292) सच तो बिठो नच

➡ जहां सच्चाई है, वहां मन खुशियों से नाचता रहता है। अर्थात् सत्यता की शक्ति वाला सदा नाचता रहेगा, बाबा बच्चों को शिक्षा देते – बच्चे बाप से कुछ भी छिपाओ नहीं।

(293) हिम्मते बच्चे मददे बाप

➡ जो बच्चे हिम्मत रख आगे बढ़ते हैं, उन्हें बाप की मदद जरूर मिलती है।बच्चे ही नहीं बनें तो बाप मदद किस बात की करेंगे?बाप

से ही बच्चों को वर्सा मिलता है। ... विजयी बनना ही है तो हिम्मते बच्चे मददे बाप का सदा ..

(294) सांप भी न मरे और लाठी भी न टूटे
➡ अपने कार्य में सफलता भी हासिल हो जाती और किसी को दुःख भी न मिले,ऐसी युक्ति से हर कर्म करना चाहिए।

(295) हुक्मी हुक्म चला रहा
➡ जो कुछ भी होता है , भगवान की आज्ञा समझकर उसे मानकर चलना है।✺ अव्यक्त बापदादा :-
➳ _ ➳ आप सबको पता है जगत अम्बा माँ का एक सदा धारणा का स्लोगन रहा है। हमें बापदादा चला रहा है, उसके हुक्म से हर कदम चला रहे हैं।* अगर यह स्मृति रहे तो हमारे को चलाने वाला डायरेक्ट बाप है। तो कहाँ नजरजायेगी? *चलने वाले की, चलाने वाले की तरफ ही नजर जायेगी, दूसरे तरफ नहीं।* तो यह करावनहार निमित्त बनाए करा रहे हैं, चला रहे हैं। जिम्मेवार करावनहार है।

(296) कख का चोर सो लख का चोर
➡ चोरी चोरी है, चाहे राई(पैसे) की हो चाहे पर्वत समान लाखों की हो। बाबा से छिपाने से धारणा हो नहीं सकती। जो छोटी सी चोरी कर सकता है वह बड़ी चोरी भी कर सकता है।

(297) गुड़ियों की पूजा

➡ भक्ति मार्ग में मिट्टी के पुतले बनाकर उनकी पूजा करना।

देवियों को क्रियेट कर, पालना कर फिर
उनका श्रृंगार कर डुबो देते हैं। इसको कहा जाता है गुड़ियों की पूजा। भाषण में तुम समझा सकते हो, कैसे यह अन्धश्रद्धा की पूजा है। गणेश भी बहुत अच्छा करके बनाते हैं। अब सूंड़ वाले तो कोई मनुष्य होते नहीं हैं। कितने चित्र बनाते हैं,

(298)तीन पैर पृथ्वी के

➡ थोड़ी सी जगह।यह लोक कथा पर आधारित है, वामन की कथा है कि राजा बलि से तीन पैर के बदले विष्णु ने पूरी पृथ्वी ले ली थी। पर बाबा कहते है कि तुम श्रीमत पर चलकर के तीन पैर अर्थात थोड़ा सा नहीं बल्कि सतयुग में चलकर सम्पूर्ण राज्यभाग पाओगे।

(299) गले का हार बनना

➡ अत्यंत प्रिय होना/शोभा बढ़ाना।सपूत बच्चे सदैव गले का हार बनते हैं

(300) बेड़ा डूबना

➡ विषय-विकार रूपी सागर में डूबना।बेड़ा डूबना शुरू हुआ माया के कारण मनमत पर । अब श्रीमत मिलती है। इस पर चलने से माया/विकारों से छुटकारा मिलता है।

---

(301) खग्गियां मारना/कन्धे उछालना

➡ आनंद और खुशी में मानो भांगड़ा नृत्य करना। निरन्तर खुशी में खग्गियां कौन मारने वाले हैं ,जो दिन-रात अपने को सेवा में बिज़ी रखते हैं,याद प्यार में लवलीन रहते हैं।

(302) झूठी माया झूठी काया झूठा सब संसार

➡ सत्य एक परमात्मा और बाकी सब कुछ झूठ। सतयुग-त्रेता में कभी झूठ बोलना ही नहीं। यहां तो पाप करते हैं झूठ बोलते रहते हैं। पाप आत्माओं को पुण्य आत्मा तो बाप ही बनाते हैं। झूठी माया, झूठी काया, है ही झूठ खण्ड। सचखण्ड था जबकि नई दुनिया में नया भारत था। अब वही भारत पुराना हो गया है। भारत जब नया था तो उनको स्वर्ग कहा जाता है, जिसको 5 हजार वर्ष हुए।.

(303) ठौर न पाना

➡ ठिकाना/सहारा न मिलना।बाप कहते हैं सतगुरू का निंदक ठौर न पाये। अगर बदचलन होगी तो ठौर नहीं पायेंगे

(304) डिब्बी में ठीकरी

➡ डिब्बा खोला तो मिट्टी मिली

(305) नशा चढ़ना

➡ आदत/ खुश होना,देह-भान को भूलने के लिए ज्ञान योगका नशा तो जरूर चढ़ना चाहिए।

(306) कट निकालना

➡ कमी-कमजोरी निकालना/योग अग्नि से विकारों को भस्मीभूत करना।

(307) सच्चा सोना बनना

➡ सोने जैसे आकर्षित होने का सबसे कीमती होने का गुण धारण करना। याद की अग्नि से विकारों की खाद निकाल सच्चा सोना बनना है।सच्चे सोने में खाद डाल देते हैं तो जेवर मुलम्मे का हो जाता है।

(308) तकदीर को लकीर लगाना

➡ माया वाला अलबेलापन में आकर भाग्य (ज्ञानयोग) कम प्राप्त करना/मिलना।
श्रीमत में कभी मनमत मिक्स नहीं करना, मनमत पर चलना माना अपनी तकदीर को लकीर लगाना”

(309) घमासान होना

➡ लड़ाई/अफरातफरी का माहौल

(310) अक्षर देना

➡ ज्ञान देना/वचन देना

(311) छी-छी दुनिया

➡ नर्क/पुरानी कलियुगी दुनिया।तुम जानते हो हमको इस छी-छी दुनिया से, छी-छी शरीर से मुक्त होकर जाना है।

बाबा जायेंगे तो बच्चे भी इस छी-छी दुनिया से अपनी गुल-गुल दुनिया में चलकर राज्य करेंगे।

(312) पाईऔ-पैसे की तकदीर

➡ भाग्य में सिर्फ थोड़ा लिखा हो

(313) दिवा जलाना

➡ याद करना

(314) सर का मोर होना

➡सर्वश्रेष्ठ होना/ हृदय में बसना

(315) माया - मच्छन्दर का खेल

➡ लुका-छिपी जैसा एक खेल जो माया भी खेलती/करती है।

(316) मुख में मुहलरा डाल देना

➡ हातमताई की कहानी में मुहलरा का प्रयोग किया गया है। उसमें मुहलरा मुख में डालते थे तो माया गुम हो जाती थी। मुहलरा निकालने से माया आ जाती थी।तो शिव बाबा का ज्ञान और योग मुहलेरा के समान है।

जब कोई परिस्थिति या संकट आता है तो बाबा कि याद और ज्ञान ही हमें माया से बचा सकता है।

(317)सच्चे दिल पर साहब राजी

➡ भगवान सच्चे हृदय वालों पर न्यौछावर होते हैं।उनकी सर्व मुरादें अर्थात् कामनायें पूरी होतीदिल भी आत्मा में है । तो सच्चे साहेब को याद करो तो सुख मिलेगा।जो बच्चे आदि समय पर बाप का स्नेह दिल में धारण कर लेते हैं तो दिल में परमात्म स्नेह के अधिकारी होते हैं

(318) लंगर उठाना

➡ जहाज़ को ठहराने वाला भारी लोहा मोह त्यागना।पुरानी दुनिया से लंगर उठा लेना है।

(319) पान का बीड़ा उठाना

➡ जिम्मेदारी उठाना/ हिम्मत करना

(320) अन्तमति सो गति

➡ अन्त समय के संकल्पों (अवचेतन मन चल रहा होगा)के अनुसार अगला जन्म ।योग में बहुत ताकत है... इससे पावन, पाप से मुक्त बनते और अंत मति सो गति हो जाती ...।

(321) चात्रक रहना

जिज्ञासु रहना/ हमेशा तैयार रहना।चारों ओर के बापदादा के महावाक्य सुनने और धारण करने वाले बच्चे चात्रक हैं

(322) मिट्टी खाना
व्यर्थ की बात करना

(323) सुनंति-पशंति-औरों को सुनावंती-भागंती
➡ अच्छी अच्छी आत्मायें भी माया से हार जाती

(324) आंटे में लून
➡ ज़रा सा/ बहुत आटें में थोड़ा सा नमक

(325) सरसों के माफिक
➡ सरसों के दाने जैसा/अनेकानेक

(326) मुख-पानी होना
➡ मुंह में पानी आना/पसंद आना

(327) गुल गुल बनना
➡ फूल जैसा सुन्दर बनना
रूहानी यात्रा पर तत्पर रह, याद से आत्मा और शरीर दोनों को गुल-गुल (फूल समान) बनाना है।बाप बच्चों को गुल-गुल बनाने की कितनी मेहनत करते हो तो बच्चों को भी अपने ऊपर तरस

दिलाओ कि हम बाबा को बुलाते हैं - हे पतित-पावन आओ, फूल बनाओ , अब वह आये हैं तो क्या हम फूल नहीं लगाएंगे!

(328) चढ़े तो चाखे बैकुंठ रस, गिरे तो चकनाचूर
पुरूषार्थ से स्वर्ग की बादशाही मिलना।यदि आश्चर्यवन्ती,सुनन्ती, पश्यन्ती,भागन्ती हो जायेंगे तो स्वर्ग की बादशाही से दूर हो जाएंगे।

(329) आप मुएं मर गई दुनिया
➡ दुनिया से किनारा करने से किसी की याद नहीं आयेगी।
जब आप मरते हैं तो आपके लिए सारी दुनिया मर जाती है -जब हम अपने मन से पूरी पुरानी दुनिया और सांसारिक सुखों का त्याग कर देते हैं, यानी अगर हम पुरानी दुनिया से मर जाते हैं, तो हमारे लिए पूरी दुनिया मर जाती है ठीक वैसे ही जैसे मृत व्यक्ति सुख-दुःख आदि सभी सांसारिक भावनाओं से मुक्त होता है, उसी प्रकार ब्राह्मण बालक जो जीवित रहते हुए भी मर जाता है, वह सुख-दुःख, प्रशंसा और
दण्ड से मुक्त होता है, संतुलन की स्थिति बनाए रख सकता है।

(330) अति खूने नाहक खेल
➡ क्रूरता करना। अंतिम समय में बहुत खून खराब होगा।जैसे एक तरफ खूने-नाहक खेल की लहर बढ़ती जयेगी, सर्व आत्मायें अपने को बेसहारे अनुभव करेंगी।

(331) हाथ कर दे दिल यार दे

➡ हाथ से कर्म करते हुए मन में एक बाप की याद रहना

(332) बुद्धि योग तोड़ना
➡ परमात्म याद से विमुख होना

(333) बुद्धि का ताला खोलना
➡ याद दिलाना/ ज्ञान का तीसरा नेत्र खुलना।

(334)विषय वैतरणी नदी पार करना
➡ पौराणिक मान्यता के अनुसार इसका जल बहुत ही गरम और बदबूदार है और उसमें हड्डियाँ, लहू तथा बाल आदि भरे हुए हैं। यह भी माना जाता है कि प्राणी को मरने के बाद पहले यह नदी पार करनी पड़ती है, जिसमें उसे बहुत कष्ट होता है। परंतु यदि उसने अपनी जीवितावस्था में गो दान किया हो, तो वह उसी गौ की सहायता से सहज में इस नदी के पार उतर जाता है। पापियों को यह नदी पार करने में बहुत कष्ट होता है।

मुरली में इसका रहस्य यही है कि बच्चों संगम युग में पुरुषार्थ करके ही तुम अन्त समय की सजाओं से बच सकते हो।

(335) इच्छा मात्रम अविद्या
➡ इच्छा के बारे मे सम्पूर्ण - अज्ञान =इच्छाए मृगतृष्णा के समान है जिसके पीछे भागने से और ही दूर चली जाती है और हमें असंतुष्ट कर देती है ।इस संबध में बाबा हमें बहुत अच्छी युक्ति बताते है कि

जब हमें इच्छाओं के बारे में कुछ ज्ञान ही नहीं रहता तब मन कि ऊंची स्थिति द्वारा हमारी हर मनोकामना स्वत:पूर्ण हो जाती है ।यह युक्ति है सदा संतुष्ट और तृप्त रहने की ।

(336) चढ़े तो चाखे वैकुंठ रस, गिरे तो चकना चूर

➡ ज्ञान मार्ग मे कदम कदम पर संभाल कर चलना पड़ता है ।हर कदम पर राय लेनी पड़ती है । जो ज्ञान मार्ग की सीढ़ी पर निरंतर आगे चढ़ते रहते है वे वैकुंठ रस चखने के अधिकारी बनते है लेकिन अगर माया के वश होकर नीचे गिर जाते है तो अधोगती को प्राप्त करते है ।

(337) चढ़ती कला तेरे भाने सबका भला

➡ आपकी सद्गगति के साथ - साथ सर्व आत्माओं को गति अर्थात् मुक्ति मिल जाती है । आपकी चढती कला मे सर्व का भला होता है ।

मुरली में आने वाले अंग्रेजी शब्दों के अर्थ

---

(338) हेल

➡ नर्क आज विकारों से वशीभूत आत्मा नर्क में है। जब किसी का निधन होता है तो कहते हैं कि स्वर्गवासी हुआ,गोया वह जीवित अवस्था में नर्क मैं था।

(339) ग्रेड

➡ कक्षा,धोरण,पद

(340) गॉडफादरली स्टूडेंट लाइफ

➡ ईश्वरीय विद्यार्थी जीवन

(341) नेचुरल कैलमिटी

➡ प्राकृतिक ,आपदा

(342) गॉडफादर इज नॉलेजफूल➡ सर्वज्ञ,सर्वज्ञानी,सर्वज्ञाता👁️ भगवान

(343) गार्डन ऑफ़ अल्लाह

➡ सतयुग,स्वर्ग

(344) रिलीजियस माइंडेड

➡ आस्तिक, आस्थावान,धरमाऊ

(345) रिफ्यूजी

➡ विस्थापित

(346) गॉडफादरली मिशन

➡ भगवान का दूत-कर्म

(347) डेविल

➡ 👽शैतान

(348) थॉट रीडर

➡ संकल्प को पढनेवाला

(349) गॉड क्रिएटर इज वन

➡ रचयिता भगवान् एक है

(350) कोर्स

➡ शरुआती ज्ञान। ब्रह्माकुमारी में परिचय प्राप्त करने के लिए 7 दिन का कोर्स कराया जाता है।

(351) रिवाइज्ड कोर्स

➡ अव्यक्त मुरली की फिर से पढ़ाई (हर इतवार को जो पढ़ी जाती है)

(352) रियलाईज़ेशन कोर्स

➡ज्ञान की धारणा/अनुभूति की पढ़ाई

(353) रीफाइन

➡ शुद्ध करना,साफ़ करना

(354) फाइन

➡ शुद्ध,साफ़

(355) कनेक्शन

➡ जोड़ना निरंतर परमात्मा शिव से अपना कनेक्शन रखना।

(356) पॉवरहाउस

➡ शक्ति-स्रोत परमात्मा ही है।

(357) सब-स्टेशन

➡ शक्ति प्राप्त कर आगे भेजनेवाले

(358) अटेंशन

➡ सावधानी

(359) इन्वर्टर बुद्धि

➡ अन्तर्मन में झांकती बुद्धि

(360) इमर्ज

➡ प्रकट होना

(361) प्रॉपर्टी

➡ मिल्कियत

(362) डीटी वर्ल्ड सोवरिनिटी

➡ देवताई , विश्व की बादशाही

(363) एवर प्योर

➡ सदा पावन,भगवान

(364) गॉडइज ओमनी प्रेजेंट

➡ भगवान् सर्वव्यापी है

(365) बर्थ राईट

➡ जन्मसिद्ध अधिकार

(366) फोरेनर

➡ विदेशी,परदेसी

(367) फ्रैक्शन

➡ भाग,,टुकड़ा

(368) ब्रदरहुड

➡ विश्व भ्रातृभाव, सार्वभौम सहिष्णुता,

(369) रिटर्न

➡ वापसी सेवा

(370) बायोग्राफी

➡ आत्मकथा

(371) वर्ल्ड माइटी

➡ विश्वशक्तिशाली

(372) पवित्रता

➡ मन - वचन - कर्म से पावन, निश्छलता, स्वछता, चतुराई रहित, सरल, साफ, शुभ वृत्ति , शुभ विचार कामना या इच्छा रहित, निस्वार्थ/ ब्रह्मचर्य का पालन करना।

(373) रूहानी यूनिवर्सिटी

➡आत्मा की जहां पढ़ाई होती है वह कॉलेज

(374) वाइब्रेशन

➡ प्रकंपन,संकल्पों की तरंगे।

(375) फालोवर

➡ मतावलंबी,अनुयायी

(376) सरेंडर

➡ समर्पित

(377) डलहेड

➡ बुद्धू

(378) अलाव

➡ मानना,स्वीकार करना,आज्ञा देना

(379) यूनिवर्स

➡ विश्व/ब्रह्मांड/सम्पूर्ण जगत

(380) सकाश

सकाश अर्थात शुभ वाइब्रेशन की ऊर्जा देकर किसी की मदद करना। परमपिता परमात्मा दुंगी अशांत आत्माओं की सेवा करने की मुरलियों में राय देते हैं

381) सालवेज

➡ बचाना,छुड़ाना, मुक्त कराना

382) फाउंडर

➡ संस्थापक

383) वायलेंस

➡ हिंसा,मार-काट,वाणी, शरीर द्वारा दूसरे को कष्ट पहुंचाना।

384) क्रिएटर

➡ रचयिता

385) परमिट

➡ परवाना,आज्ञा - पत्र

386) डायरेक्टर

➡ दिग्दर्शक

387) कंबाइंड

➡ साथ में,जुड़े

388) इन्वेंशन

➡ आविष्कार

389) डबल लाइट

➡ हल्केपन के साथ रौशनी का ताज

390) एवर रेडी

➡ हमेशा तैयार

391) टेम्परारी

➡ थोड़े समय के लिए,क्षणिक

392) लाइट हाउस

➡ लाइट हाउस बनना है एक आंख में शान्तिधाम, दूसरी आंख में सुखधाम ...हमारा स्थान (मधुबन) लाइट का स्थान बन जाएँगा, ऐसा लाइट-हाउस बनना है...
(समंदर में नावों को रास्ता दिखाने के लिए रौशनी का टावर)

343) सेफ्टी= सुरक्षा
यह शिव-बाबा की सेफ्टी बैंक है। तुम बाबा की सेफ में रहकर अमर बनते हो। तुम काल पर भी विजय पाते हो। शिवबाबा के बने तो सेफ हो गये।

394) सेण्टर
➡ सेवाकेंद्र,मध्य बिंदु

395) जंक
➡ कूड़ा-कचरा,कट,लोहे को बिगाड़ने वाली चीज़

396) रिहर्सल
➡ पूर्व प्रयोग

397) स्ट्राइक
➡ हडताल

398) डिससर्विस
➡ गलत सन्देश जाना,नकारात्मक प्रभाव पड़ना।

399) कन्वर्ट होना
➡ धर्म परिवर्तन करना

400) आयरन एज्ड
➡ कलियुगी
---

401) सुप्रीम पावर ➡ परम शक्ति

402) वैरायटी
➡ विभिन्न , प्रकार

403) डिपेंड करना = सहारे रहना ,भरोसा करना

404) टॉकी = आवाज़ वाली/की (दुनिया)

405) वेस्ट ऑफ़ टाइम = समय व्यर्थ गँवाना

406) वेस्ट ऑफ़ मनी = धन व्यर्थ गँवाना

407) वेस्ट ऑफ़ एनर्जी = शक्ति व्यर्थ गवांना

408) पास्ट - प्रेजेंट - फ्यूचर = भूतकाल - वर्तमानकाल -भविष्यकाल

409) परमिशन = अनुमति

410) रियलाईज = बात को पहचानना ,समझना

411) नेचुरल = प्राकृतिक

412)लिफ्ट = गति से ऊपर ले जाने वाला साधन

413) गिफ्ट = भेंट

414)हमजिंस = बन्धु,दोस्त,मित्र

415) क्रिएशन = निर्माण, सृजन

416) अर्थक्वेक = भूकंप

417) एक्टिविटी = कर्म—शैली

418) फिलोसोफी = दर्शन,तत्वज्ञान

419) इन्कॉरपोरल = निराकार

420) रूहानी सोशल वर्कर = समाज सेवक आत्माओं का जो आत्मिक स्थिति में रहकर अशांत और दुखी आत्माओं को ज्ञान और स्किन देते हैं।

421) वैल्युएबल = कीमती,महँगा,ज़रूरी,महत्वपूर्ण

422) अबाउट = विषय में/बारे में,सार में,मोटे तौर पर

423)अट्रैक्शन = आकर्षण

424) डीनायस्टी = वंश।सतयुग में श्रीकृष्ण की 8 व त्रेतायुग में श्रीराम की 12 डीनायस्टी चलती है।

425)ऑक्यूपेशन = व्यवसाय

426) ओर्गंस = अंग, उपांग

427) ह्यूमन गुलशन = मानवों का बगीचा(दुनिया)

428) मैनर्स = चाल-चलन

429) ऑनेस्ट = सच्चा, सत्यपरक

430) एजुकेशन डिपार्टमेंट = शिक्षा विभाग

431) एवर हेल्थी एवर वेल्थी = तन और धन से सदा सुखी, सदा समृद्ध

432) बर्थ प्लेस = जन्म स्थान

433) रिलिजन = धर्म, मज़हब

434) गॉडली बुलबुल = भगवानका ज्ञान सुनानेवाले

435) सरेंडर = समर्पण

436) टू लेट = सबसे लास्ट के भी पीछे

437) एम-ऑब्जेक्ट = लक्ष्य ब्राह्मणों का एम ऑब्जेक्ट लक्ष्मी नारायण सदृश बनना है।

438) विन = जीत, विजय

439) नेचुरल कर्म = सामान्य/प्राकृतिक कर्म

440) कनेक्शन = जुड़ाव,योग

441) करंट = विद्युत, बिजली का प्रवाह,वर्तमान

442) चांस = अवसर

443) सर्विसेबुल = सेवाधारी

444) सेक्क्रिन = सबसे मीठा

445) लवली = सुन्दर, मनभावन ,फीचर व्यक्तित्व

446) एक्टिविटी = क्रिया-कला

447) इन्शुरन्स कंपनी = बीमा कंपनी

448) हिरोशिमा = जापान का शहर जहाँ परमाणु बम फोड़ा गया था (द्वितीय विश्व युद्ध में)

449) करनहार= करने वाला।कर्ता। करने करने वाला निमित्त हूं। अर्थात करनकरावनहार शिवबाबा है

450) स्टिमर/ स्टिम्बर = भांप से चलता पानी का जहाज

451) प्रॉपर्टी = जायदाद,धन सम्पत्ति

452) राईट हैण्ड = आज्ञाकारी,पसंदीदा

453) भागंती = सबकुछ सुन के फिर ज्ञान छोड़नेवाला

454) बैरिस्टर= वकील

455) लंगर उठाना = मोह त्यागना

456) एड्वेरटाइज़= विज्ञापन,सुचना,घोषणा🎤

457) लिबेरेटरगाइड = छुड़ाकर रास्ता दिखानेवाला

458) सोर्स ऑफ़ इनकम = आय का साधन

459) स्टूडेंट लाइफ इस बेस्ट लाइफ = विद्यार्थी जीवन श्रेष्ठ जीवन

460) स्पिरिचुअल = अध्यात्मिक

461) थ्रू , Through = द्वारा

462) वाईसलेस (Viceless) = अवगुण रहित, विकार रहित, दोष रहित , गुणवान, दिव्य

463) फायरफ्लाई = जुगनू

464) होलिएस्ट = परम पवित्र

465) हाईएस्ट = श्रेष्ठतम📈, सर्वोच्च, सबसे ऊंचा, परम

466) लीप सेंचुरी= अधिक +💯 शतक (जैसे अधिक मास/दिन)

467) सेफ्टी = सुरक्षा के उपाय

468) फ्लोलेस टीचर = निर्दोष, त्रुटिरहित शिक्षक

469) अंडरलाइन = पक्का करना

470) प्लानिंग = कल्पना/उपाय करना

471) फाउंडेशन = जड़

472) साल्वेशन Salvation = दुखों से छुड़ाने वाला, मुक्त करने वाला, रक्षा करने वाला

473) फॉर्म = आकृति,संस्कार, रीति,सादृश्य

474) सिल्वर ऐज = त्रेतायुग

475) आयरन ऐज= कलियुग

476) फ्लड = बाढ़

477) ओपन स्टेज = सारी दुनिया के सामने

478) पार्ट = भाग,खण्ड,हिस्सा
,नाटक के पात्र का खेल का हिस्सा

479) होली हँस = हँस जैसे पवित्र

480) सर्जन = Surgeon = शल्य-चिकित्सक

481) अल्लफ़= एक परमात्मा

482) क्रिस्चियन मिशनरी = ईसाई धर्म† के प्रचार करनेवाला अनुयायी
पहला नर-नारी

483) हाफ कास्ट = ज्ञान मिलते भी पूरा धारण नहीं करते और अपवित्र भी बनते

484) टाइटल = उपाधि, नाम

485) वी आर एट वॉर = हम लोग लड़ाई के मैदान में हैं

486) इन्वेंशन = आविष्कार

487) मैनर्स = सभ्यता, अच्छी आदतें

488) अथॉरिटी के बोल = शक्तिशाली बोल

489) मेमोरेंडम = स्मरणलेख

490) डेविल वर्ल्ड= नर्क , कलियुग

491) कल्ट , Cult = पंथ

492) एक्यूरेट = सटीक,सही

493) स्टेटस = पद

494) कान्फ्रेंस=बातचीत, सम्मेलन, सभा, परामर्श, वार्तालाप, विचार के लिए सभा.

495) फैमिलिअरिटी, Familiarity = सम्बन्ध बढ़ाना,ज्ञान से अलग चर्चा

496) फर्स्टक्लास नेचर क्योर = सबसे बढ़िया प्राकृतिक चिकित्सा

497) मेयर = महापालिकाध्यक्ष

498) टर्न लाना = परिवर्तन करना

499) रियलाईजेशन कोर्स = समझ कर धारण करना, मैं आत्मा हूं शिव पिता परमात्मा की संतान हूं इसको जानना अर्थात अनुभव करना अर्थात अपनी असली पहचान मिलना।

500) फ्लाइंग स्क्वाड = उड़नदस्ता

---

501) रॉयल फॅमिली = रॉयल (राजाई) देवताई परिवार, सतयुग में विश्व महाराजन (महाराजा) या राजा के परिवार में होना।

502) स्वीट होम (स्वीट साइलेंस होम)= मुक्ति धाम,परमधाम

503) पार्टीशन= अलग होना

504) साइड सीन = जैसे ट्रैन में जाते तो खिड़की में देखते तो साइड सीन्स आते और पास होते रहते। साइड सीने अर्थात हम अपने आपको जीवन में आने वाली परिस्थितियों (सीन्स)में साइड होकर चलें वे आएंगे और पास होते जाएंगे।

505) नेचुरल ब्यूटी = प्राकृतिक सौन्दर्य

506) डिग्री डीग्रेड 👩🏻‍🎓= श्रेणी कम होना

507) स्कालरशिप 🎓 = विद्या, छात्रवृति, विद्वता

508) सतयुगी डीटी वर्ल्ड = सतयुगी दैवी दुनिया का साम्राज्य

509) अडॉप्टेड , Adopted = गोद लेना।मुख वंशावली

510) एक्यूरेट = अचूक, यथार्थ,💯शुद्ध

511) रेस Race = दौड़,स्पर्धा

512) गॉडली स्टूडेंट , Godly Student = भगवान शिक्षक से पढनेवाले

513) ब्लिसफुल = रहमदिल/ परम सुख/मोक्ष दाता

514) मोस्ट बिलवेड गॉड फ़ादर =
सबसे/सबका प्यारा 💥शिवबाबा

515) मैसेंजर = दूत, सन्देश ले जानेवाला /लानेवाला। शिव बाबा के बच्चे मैसेंजर हैं जो शिव बाबा के ज्ञान का प्रसार करते हैं।

516) ऑटोमेटिकली = स्वत:,आपेही,अपने आप

517) चार्ट , Chart = दैनन्दिनी,पोतामेल

518) अर्थ क्वेक Earth Quake = भूकम्प

519) एक्सचेंज = अदला-बदली

520) राईट डायरेक्शन,=
सही दिशा

521) रेस्पोंसिबल = जिम्मेवार

522) कॉमन = आम,एक जैसा

523) पोज़ Pose = मुद्रा,विशिष्ट आकृति धारण करना

524) वैरायटी Variety = भिन्न-भिन्न, अलग-अलग ,बाबा चैतन्य बगीचे में वैरायटी प्रकार के फूलों को देखते हैं।

525) सेल्फ कण्ट्रोल = मनजीत,अपनी आज्ञा में , स्व पर नियंत्रण, संयम रखना

526) वेस्ट Waste = नकारा,व्यर्थ,बिना काम के

527)स्टाम्प, Stamp = सिक्का, चिन्ह

528)पाम्प, (Pomp) = बहुत ज़ोर(धूमधाम), अतिज़ोर, आडंबर।

529) राईट-राँग = सही - गलत

530)फुल्ली = अच्छी तरह

531) पास विद ऑनर = 💯%शत प्रतिशत,जिनको कोई सज़ा के बिना परमधाम जाना हैं पास विद ऑनर होने के लिए सच्चा-सच्चा आशिक बनना है। निरन्तर एक माशूक की याद में ...।

532) टेम्पटेशन Temptation = इच्छा जिससे थोड़े समय का सुख मिल सकता है, परन्तु दीर्घकाल में दुःख दायक,/प्रलोभन,

लोभ

533) मोस्ट बिलेवेड बाप = सबसे प्यारा बाप

534) सुप्रीम सोल, Supreme Soul = परमात्मा

535) प्रोस्पेरिटी , Prosperity = सम्पन्नता

536) ओरफन, Orphan = निधनके,अनाथ/जिसके माँ-बाप नहीं ,कंगाल

537) इम्मोर्टल, Immortal = अविनाशी

538) मोर्टल = विनाशी

539) बॉडी कांशिअसनेस, Body conciousness = देह अभिमान

540) हेवेनली गॉड फ़ादर, Heavenly God Father = सतयुगी दुनिया का निर्माण करने वाले भगवान

541) ब्राइड्स = दुल्हन

542) ब्राइडग्रूम , Bride Groom = दूल्हा

543) लिबरेटर, = आज़ादी दिलानेवाला या जीवनमुक्ति और मुक्ति देने वाला

544) वर्थ नाट पेनी = कौड़ी तुल्य जीवन

545) वर्थ पाउंड, Worth Pound = हीरे तुल्य

546) डिनायस्टी = राजवंश या वंश-परम्परा/ ब्राह्मणों की डिनायस्टी नहीं है। ब्राह्मणों का कुल है, डिनायस्टी तब कहा जाता है, जब सतयुग में देवी- देवता बनते हैं।सूर्यवंशी डिनायस्टी में आदि में आने वाली देव कुल की आत्माओं के 84 जन्म होते हैं।

547) लॉर्ड कृष्णा, = राजा कृष्ण, सतयुग में जन्म लेने वाली पहली आत्मा

548) ऑक्यूपेशन = व्यवसाय,कारोबार,धन्धाधोरी

549) हिस्ट्री जियोग्राफी रिपीट होना=ड्रामा के इतिहास - भूगोल की कल्प पहले की तरह हूबहू पुनरावृत्ति

550) फॉलो फ़ादर, Follow father = बाप के नक़्शे कदम पर चलना

551) ट्रेटर = वे बच्चे जो एक ओर ज्ञान अमृत पीत हैं तो दूसरी ओर विकारों में पड़कर आसुरी चलन चलकर डिससर्विस करते हैं,

ईश्वर के बच्चे बनकर भी अपनी चलन सुधारते नहीं, आपस में मायावी बातें करते।

552) रॉयल घराना = राजाई घराना

553) जेल बर्ड्स = कारावास

554) साइलेंस, Silence = शांति

555) प्रैक्टिकल लाइफ, Practical Life = व्यवहारिक जीवन

556) सेर्विसेबुल = सेवा करनेवाला

557) अथॉरिटी, Authority = शक्ति/प्रभाव शाली

558) क्यू, Queue = पंक्ति,लाइन।

559) ऑलमाइटी अथॉरिटी = सर्वशक्तिमान

560) लकी स्टार, Lucky Star = भाग्यशाली,सितारा

561) कंप्लेंट, Complaint = शिकायत

562) कम्पलीट, Complete = सम्पूर्ण💯

563) वंडरफुल सिन सीनरी = विस्मयकारी दृश्य

564) ट्रस्टी =वह व्यक्ति होता है जो किसी अन्य व्यक्ति या तीसरे पक्ष की ओर से किसी संपत्ति या संगठन के लिए जिम्मेदार होता है। । बाबा निष्काम नंबर वन ट्रस्टी है। बाबा कुछ लेते नहीं है वह कहते हैं तुम ट्रस्टी होकर सब संभालो।

565) टॉकी = आवाज वाला चलचित्र

566) मूवी = बिना आवाज वाला चलचित्र

567) बायोस्कोप, Bioscope = टीवी।फिल्म

568) ट्रिब्यूनल = न्यायालय

569) पावरफुल, Powerful = शक्तिशाली

570) लाइट का क्राउन, Light Ka Crown = पवित्रता का ताज

मुरली में आये हिन्दी शब्दों के अर्थ

---

571) फज़ीलत = मैनर्स, सभ्यता, श्रेष्ठता

572) टेव = आदत

573) एकानामी =एक शिव परमात्मा के अलावा किसी की याद ना रहे, मन-बुद्धि में एक शिव ही याद रहे। जमा का खाता बढ़ाना

574) हद का बाप = लौकिक पिता

575) बेहद का बाप = पारलौकिक पिता,शिव परमात्मा

576) नब्ज देखना = जांच करना, सूक्ष्म चेकिंग करनी👀

577) चैतन्य लाइट हाउस = जैसे स्थूल लाइट हाउस सभी जहाजों को रास्ता बताता है, वैसे ही ब्राह्मण बच्चे चैतन्य रूप में अपने ज्ञान योग की आत्मिक लाइट से सभी को सही रास्ता बताते हैं।

578) ग्रहचारी = कुंडली में बुरे ग्रह बैठ जाना। विकारों के वशीभूत होना

579) जडजड़ीभूत = जैसे बीज से झाड़ निकलता है, इनकी आयु कितनी बड़ी हो जाती है, फिर उनको जड़जड़ीभूत अवस्था कहा जाता है।इस समय सारा झाड जड़जड़ीभूत है। इनका विनाश होना है।

580) नौधा भक्ति = प्राचीन शास्त्रों में भक्ति के 9 प्रकार बताए गए हैं जिसे नवधा भक्ति कहते हैं श्रवण, भजन-कीर्तन, नाम जप-

स्मरण, मंत्र जप, पाद सेवन, अर्चन, वंदन, दास्य, सख्य, पूजा-आरती, प्रार्थना, सत्संग आदि शामिल हैं।इस भक्ति का विधिवत पालन करने से भक्त भगवान को प्राप्त कर सकता है।भक्ति की चरम अवस्था

581) टिक टिक = घड़ी जैसे निरंतर टिक टिक कर चलती रहती वैसे यह ड्रामा भी सेकंड बाय सेकंड लगातार चलता रहता है।

582) जूं मिसल = धीरे धीरे लगातार

583) रेज़गारी = छोटे सिक्के

584) ततत्वम् = तुम वो हो बापदादा आदिकाल से “तत् त्वम्” का वरदान ही दे रहे हैं

585) तकदीर को लकीर लगाना = भाग्य बनाने का सुअवसर खो देना।मनमत पर चलना माना अपनी तकदीर को लकीर लगाना'

586) अमानत = एक निश्चित समय के लिये कोई चीज़ किसी के पास रखना

587) ख्यानत = अमानत या धरोहर के रूप में रखी वस्तु को हड़प लेना या चुरा लेना, बुरी नीयत से किसी दूसरे की संपत्ति का गबन

कर लेना बेईमानी या भ्रष्टाचार , विश्वासघात

588) प्रवृत्ति मार्ग = संसार के कामों में लगाव, दुनिया के धंधे में लीन होना,भौतिक जीवन के कार्यव्यापारों में आसक्ति,जीवन-यापन का वह प्रकार जिसमें मनुष्य सांसारिक कार्यों और बंधनों में पड़ा रहकर दिन बिताता है।

589) निवृत्ति मार्ग = सांसारिक विषयों का किया जानेवाला त्याग, प्रविित्ति का अभाव होना, सांसारिक कार्यों के लगाव से परे

590) टाल-टालियाँ = जैसे झाड़ में मुख्य है थुर (तना)। फिर बड़ी डाल, फिर छोटी-छोटी टाल-टालियां निकलती हैं। जो धर्म शास्त्र है सर्व शास्त्रमई शिरोमणी गीता, वह है थुर। उनके बाद बाकी सब ठहरे रचना। यह इस्लामी, बौद्धी, क्रिश्चियन आदि यह सब कल्प वृक्ष के टाल हैं। गीता में भी लिखा हुआ है – मनुष्य सृष्टि का झाड़ है। मुख्य थुर है – आदि सनातन देवी-देवता धर्म। इस झाड़ की भेंट बड़ के झाड़ से की जाती है। वह बहुत बड़ा होता है। झाड़ जब पुराना होता है तो उनका थुर (तना) सड़ जाता है, बाकी टाल-टालियां रहती हैं। अब प्राय आदि सनातन देवी देवता धर्म लोक हो गया है बाकी अन्य धर्म पाल पारियां हैं।

591) माशूक = परमात्मा प्रियतम

592) बृहस्पति की दशा = श्रीमत का पालन करते हुए ज्ञान योग की पढ़ाई पर पूरा ध्यान देते रहनेवाले। जिसकी वजह से माया वार

नहीं कर पाती तो वे सदा सुखी रहते।

593) राहु की दशा = श्रीमत का उल्लंघन कर ज्ञान योग की पढ़ाई में फेल होने वाले जसकी वजह से माया का वार होता रहता है ।वे हमेशा दुखी रहते हैं।

594) म्लेच्छ बुद्धि = विकारी बुद्धि

595) फुरी फुरी अलाव भरता = बूंद बूंद से तालाब भरता है।

596) दोज़ख = नरक

597) अलाएँ = खाद , विकार

598) आपघात = आत्महत्या

599) पैगाम = सन्देश

600) जुत्ती = शरीर

---

601) कट = विकार
याद करने से माया की कट उतर जायेगीवह कट उतरती जाएगी।
साथ ही कट उतरती जाएगी देह अभिमान की,

602) रसम ,रस्म = परम्परा, रिवाज

603) मुकर्रर = तय किया हुआ, निश्चित

604) बख्तावर = भाग्यवान, खुशनसीब। मुरलीधर सुनने वाले ही बख्तावर हैं

605) मेहर करना = मेहरबानी, कृपा, अनुग्रह, दया

606) खोट = दोष, अशुद्धि , किसी कार्य या व्यक्ति के प्रति मन में होने वाली बुरी भावना।

607) मदार = आधार,धुरी,दायरा📈सारा मदार पढ़ाई पर है, जितना पढ़ेंगे उतना ऊंच पद पायेंगे। यह पढ़ाई बहुत ऊंची है।

608) वारिस =वह पुरुष जो किसी के मरने के पीछे उसकी संपत्ति आदि का स्वामी और उसके ऋण आदि का देनदार हो,उत्तराधिकारी जैसे बेटा अपने पिता की संपत्ति का वारिस होता है।
शिव ने आकर अपने वारिस बनाये हैं। तुम शक्तियां और पाण्डव शिव-बाबा के वारिस।हम उनके वारिस उनके साथ मददगार हैं, उनसे वर्सा पाने के लिए।

609) मंथन = मथना, खूब डूब-डूबकर तत्वों का पता लगाना।

610) विचार सागर मंथन = ज्ञान का गहराई से मनन -चिन्तन करना, ज्ञान के सारतत्त्व का मथकर पता लगाना

611) संशयबुद्धि विनशन्ती =संशय करने वाला विनाश को प्राप्त होता है।यानि संशय करने शंका-आशंका में रहने वाले का भला नहीं होता।
संशयबुद्धि विनशन्ती कहा जाता है। वह ऊंच पद पा न सकें।
निश्चय भी है परन्तु पूरा पढ़ते नहीं।

612) संकल्प = विचार, किसी विषय में विचारपूर्वक किया हुआ दृढ़ निश्चय
संकल्प का खजाना बहुत शक्तिशाली है। संकल्प द्वारा सेकेण्ड से भी कम समय में परमधाम तक पहुँच सकते हो। संकल्प शक्ति एक ऑटोमेटिक रॉकेट से भी तीव्र गति वाला रॉकेट है। जहाँ चाहो वहाँ पहुँच सकते हो। जिस स्थान पर पहुँचना चाहो वहाँ पहुँच सकते हो। जिस स्थिति को अपनाना चाहो, चाहे श्रेष्ठ हो, खुशी की हो, चाहे व्यर्थ हो, कमजोरी की हो, सेकेण्ड के संकल्प से अपना सकते हो। संकल्प किया – मैं श्रेष्ठ ब्राह्मण आत्मा हूँ तो श्रेष्ठ स्थिति और श्रेष्ठ अनुभूति होगी।

613) कलश = गगरा⚱, घागर, घड़ा। ज्ञान की शुरुआत में ही बाबा ने ज्ञान कलश माताओं को ही दिया

614) हुज्जत = व्यर्थ का तर्क, फजूल की दलील, तकरार, कहासुनी।

615) दुम = पूंछ , आत्मा के निकलते ही शरीर रुपी दुम छूट जायेगा

616) प्रकृति = स्वभाव, तासीर, कुदरत। प्रकृति के पांच तत्व क्षितिज जल पावक गगन समीर है।

617) हाज़िर = संमुख , उपस्थित, सामने आया हुआ, मौजूद, विद्यमान।

618) हुजूर, हजूर = बहुत बड़े लोगों के प्रति संबोधन का शब्द, मुरली में शिव परमात्मा के लिये सम्बोधन

619) शिरोमणि= सर्वश्रेष्ठ, भक्तों में नारद और मीरा को भक्तशिरोमणि व ज्ञान में सरस्वती को शिरोमणि कहा गया है।

620)उपराम = राम के समीप /न्यारापन = निरन्तर योगयुक्त रहकर चित्त को सर्व-सम्बन्ध, सर्व प्रकृति के आकर्षण से न्यारा हो जाना ही उपराम होना है।इस सृष्टि में अपने को मेहमान समझने से उपराम अवस्था आएगी।

621) मुआफिक =ठीक ठीक, न ज्यादा न कम, मनोनुकूल,इच्छानुसार

622) सदृश = समान

623) मनोनुकूल = इच्छानुसार।

624) हप = कोई वस्तु मुँह में चट से लेकर होंठ बंद करना जैसे— हप से खा गया। मुहावरा—हप कर जाना=झट से मुँह में डालकर खा जाना

625) गफलत = असावधानी

626) वैजयन्ती माला =
रूद्र माला , विजयमाला , ज्ञान में अष्टरत्न आत्माओं की माला।

627) सत्यं शिवम् सुन्दरम् =
जो अविनाशी, चिरंतन और शाश्वत है वही सत्य है।सुंदरता का तात्पर्य किसी दैहिक या प्राकृतिक सौंदर्य से नहीं है। वह तो क्षणभंगुर है। सुंदरता वास्तव में पवित्र मन, कल्याणकारी आचार और सुखमय व्यवहार है। इस सुंदरता का चिरंतन स्रोत शिव ही है। शिव शब्द का अर्थ है कल्याणकारी। जो कल्याणकारी है, वही सुंदर है और जो सुंदर है वही सत्य है। इस प्रकार 'सत्यम्, शिवम्, सुंदरम्' जैसे मंत्र का बीज शिव ही है अर्थात इस सृष्टि की कल्याणकारी शक्ति।

628) अखुट = कभी न समाप्त होने वाला लगातार अनवरत ।

629) माशूक= वह जिसके साथ प्रेम किया जाय, प्रियतम, परमात्मा

630) आशिक = प्रेम करनेवाला मनुष्य या भक्त, चित्त से चाहनेवाला मनुष्य।आत्मा

631) खुदाई खिदमतगार= ईश्वर की खिदमत या सेवा करनेवाला।

632) रिंचक मात्र = बहुत थोड़ा।

633) हम सो, सो हम = भक्ति मार्ग में आत्मा सो परमात्मा, परमात्मा सो आत्मा। पर ज्ञान मार्ग में शिव बाबा ने समझाया यह अर्थ बिल्कुल गलत है।हम सो का सही अर्थ है हम देवता,क्षत्रिय,वैश्य सो शूद्र।अभी हम सो ब्राह्मण बने हैं सो फिर से देवता बनने के लिये।

634) प्रारब्ध/प्रालब्ध = तीन प्रकार के कर्मो में से वह जिसका फलभोग आरंभ हो चुका हो। २. भाग्य, किस्मत, जैसे,—जो प्रारब्ध में होगा वही मिलेगा।

635) अचल-अडोल = जो न डिगनेवाला हो और न हिले अर्थात् हमेशा स्थिर रहे।

636) फराखदिल = बड़ा दिल।

637) उल्हना = उलाहना, शिकायत, किसी की भूल या अपराध को उससे दुःखपूर्वक जताना , किसी से उसकी ऐसी भूल चूक के विषय में कहना सुनाना जिससे कुछ दुःख पहुँचा हो ।

638) गोपीवल्लभ = महाभारत में वर्णित गोप- गोपियों के अत्यन्त प्रिय श्रीकृष्ण जिनकी मुरली की धुन सुनने के लिये अपनी सुधि बुधि खोकर काम काज छोड़कर चले आते थे।वास्तव में हम बच्चे ही वही गोप-गोपियां हैं, जो नित उस परमप्रिय शिवबाबा अर्थात् गोपीबल्लभ को याद किये और मुरली सुने बिना नहीं रह सकती हैं।

639) मुजीब = स्वीकार करने वाला , जवाब देने वाला ।🗣️

640) सत्यं शिवम् सुन्दरम् =
जो अविनाशी, चिरंतन और शाश्वत है वही सत्य है।सुंदरता का तात्पर्य किसी दैहिक या प्राकृतिक सौंदर्य से नहीं है। वह तो क्षणभंगुर है। सुंदरता वास्तव में पवित्र मन, कल्याणकारी आचार और सुखमय व्यवहार है। इस सुंदरता का चिरंतन स्रोत शिव ही है। शिव क्या है? शिव शब्द का अर्थ है कल्याणकारी। जो कल्याणकारी है, वही सुंदर है और जो सुंदर है वही सत्य है। इस प्रकार 'सत्यम, शिवम, सुंदरम' जैसे मंत्र का बीज शिव ही है अर्थात इस सृष्टि की कल्याणकारी शक्ति।

641) कशिश = आकर्षण, खिंचाव, झुकाव, रुझान।

642) ब्रह्मचारी = ब्रह्मचर्य का पालन करने वालों को ब्रह्मचारी कहते हैं।ब्रह्मचर्य दो शब्दो 'ब्रह्म' और 'चर्य' से बना है। ब्रह्म का अर्थ परमधाम,चर्य का अर्थ विचरना, अर्थात परमधाम मे विचरना, सदा उसी का ध्यान करना ही ब्रह्मचर्य कहलाता है।
वास्तव में ब्रह्मचर्य काम विकार से सम्पूर्ण मुक्ति। पवित्रता का आधार स्तंभ है ब्रह्मचर्य।

643) ग्रहण = स्वीकार करना,धारण,पहनना।

644) फिकरात = चिंता, सोच, खटका, ध्यान देने योग्य

645) स्थूल = बड़े आकार का, जो सूक्ष्म न हो अर्थात् जो ज्ञानेन्द्रियों द्वारा स्पष्ट दिखाई या समझ में आने योग्य हो

646) सूक्ष्म = बहुत छोटा, पतला या बारीक,जो अपनी बारीकी के कारण सबके ध्यान या समझ में जल्दी न आ सके।

647) गोरखधंधा = गड़बड़ , गड़बड़ी करनेवाला , घपलेबाजी, गोलमाल करना , अनियमितता ।

648) गोसाईं = श्रेष्ठ, मालिक , शिव परमात्मा, स्वामी ।

649) साक्षी होना = गवाह, दृष्टा, देखनेवाला, आत्मा की बुद्धि रूपी आँख से मन के विचार या किसी घटना को देखनेवाला, मन के विचारों के दृष्टा को साक्षी कहते है । जब हम निर्विचारक बन अपने

विचार को देखते हैं तब हम साक्षी होते हैं ,जब हम सिर्फ विचार करते है तब हम मन या विचारक होते है। ।
साक्षी वह है, जो सिर्फ देखता है, सिर्फ दृष्टा है; दृष्टा से भिन्न कभी कुछ भी नहीं है और दूसरी तुम्हारी देह है, तुम्हारा मन है, तुम्हारा संस्कार है, तुम्हारे विचार हैं। ये सब तुम्हारे साक्षी के सामने से गुजरते हैं।

650) सौगात = वह वस्तु जो इष्ट जनों को देने के लिये लाई जाय, भेंट,उपहार, तोहफा।

651) पदमापदम, पदमगुणा =
गणित में सोलहवें स्थान की संख्या (१०० नील) जो इस प्रकार लिखी जाती हैं—१००,००,००,००,००,००,०००
१ नील = सौ अरब। संगम पर किया हुआ पुराषार्थ पदमापदम/ पदमगुणा फलदाई होता है।

652) प्रवृत्ति = झुकाव, संसार के कार्यों से लगाव,भौतिक जीवन के क्रियाकलापों (activity)में आसक्ति, मुरली के सन्दर्भ में गृहस्थ व्यवहार में रहकर श्रीमत की युक्ति (तरकीब) से निर्विकारी बनकर परमात्मा से योगयुक्त होना।

653) पुरूषार्थ = कर्म, वह मुख्य उद्देश्य या प्रयोजन जिसकी प्राप्ति या सिद्धि के लिए प्रयत्न करना आवश्यक और कर्त्तव्य हो।
568) बीस नाखूनों का जोर = अपनी पूरी सामर्थ्य से। ज्ञान सागर

आप से वर्षा लेना है तो अपना 20 नाखूनों का जोर लगाकर पढ़ाई करो उसी से ही मुक्ति और जीवन मुक्ति मिलेगी।

654) बीस नाखूनों का जोर = अपनी पूरी सामर्थ्य से। ज्ञान सागर बाफप से वर्षा लेना है तो अपना 20 नाखूनों का जोर लगाकर पढ़ाई करो उसी से ही मुक्ति और जीवन मुक्ति मिलेगी।

655) धणी = मालिक

656)आहिस्ते आहिस्ते = धीरे धीरे

657) अक्षौहिणी=अत्यंत विशाल सेना। जिसमें बहुत से हाथी घोड़े और पैदल सवार सैनिक हो।महाभारत के अनुसार इसमें २१,८७० रथ, २१,८७० हाथी, ६५, ६१० घुड़सवार एवं १,०९,३५० पैदल सैनिक होते थे।

बाबा ने कहा तुम पांडव विश्व की पूरी अक्षोहिणी सेना पर कल्प कल्प विजय हुए हो।

658) अजपाजप = अजपा जप एक शक्तिशाली मंत्र ध्यान अभ्यास है जिसमें सांस के साथ चुपचाप एक मंत्र को दोहराना शामिल है।

अजपाजप की तरह पुरुषार्थ और शिव बाबा की याद निरंतर होती रहे।

659) अखुट =जो कभी समाप्त न हो या जो कभी नष्ट ना हो।

सब बच्चों को बेहद का अखुट खजाना (ज्ञाश-योग का) बाप द्वारा मिला है । ऐसे अखुट खजाने से स्वयं को सदा भरपूर रहो।

660) आबाद = सम्पन्न, सुखी, सफल

661) अनुभवीमूर्त = अनुभव स्वरूप,जानकार।

जो अनुभवीमूर्त हैं,वह ज्ञान और योग के बल से विकारों पर विजय प्राप्त करते हैं

662) अनुभूति= अहसास,महसूसता।

663) अमली = मादक द्रव्यों का सेवन करने वाला। अमली को अमल किए बगैर चैन नहीं आता। वह विष बिगर नहीं रह सकती।

664) अभुल = निर्दोष।

भूल तो सबसे होती हैं पर शिव बाबा सबको आकर अभुल बनाते हैं।

665) अमानत में खयानत= अमानत में रखी हुई चीज को खा जाना। विश्वासघात करना

666) अडोल= स्थिर , न मिलने - डुलने वाला।

माया के कितने भी तूफान आए परंतु हमें अंगद की तरह अचल अडोल रहना है।

667) अदब = नियंत्रण, सम्मान।

सतयुग में प्रकृति अदब में रहती है।

668) अटक = रूकावट,बांधा डालना।

669) अथाह = अनगिनत, बहुत अधिक मात्रा में।

जिस शिव बाबा से अथाह स्वर्ग की बादशाही मिलती है हमें उसे याद करना चाहिए

670) अधरकुमार/अधरकुमारी = शिव बाबा का ज्ञान लेने वाले व पवित्रता/ब्रह्मचर्य का पालन करने वाले गृहस्थ पुरुष और स्त्री

जो काम चिता से उतर ज्ञान चिता पर बैठते हैं वही अधरकुमार अधरकुमारी कहे जाते हैं

671) अधमपना = दुष्टता, पापाचारी,पतित

672) अधोगति= पतन,दुर्गति,अवनति

673) अनहद नाद = वह नाद/संगीत या शब्द जो दोनें हाथों के अँगूठों से दोनों कोनों की लवें बंद करके ध्यान करने से अपने ही भीतर सुनाई देता है।चन्न – घन्न ' या ' सांय- साय ' की आवाज़ सुनाई देती है।

674) अमोलक = जिसका कोई मोल ना हो ,अमूल्य,अनमोल। हमारी हर एक सांस अमोलक है जिसे व्यर्थ नहीं गवाना है।

675) अलंकार = श्रृंगार,आभूषण।

शख,गंदा ये देवताओं के अलंकार के रूप में दिखाते हैं। जो संगम पर ब्राह्मणों के प्रतीक है।

676)अवलदीन = अल्लाह अवलदीन का नाटक हैं। अवलदीन एक गरीब लड़का है जो बगदाद शहर में रहता था। वह जादुई चिराग की मदद से बगदाद का राजा बन गया।

677) अशोक = शोक रहित।सतयुगी दुनिया को अशोकवाटिका कहा गया है। कलयुग में सब शोक वाटिका में हैं।

सतयुग-त्रेता में है सुख, अशोक वाटिका... सर्वोत्तम आदि सनातन देवी-देवता धर्म ...

678) अष्टावक्र गीता = इसमें अष्टावक्र और राजा जनक के संवाद है। भगवद्गीता, उपनिषद और ब्रह्मसूत्र के समान अष्टावक्र गीता अमूल्य ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ में ज्ञान, वैराग्य, मुक्ति और समाधिस्थ योगी की दशा का सविस्तार वर्णन है।

679) असार = सार/तत्वरहित, तुच्छ, निस्सार

680) अयुत= अनुचित, आयोग्य,गलत

योग युक्त का कभी अयुत का कर्म और संकल्प नहीं हो सकता।

681) अयोनि= जो योनि/गर्भ से उत्पन्न न हुआ हो।अजन्मा।

682) अलमस्त = चिन्तामुक्त , लापरवाह

शिव बाबा सम्मुख आते पर बच्चे अलमस्त होकर देख कर भी नहीं देखते और सुनकर भी नहीं सुनते।

683) अवधूत= संन्यासी, साधू

684) अव्यभिचारी भक्ति = एक शिव की पूजा होना।

द्वापर के शुरू में केवल एक परमात्मा की पूजा होती थी।

685) व्यभिचारी भक्ति = कलियुग प्रारंभ से अनेक देवी देवता की भक्ति शुरू हो जाती है। गीत गोविंद में सर्वप्रथम 700 ई में राधा का उल्लेख मिलता है। श्रीमद् भागवत गीता में गोपियों का उल्लेख तो है परन्तु राधा का नहीं।

686) अशर्फियां = सोने के सिक्के, मोहर

सतयुग में रुपए के रूप में असर्फियां होगी। पर आजकल की तरह नहीं

687) अष्टावक्र= अष्टावक्र महाज्ञानी थे। जिन्होंने राजा जनक को आत्मा का ज्ञान दिया।

688) असोचता= कोई संकल्प ना चलने वाला शिव बाबा।

689) अहिल्या,=ऋषि गौतम की पत्नी थी। वह अपनी सुन्दरता के गर्व से गलती करती है और शापित हो जाती है। राम के चरण स्पर्श होने पर वह पुनः अपने मानव रूप में आ गई।

पत्थरबुद्धि वालोंक्षकी तुलना बाबा अहिल्या

से करते हैं

690) अर्श = स्वर्ग/ तख्त, उज्ज्वल

691) आग का गोला = बम , मिसाइल, परमाणु हथियार।

भभोर को आग लगनी है इसलिए वैज्ञानिक आग गोला बना रहे हैं।

692) आजान करना =आह्वान करना।

सफलता ब्राह्मणों के रास्ते में फूल के समान आजान करती है।

693) आजियान= आपस में आह्वान करना।

694) आडम्बर = झूठा दिखावा करना, ठाट-बाट

695) आतुरवेला = उत्सुक,जल्दी

696) आथत = धीरज, धैर्यता

697) आपघात= आत्महत्या, खुदकुशी।

आपघात भी पाप है जो आप खाते में जमा होता है।

698) आईवेल = आवश्यकता के समय।

आईवेल के समय जो सहयोगी बनता है उनका आठ आना आठ करोड़ बन जाता है।

699) आखेरा= घोंसला

700) आजयान= आवाभगत, स्वागत, सत्कार

---

701) आटे में नमक = जिस प्रकार आटे में नमक बहुत कम होता है उसी प्रकार सच्चाई भी बहुत कम मात्रा में है।

702) आसामी = पात्र , योग्य, बड़ा आदमी

आसामी देख युक्ति से उठाना है । बोलो, हम भी शास्त्र पढ़ते हैं परन्तु बाप का फ़रमान है कि सभी को भूल मामेकम् याद ऊचे ते ऊंचे आसामी इस पतित दुनिया में हमारा मेहमान बनकर आया है यह नशा सदा चढ़ा रहना चाहिए।

703) आफरीन = शाबासी, प्रशंसा,बधाई।

704) इत्तलाव = सूचना, जानकारी, चेतावनी

705- आहुति= यज्ञ या हवन में हवनसामग्री को अग्नि में डालना, बलिदान।

बाप ने रूद्र यज्ञ रचा है लेकिन यह ज्ञान यज्ञ है, इसमें सबकी आहुति पड़नी है।देह सहित जो सब कुछ है, आहुति देनी है।

706- इत्तलाव = सूचना,, खबर, ऐलान, चेतावनी, जानकारी

707- फुलेल= फूलों की खुशबू से सुगंधित

708- उकीर = उमंग, प्यार

यह है ही नर्क, तो बाप को आना पड़ता है नर्क को स्वर्ग बनाने। बाबा बहुत उकीर (प्रेम) से आते ..

709- उगारना= पागुर करना, ज्ञान का मनन चिंतन करना।

बाप बैठ जो शिक्षा देते हैं उसको फिर उगारना चाहिए, रिहर्सल करना चाहिए।

710- उड़ती कला सर्व का भला = ज्ञान योग में उड़ते रहो तो सबका भला होगा।

श्रेष्ठ वा तीव्र गति से उड़ान भरने वाले हो। वैसे गाना 'चढ़ती सर्व का भला' है लेकिन अभी कला का आदर्श क्या है? 'उड़ती कला, 'सर्व का भला'। अभी चढ़ती कला का समय भी ख़त्म हुआ, उड़ती कला की पहचान है सदा डबल लाइट।

711- उजूरा = प्रतिफल/रिटर्न/ प्रत्युपकार

भारत शिवबाबा की अवतरण भूमि है। ... फिर बाप आकर भक्ति का उजूरा देते हैं, पुजारी से पूज्य बनाते है।

712- उझाई = बुझा हुआ

हर घर में अंधियारा है। आत्मा की ज्योति उझाई हुई है। बाप आये हैं अपनी ज्योति से सबकी ज्योति जगाने।

713- उथल पाथल = उलट पलट, हलचल

उथल पाथल पूरी हो फिर राज्य शुरू हो जाता है। महाभारत लड़ाई तो वही है, अभी उथल-पाथल होगी। तो कई जो कच्चे हैं उनके तो देखकर ही प्राण निकल जायेंगे।

714- उथल-पुथल = क्रांति, विप्लव, परिवर्तन, इन्कलाब, हेर-फेर, रद्दोबदल।

उथल-पुथल होने में टाइम लगता है। बाम्स आदि बनाकर उसकी तैयारी करा रहे हैं।

715- उथल खाना= उलटना

कोई भी हालत हो माया का वार हो पर उथल नहीं खाना है ।

716- उतार चढ़ाव=भली बुरी स्थितियां कमी - वृद्धि।

अभी अभी कमाई अभी अभी गवांई यह उतार चढ़ाव तो सोचने समझने का समय निकल जाएगा।

717- उत्कन्ठा = तीव्र इच्छा/अभिलाषा, उत्सुकता

718- उड़ा देना= नष्ट करना,निकाल देना

अभी तुम्हें घर चलना है इसलिए पुरानी दुनिया का और इस शरीर का भान उड़ा देना है।

719- उथलना = डगमगाना, डावाडोल होना, विस्फोट होना, हिलना।

धरती को उथलना है, विनाश होना है।

720- उद्धारमूर्त= संकट से निकालने वाला।

721- उमावस =अमावस्या,जिस दिन चंद्रमा को नहीं देखा जा सकता है।कृष्ण पक्ष के अंतिम दिन को अमावस्या कहते हैं।

722- उल्टा झाड़ = कल्पवृक्ष

कल्प की आयु 5000 वर्ष की है , यह चैतन्य है,इसलिए इसे कहा जाता है कल्पवृक्ष | इस वृक्ष को चार भागों मे बांटा गया है जो चार युगों को दर्शाता है | इस कल्प वृक्ष के सबसे नीचे बीज दर्शाया है जो स्वयं शिव बाबा है इसलिए शिव बाबा को वृक्षपति - बृहस्पति कहलाते है | जैसे बीज में पूरे वृक्ष की नॉलेज होती है उसी प्रकार इस मनुष्य सृष्टि रूपी वृक्ष के बीज शिव बाबा में कल्पवृक्ष के आदि - मध्य - अंत का ज्ञान है |

723- उलफत = प्यार। ब्राह्मणों को एक शिव बाबा से ही उल्फत रखनी है।

724- ऊधव= उद्धव श्री कृष्ण के मित्र थे। उन्हें हठयोग साधना का घमंड था। इसके द्वारा वह गोपियों को श्री कृष्णा के प्रेम को त्याग कर निर्गुण निराकार ब्रह्म की उपासना करें।गोपिया श्री कृष्ण के वियोग में व्याकुल थी। लेकिन गोपियां तो श्रीकृष्ण के प्यार की दीवानी थी।

725- एक टिक = स्थिर, अच्छा

726- उल्टा- सुल्टा = अनावश्यक,व्यर्थ।

न क्रोध होना चाहिए, न कोई उल्टा-सुल्टा ख्याल आना चाहिए। विकारों की कोई भी बीमारी न हो।

727= उल्लू - एक पक्षी जो मूर्ख का प्रतीक है।

इस समय सब मनुष्य उल्लू मिसल उल्टे लटके हुए हैं । फिर सुल्टा होने से अल्लाह के बच्चे बन जायेंगे ।...

728- एकमत= एक की ही मत पर चलना अथवा किसी विषय पर सभी की एक राय होना। ब्राह्मण बच्चों को एक मत होकर एक शिव

बाबा की मत पर ही चलना है।

729- एवजा= बदले में या प्रतिफल

अभी तुम अपना धन दान करते हो तो इसका एवजा फिर 21 जन्मों के लिए नई दुनिया में मिलता है ।..

730- ओखली =अन्न आदि कूटने का पत्थर या काठ का बना पात्र।

श्री कृष्ण को ओखली में बांधते थे।

731- ओना = फिक्र/ ख्याल

732- कवांठी = कावड़।कांवड़ देवाधि देव महादेव को प्रसन्न करने का सबसे सरल और सहज तरीका है।

733- कच्छ मे कुरम = बगल मे शास्त्र।

तुम ब्राह्मण हो, तुमको सच्ची गीता सुनानी है। वह(दुनिया वाले) तो कच्छ में कुरम उठाते हैं।

734 - कवल = कमल

ब्रह्मा के मुख से कवल रचता हूं

735- कखपति = भिखारी।

माया ने कखपति बना दिया। अब बाबा पद्मापति बनाते हैं।

736- कच्ची रसोई/पक्की रसोई=साधारण भोजन/ उत्तम भोजन

श्रीनाथ के द्वारा पर घी के कुएं हैं वहां पक्की रसोई बनती है। जगन्नाथ द्वारा पर कच्ची रसोई बनती है यही फर्क है।

737- कणे का घणा देना= कणा (थोड़ा) देकर बहुत ज्यादा पाना।

शिव बाबा देता भी है कणे का घणा करके और हिसाब भी करता है कणे कणे का।

738- कण्ठा = तट , घाट। राजधानी यही जमुना का कंठा देहली होगी।

739- कुण्डी वाले= पिजड़े में बन्द।

पिंजरे की मैना से उड़ते पंछी हो गये। कुंडी वाले उड़ने वाले तोता बन गए।

740- कनात = मोटे कपड़े का पर्दा

741- कपाट खुलना= दरवाजा खुलना, समझ में आना।

742- कपिलदेव= प्राचीन भारत के एक प्रभावशाली मुनि थे । गीता में इन्हें श्रेष्ठ मुनि कहा गया है । कामधेनु कपिल मुनि के पास रहती थी।

743- कपूस = कपास, रूई।

ब्राह्मणों के पास पीस-प्रापर्टी सब है। इसलिए श्रीमत पर आग और कपूस इकट्ठे रहते भी पवित्र बनना है। गृहस्थ व्यवहार में रहते पवित्र रहना है।

744- कब्रिस्तान= श्मशान,मुर्दों को ज़मीन में दफ़नाने की जगह।

पुरानी दुनिया को कब्रिस्तान बनना है। पुरानी दुनिया से बेहद का वैराग्य रख इसे भूल जाना है।यह अन्त का समय है, सब खत्म होना है।

745- कमबख्ती = दुर्भाग्य, भाग्यहीन

746- करामात= करिश्मा, चमत्कार, आश्चर्यभरा कार्य, सिद्धि, अचरज भरी बात, अनोखी बात

747- कण्ठी = माला, गले की पवित्र माला।

तोता भी एक पढ़ने वाला होता है जिसकी कंठी होती है ,यहां भी जो पढ़ेंगे वह कंठी (माला) में पिरोये जाएंगे।

748- कफनी= वह कपड़ा जो साधु पहनते हैं। कंपनी पहनने वाले साधुओं को उनके फॉलोअर और दूसरे लोग भी बहुत सम्मान देते हैं।

749- कमबख़्त= बदनसीब भाग्यहीन। यहां हजारों पढ़ते हैं लेकिन जिन्हें निश्चय नहीं हो पता उन्हें कमबख्त ही कहेंगे।

750- कमानधारी = धनुर्धर

सदा की हार से चंद्रवंशी में आकर कमानधारी बन जाते हैं।

751- कर्मकाण्ड = धार्मिक क्रियाकलाप ,। इसका सम्बन्ध पूजन, पाठ, यज्ञ, विभिन्न प्रकार के अनुष्ठान से ही सम्बन्धित है।

752- कलराठी जमीन = बंजर जमीन।

यहां तो इतने मनुष्य हैं खाने के लिए नहीं मिलता। पुरानी कर लाठी जमीन है जो नई हो जाएगी।

753-कलाबाज = जादूगर,बाजीगर

कलाबाज या सर्कस में काम करने वाले हर कर्म करते हुए अपनी कलाबाजी दिखाते हैं ।

754-कशिश,= आकर्षण।

755-काटा लगाना = दुःख देना। यह है ही गन्दी दुनिया, एक दो को कांटा लगता ही रहता हैं।

756-कांध = सिर। मुरली सोते समय किसी कांध जैसा घूमता रहेगा।

757-काण्ड= किसी कार्य/ विभाग का भिन्न-भिन्न भाग

राम राज्य है सतयुग कांड तो कलयुग है भक्ति कांड।।।

758-काठी= लकड़ी

759-कर्म कूटना =पश्चाताप करना; सज़ायें खाना;

अपने किसी व्यवहार, भूल, दोष आदि के कारण होने वाला दुख। अभी बाप से तुम ऐसे कर्म सीखते हो जो तुमको 21 जन्म कभी कर्म

कूटना नहीं पड़ेगा।कोई देवाला मार देते, कोई बीमार पड़ जाते, कोई की अकाले मृत्यु हो जाती... यह सब है कर्म कूटना ।...

760-कर्मभोग= कर्म का फल भोगना। जन्मो जन्मो से हमने जो पाप किए हैं उसे हमें भोगना ही पड़ता है।

भोगना होता ही है इसलिए अच्छे या बुरे दोनों ही प्रकार के कर्मों का भोग कर्मभोग ही है।

761-कला काया= शरीर और उसकी विशेषताएं।

रावण उल्टा कर देते हैं तो कला काया हो जाती है फिर वह गिरते ही है।

762-कांटों का जंगल = दुखदाई दुनिया।

इस समय सारी सृष्टि कांटों का जंगल है।

763-काग विष्ठा = कौओं का मल

सन्यासी कहते हैं यह काग विष्ठा समान सुख है। परंतु में या नहीं पता था कि सतयुग में सदैव सुख था।

764-कपारी खुशी = बहुत खुशी

भक्त जिसकी महिमा करते हैं, तुम उनके सम्मुख बैठे हो, तो कितनी खुशी होनी चाहिए।

765-कायदेसिर= नियमानुसार

सतयुग में थोड़ेही दु:ख भोगेंगे। वहाँ तो कायदेसिर अपना रास्ता लेकर चलेगी। यहाँ रास्ता छोड़ देती है।

766-कारून का खजाना-

कारून, जिसे क्रॉसस के नाम से भी जाना जाता है, को इतिहास के सबसे धनी व्यक्तियों में से एक माना जाता है। वह एक इस्राएली थाजो ईजिटष्ट में रहता था। कारून के धन ने उन्हें धन का प्रतीक बना दिया; अपार धन; एक अमूल्य खजाना; अथाह संपत्ति।

767-काला मुंह करना-

बदनाम करना, बुरा काम करना। माया थप्पड़ लगाए एकदम काला मुंह कर देती है।

768-काशी के कलवट खाना = मोक्ष या मुक्ति पाने के लिए काशी के एक कुएं में कूद कर अपनी जान देना। जो अब प्रतिबंधित हो गया है।

एक बाबा की याद रहे यही है सच्ची काशी कलवट खाना।

769-काशीवास = मृत्यु को पाना, स्वर्गवासी, कहा जाता है कि काशी में मृत्यु होने पर सीधे स्वर्ग मिलता है।

770-किचड़ा = व्यर्थ

आत्मा के विकारों का किचड़ा निकाल शुद्ध बनना है। बाबा की याद से ही सारा किचड़ा निकलेगा।

771-कीर्तन= ईश्वर की आराधना में गायन भजन करना।

772=काबर= एक प्रकार का जंगली मैंना, कौआ जैसा पक्षी।

बाबा के पास गॉडली बुलबुल हैं, मैनायें भी हैं, तोते भी हैं, कोई काबर भी हैं। सबसे लड़ते झगडते हैं।...

773-कामधेनु = शास्त्रों में कामधेनु गाय को देवताओं की सर्व इच्छाएं पूरी करने वाली बताई गई है।

इच्छा पूर्ण करनेवाली गाय (काम>इच्छा, धेनु-गाय) । बाबा कहते हैं कि जैसे मम्मा बाबा ने सर्व की मनोकामनायें पूरी की वैसे बच्चों को भी मम्मा बाबा समान सर्व की इच्छाओं को पूर्ण करना है ।

774-कायदेमुजीब = कायदे के अनुसार, नियमानुसार।

मुख से शिव शिव नहीं बोलना है यह कायदेमुजीब नहीं है। इससे कोई फल नहीं मिलता।

775-काया कल्पतरु= पवित्र शरीर; शरीर कल्प वृक्ष समान बनना; शरीर का पूर्ण रूप से निरोगी होना और नई शक्ति आना ।

यहाँ आकर सृष्टि को पलटाए काया कल्प वृक्ष समान बनाते हैं। अब तुम्हारी काया पुरानी हो गई है।

776- कालीदाह = एक सरोवर जिसमें कालिंदा नाम का राक्षस नाग के रूप में रहता था।

कालीदाह में सर्प को डसा। आज माया सबको डस रही।

777-कीचक= महाभारत में राजा विराट स्वभाव के जितने अच्छे थे, उतने ही बुरे थे उनके साले कीचक। कीचक की द्रौपदी पर कुदृष्टि थी। पहले तो कीचक ने द्रौपदी को बातों से फुसलाने की कोशिश की लेकिन बाद में वह अभद्रता पर उतर आया।

द्रौपदी के सम्मान पर वार करने की कोशिश कीचक को भारी पड़ गयी। द्रौपदी ने भीम को अपने अपमान की बात बताई तो भीम ने कीचक का वध कर दिया।

778-कूल्हा देना= मदद करना, सहायता देना, कंधा देना।

बापदादा संग बच्चों को कूल्हा माना कंधा देना है सर्विस में । सारी पुरानी दुनिया को रवाना करना है।

779-कूदना- खुशी होना,उछलना

780-कोटों में कोई =करोड़ों में कोई कोई ही ज्ञान में आते हैं।

781- कौड़ी तुल्य = बहुत कम मूल्य।हीरा जनम अनमोल था, कौड़ी बदले जाये।

यह ब्राह्मण जन्म हीरे तुल्य है । हम ब्राह्मण बच्चों को 21 जन्म की रजाई मिलती है माया में पड़कर इसे कौड़ी तुले नहीं बनाना है।

782- कुब्जा = टेढ़ी पीठ वाली स्त्री , कुबड़ी स्त्री

783- कुम्भकरण = रावण का भाई था। कहा जाता है कि उसको नींद से उठाना बडा कठिन है। आज्ञान की नींद में सोये हुए इन्सान को कुम्भकरण कहते हैं।

बाबा कहते तुम भी कुंभकरण की नींद में सोए हुए थे,बाप ने आकर जगाया है।

784-कुरूक्षेत्र= कुरुक्षेत्र, हरियाणा के उत्तर में स्थित एक जिले का नाम है। माना जाता है कि यहीं महाभारत की हुतालाह लड़ाई हुई थी ओर भगवान कृष्ण ने अर्जुन को गीता का उपदेश यहीं ज्योतिसर नामक स्थान पर दिया था

785-क्षणभंगुर= क्षण भर में नष्ट होने वाला, थोड़े समय का सुख।

इस दुनिया में तो आजकल क्षणभंगुर सुख है।

786-खग्गे= आस्थिर, चंचल, जल्दी सुधरने वाले नहीं।

पुरुष तो जैसे खग्गे गए हैं। उनका बुद्धि योग बहुत भटकता है।

787- खटपटी = जटिल,पेचीदा

बाबा की नॉलेज अटपटी और खटपटी भी है।

788- खटिया उल्टा करना=

भारत के कुछ हिस्सों में, बेटी के जन्म पर नाराजगी व्यक्त करते हुए, या बेटी के मरने का विचार व्यक्त करते हुए, बिस्तर को उल्टा कर दिया जाता है ।

789- खड़ाऊं= काठ की बनी हुई पादुका जो पैर में पहनी जाती है।

कृष्ण की खड़ाऊ आज रखकर पूजा करते हैं। शिव बाबा कहते हैं मेरी ना तो चरण है ना ही खड़ाऊं है।

790- खता= भूल,चूक, गलती।

791- खस-खस = पोस्ते का दाना

792- खान = जमीन के अंदर खोदा गया भंडार।

मधुबन है सब प्राप्तियां की खान तुम इस खान में आए हुए हो।

793- क्षीर = दूध, मीठा

बाप क्षीर बच्चों को कहते हैं, मम्मा बाबा कहकर घर भूल मत जाना।

794- खंडहर =किसी इमारत के भग्नावशेष, पुरानी इमारत के अवशेष या किसी ध्वस्त मकान का बचा-खुचा हिस्सा। इसी प्रकार यह शरीर भी कलियुग के अंत में पुराना हो गया है।

795- खग्गियां मारना= खुशी में उछलना

तुम अभी पूछ से पुजारी बन रहे हो इसलिए तुम्हें खुशी में रहकर खग्गियां मारना है।

796- खलास होना = नाश होना।

भल यहाँ रहते हो परन्तु बुद्धि में यह रहे कि इन आंखों से जो कुछ देखते हैं वह सब रावणराज्य है। जो खलास होना है।

797-खाक = राख, मिट्टी में मिल जाना

798- क्षीरखंड- दूध और चीनी की तरह मिलजुल रहना।

तुमको यहां क्षीरखंड बन कर रहना है। आपस में बहुत लव होना चाहिए।

799- खाना खराब = अपना नाश करना।

माया ने खाना खराब कर दिया है।। ड्रामा अनुसार बाबा आकर अब खाना आबाद करते हैं।

800- खल = शरीर, चमड़ा।

तुम बच्चों को यह ख्याल है कि यह पुरानी कल छोड़नी है और नई लेनी है।

801-खिलाड़ी = खेलने वाला व्यक्ति।

माया के पांच खिलाड़ी है और प्रकृति के भी पांच खिलाड़ी हैं।इन 10 खिलाड़ियों को ब्राह्मण बच्चे ही समझते हैं।

802-खावन्ती= खा गई, माया अच्छे-अच्छे बच्चों को भी ज्ञान योग से छुड़ा देती है।

ब्रह्माकुमार कुमारी बनन्ती, कथन्ती फिर भी अहो मम माया अच्छे-अच्छे बच्चों को खावन्ती ।

803-खुटता = कम होना , समाप्त होना।

विनाशी धन खर्च करने से खुटता है। अविनाशी धर्म खर्च करने से पद्मगुना बढ़ता है।

804-खुदाई खिदमतदार = ईश्वरी सेवा में मददगार ,संदेशवाहक, मैसेंजर।

खुदाई खिदमतगार को सदा स्वत: ही खुदा और खिदमत अर्थात् बाप का स्नेह याद प्यार मिलता है।..

805-खुर - पशुओं के पैर का निचला भाग जो बीच से फटा होता है। लौकिक ब्राह्मण गऊ के खुर जितनी चोटी रखते थे।

806-खाना आबाद= तरक्की, खुशी

माया ने आकर खाना खराब कर दिया है बाबा अब जाकर खाना आबाद करते हैं।

807-खुखरी = नेपाली कटारी,छुरी

808-खिवैया = नाविक। खिवैया एक शिव बाबा जो विशेष सागर से परे ले जाकर भारत में सतयुगी दुनिया की स्थापना करते हैं।

809-खुदाप्रस्त = खुदा की राजधानी।

810-खुली छुट्टी = पूरी अनुमति। स्वतन्त्रता।

जितना चाहे उतना भाग्य बना सकते हो खुली छुट्टी है।

811-खून के आंसू बहाना= कष्ट से बहुत दुखी होना।

812-खेरूत= खेत में काम करने वाला किसान।

813-खेलपाल = गोपियों ग्वालों के साथ श्रीकृष्ण का क्रीड़ा करना।

गंगा जमुना तो सतयुग में भी होती हैं कहते हैं श्री कृष्णा वहां खेलपाल करते थे।

814-खोखलापन =निरर्थक,सारहीन,महत्त्वहीन।

815-खोटे धन्धे = झूठे धन्धे

सबसे अच्छा धंधा है बाप और वर्से को याद करना। बाकी सब है खोटे धन्धे।

816-खोरस = इज्जत, अच्छी पालना।

मधुबन में आते हो तो विशेष खोरस रहती है।

817-खुश खैराफात= कुशल समाचार

818-खून की नदियां= खून खराबा होना, पिछड़ी में ऐसे लड़ेंगे की खून की नदियां बहेंगी।

819-गऊ का कोस = गोहत्या।

भारतवासी गऊ का कोस करने को सबसे बड़ी हिंसा मानते हैं परंतु शिव बाबा काम कटारी चलाने को सबसे बड़ी हिंसा कहते हैं।

820-गऊमुख कपड़ा =गोमुखी थैली एक कपड़े की थैली जैसी होती है। इसका प्रयोग माला जपने में किया जाता है। माला का जाप करते समय जपकर्ता माला को इस थैले में रखता है और माला को गुप्त रीति से जाप करता है।

821-गजघोर = गरजना

822-गदोला = बिस्तर/ बिछौना

823-गधाई = गधे का काम; मेहनत या बोझ उठाने का काम करने वाला;

824-खुश्क = सूखा, नीरस

खुश्क चेहरा नहीं दिखाई दे, खुशी का चेहरा दिखाई दे।

825-खैंच = आकर्षण ,अट्रैक्शन

826- खोट = बुराई,कमी-कमजोरी

827- किसी भी कार्य में अगर कोई प्रकार की खोट अथवा कमी होती है तो इसका कारण बाप की बजाए मेरेपन की खोट है।

828-गऊमुख= गोमुख माऊंट आबू के निकट एक मन्दिर है। गोमुख से बहते पानी को लोग पवित्र गंगा जल मानकर भक्ति से पीते हैं। बाबा कहते हैं कि सच्ची गोमुख तो ब्रह्मा बाबा है जिनकी मुख कमल से शिव बाबा ज्ञान की गंगा बहाते हैं। इस ज्ञान गंगा की सेवन ही आत्मा पावन बन सकती है।

829-गऊशाला = गायों का बाड़ा/घर।

यज्ञ की शुरुआत में 300 की भट्टी थी । गऊशाला में हजारों की अन्दाज़ में गऊूयें हों तो कोई सम्भाल भी न सके | भट्टी भी थोड़ों की बननी थी।

830-गदाई= तुच्छ, नीच,बेकार।

आत्माओं को रजाई मिलती है अभी आत्माओं की गदाई है।

831-गप्प मारना = बकवास करना अनावश्यक बहस करना शेखी बघाड़ना।

अपनी जांच करनी है हम कितना बाप की याद में रहते हैं? इसमें गप्प मारने की बात नहीं।

832-गरूड-= सफेद रंग का एक प्रकार का पक्षी।गरुड़ भगवान विष्णु का वाहन हैं।

833-गल गये= गलकर गुप्त हो गये या लुप्त हो गये।

पांच पांडव हिमालय में गल गए। प्रलय हो गई।मनुष्य जो सुनते हैं उसे सत्य समझ लेते हैं।

834-गले का हार = अत्यंत प्यारा,बहुत प्रिय।

तुम पहले रूद्र के गले का हार बनेंगे फिर विष्णु के गले की माला में पिरोये जायेंगे।

835-गांवड़े का छोरा= गांव का लड़का।

यह भी गायन है गांवडे का छोरा... कृष्ण तो गांवड़े का हो नहीं सकता है। वह तो बैकुण्ठ का मालिक है ..

836-गांठ बांधना = किसी बात को अच्छे से याद रखना।

गांधी गीता,=गांधी गीता एक पुस्तिका है जिसमें, भगवत गीता जो कि हिन्दू पौराणिक शास्त्र है। महान रचनाओं में से एक है, उस पर महात्मा गांधीजी के विचारों का प्रस्ताव है ।

837-गाजी= कपटी, धूर्त, दूसरों को दुख देने वाला।

... ऐसा काम कोई नहीं करे जो टेटर बने और अबलाओं पर अत्याचार हो । उनको गाजी भी कहा जाता है। ...

838- गाफिल=अचेत, बे-सुध,असावधान, लापरवाह।

ये जानते हैं बच्चे किं बरोबर बाबा आए, गाफिल हों करके सोओं नहीं अभी,

839- गिट्टी= मुख में रखने भर भोजन,कौर, निवाला।

बाबा ने सभी को स्नेह और शक्ति भरी दृष्टि देते गिट्टी खिलाई।

840-गलीचा = मोटा बिछौना

841-गिन्नी = सोने का सिक्का

.. बहन राखी बांध तिलक देती है फिर भाई बहन को अच्छी खर्ची देते हैं। गिन्नी भी देंगे। ...

842-गड़ गड़धानी बनाना= गड़बड़ करना

गायन भी है अचतम् केश्वम्, गोपी वल्लभम्, जानकी नाथम्..... यह महिमा भी इस समय की है। परन्तु न जानने के कारण सब बातें गुड़-

गुड़धानी

843-गुरू गोंसाईं = साधु, विद्वान

और सब जिस्मानी योग हैं मामा, चाचा, काका, गुरू गोसाई आदि सबसे योग रखते हैं। बाप कहते हैं इन सबसे योग हटाए मुझ एक को याद करो। ...

844-गुरूभाई = एक ही गुरु के शिष्य।

बाप दादा टीचर्स को ही गुरु भाई कहते हैं।

845-गुर्र गुर्र करना = गुस्से में बड़बड़ाना

846-गूजर = गोपाल , ग्वाले

..यहाँ जो गऊओं को सम्भालने वाले हैं, वह कहते हैं हम गूजर हैं। कृष्ण के वंशावली हैं। वास्तव में कृष्ण के वंशावली नहीं कहेंगे।

847-गेरू कफनी= गेरुआ या नारंगी रंग का कपड़ा।

848- गोते खाना = डुबकी मारना, धोखे खाना।

गंदे ते गंदी आदत है विषय सागर में गोते खाना।

849-गुम्बज =इमारत की गोल छत; इमारत का वह शिखर जो गोल आकार का हो जिसमें आवाज़ गूंजे।

मधुबन एक ऐसा विचित्र गुम्बज है ।जो मधुबन का जरा - सा आवाज विश्व तक चला जाता है।

850-गुरूशिखर=..

पर्वत की चोटी पर बनी गुरू शिखर मंदिर माउंट आब से 15 किलोमीटर दूर स्थित । है। यह मंदिर भगवान विष्णु के अवतार दत्तात्रेय को समर्पित है।

गुरूशिखर भी है। शिखर चोटी को कहा जाता है। पहाड़ी पर शिवबाबा का मन्दिर है। .

851- गुल-गुल = फूल

बाप आया है तुम्हें गुल-गुल बनाने, तुम फूल बच्चे कभी किसी को दुःख नहीं दे सकते,

852-गुलशन = बगीचा

853- गुह्य/गूढ़ = गहन गम्भीर जानकारी हो,अर्थ-गर्भित।

वही श्रीकृष्ण 84 जन्म लेते लेते अब पिछाड़ी के जन्म में है, जिसको फिर बाबा एडाप्ट करते हैं। पुराने को नया बनाते हैं, कितनी गूढ़ बाते हैं समझने की ।

854- गृहयुद्ध = गृहयुद्ध एक ही राष्ट्र के अन्दर संगठित गुटों के बीच में होने वाले युद्ध को कहते हैं। कभी-कभी गृह युद्ध ऐसे भी दो देशों के युद्ध को कहा जाता है जो कभी एक ही देश के भाग रहे हों। गृहयुद्ध में लड़ने वाले गिरोहों के ध्येय भिन्न प्रकार के होते हैं।

855-गोता = डुबकी

856-गोथरी= ब्रह्म बाबा,थैला।

बाप जाने बाप की गोथरी (ब्रह्मा बाबा), जाने।

857-गोदरी = राजाई, 21 जन्मों में देवता पद पाना।

858- घासलेट = मिट्टी का तेल।

कोई चीज में जंग लगी है तो उसे घाटलेट में डालते हैं।

859- गोदरी में करतार =पुराने शरीर में शिव बाबा की प्रवेशता

860~ गोप गोपी= मथुरा नगरी के स्त्री व पुरुष जो श्री कृष्ण से प्रेम करते थे।

अपने को गोप- गोपी समझना और निरंतर बाप को याद करना।

861-गोलक = गुल्लक, वह पात्र जिसमें थोड़ा-थोड़ा करके धन इकट्ठा किया जाता है।

862-घड़ी -घड़ी =थोड़ी थोड़ी देर बाद, बार-बार,बारम्बार।

सुख की महिमा अपरमअपार है। परन्तु बच्चे घड़ी-घड़ी भूल जाते हैं, रूठ पड़ते हैं।

863-घड़ी घड़ी के घड़ियाल,= थोड़ी थोड़ी देर में बदल जाना।

घड़ी-घड़ी के घड़ियाल - बाबा पास बहुत हैं, अभी देखो बड़े मीठे, बाबा कहेंगे ऐसे बच्चों पर तो कुर्बान जाऊं। घण्टे बाद फिर कोई न कोई बात में बिगड़ जाते हैं।

864-घर और घाट = परमधाम घर और राजधानी।

यही उम्मीद रखनी है कि हम बाप द्वारा पवित्र बन अपने घर और घाट में जायें। ...

865-घर के भाती=घर के सदस्य ,सारी दुनिया।

866-घराट = परिवार

867-गोपीचंद= गोपीचन्द भारतीय लोककथाओं के एक प्रसिद्ध पात्र हैं। वे प्राचीन काल में रंगपुर (बंगाल) के राजा थे। इन्होंने अपनी माता से उपदेश पाकर अपना राज्य छोड़ा और वैराग्य लिया था। इन्होंने अपनी पत्नी से महल में जाकर भिक्षा मांगी थी।

.-गोपीचन्द राजा की भी कहानी है। उनसे पूछा गया तुमने राज्य भाग्य क्यों छोड़ा? बोला प्रभू मिलन के लिए छोड़ा है।

868-गोबी= घाटा,नूकसान

869-गोरखधंधा= कोई जटिल कार्य जिसका निराकरण सहज न हो, अनियमितता या घपला' होता है.।

दिन में तो गोरख धंधा रहता है । रात को सन्नाटा रहता है । सब सो जाते हैं ।

870-गोला = सृष्टि चक्र का चित्र।

871-ग्रास = कौर, निगलना

872-घट घट= हर जगह,कण कण में।

सर्व आत्माओं का पिता परमात्मा एक है लोग कह दिया करते थे कि ईश्वर तो घट-घट वासी है।परन्तु ऐसा नहीं है।

873-घर की चरेत्री = गृहणी।..

मल्लयुद्ध होती है ना। तुम माताओं ने देखा नहीं होगा क्योंकि मातायें होती हैं घर की घरेत्री । ...

874-घोटना = अभ्यास करना जोर से दबाना।

875-चंवर = पंखा।

876-चक पहन लेती=काट लेती; पछताना। अच्छे-अच्छे पुराने बच्चे उनको भी माया ऐसे चक पहन लेती है।

877-,चकरी= षड्यंत्र,चंचल अस्थिर

माया की चकरी बहुत चलती है।

878,-चट्टियां = सीढ़ियां,मंजिल।

879-घात=हत्या,मार

880-घिस जाना= पुरानी अवस्था पाकर जर्जर होना।

.. उस ड्रामा की फिल्म चलते चलते घिस जायेगी, परानी हो जायेगी यह तो बेहद का अविनाशी ड्रामा है। ...

881-घुट घुट कर मरना =दु:खी होकर मरना; अनावश्यक कष्ट झेलना ।

घुट घुट कर मरना रावणराज्य में होता है। तुम खुशी से तैयारी कर रहे हो कि हम कब बाबा के पास जायें,

882-चंदा चिड़िया होना= चंदा इकट्ठा करना

883-चटाभेदी= कोशिश, संघर्ष।

.-किसमें कोई अवगुण, किसमें कोई | चटाभेटी भी चलती है। मेहनत बहुत है ...

884-चढ़ती कला = उन्नति में गाया भी जाता है सुदामा ने दो चपटी चावल दी तो महल मिल गये। बाबा 21 जाने की कला

.-रावण राज्य शुरू हुआ, सीढ़ी नीचे उतरे अब फिर चढ़ती कला सेकण्ड की बात है।

885-चत्तियां = सिला हुआ पट्टीयां

886- चपटी चावल ,=मुद्ठीभर चावल

गाया भी जाता है सुदामा ने दो चपटी चावल दी तो महल मिल गये। बाबा 21 जन्मों के लिए वर्सा दे देते हैं।

887-चमड़ापोश=चमड़े का वस्त्र;

कहते हैं चमडे का काम करने वाले को एक दिन की राजाई दी गई। तो उसने वहाँ का करेन्सी, कारोबार सब चमड़े की करा दिया । एक दिन की राजाई में ही उसनेए वहाँ की पूरी ही व्यवस्था बदल दी । उसको कहते हैं चमड़ापोश राजा ।

888-चाखड़ी=कांठ या लकड़ी का बना हुआ पैर में पहने जाने वाला खड़ाऊं या चप्पल।पादुका।

ंकृष्ण के मन्दिर में माथा टेकने के लिए चाखड़ी रखते हैं, मुझे तो पैर हैं नहीं जो तुमको माथा टेकना पड़े। ...

889-चावल मुट्ठी = थोड़ा सा चावल, मुट्ठी भर चावल।

गरीब बच्चे तो चावल मुट्ठी देकर महल ले लेते हैं

890-चिंदी = तिलक

891-चिचड़ = चिपकना

892-चिड़चिड़ापन - छोटी छोटी बात पर क्रोधित होकर नाराज होना। एक बाबा चाहिए बाप तो है ही लेकिन कई बार मन ... उस समय चिड़चिड़ापन आता है कि नहीं आता है

893-चीर उतारना = वस्त्र का अपहरण करना।

इस समय सब सब द्रोपदियां और दुशासन है जो सबकी चीर उतरते हैं

894-चूं चूं नहीं करना = कुछ नहीं बोलना, आवाज नहीं करना।।

895-चिदाकाशी ,,= एक आश्रम का नाम

896- चींटी मार्ग का पुरुषार्थ = धीमी मार्ग से पुरुषार्थ करना।

897-चिता = लड़कियों का वह ढ़ेर जिस पर शव को रखकर जलाया जाता है

898- चिंगारी= अग्निकण

अब लड़ाई लगी कि लगी। एक चिन्गारी से देखो आगे क्या हुआ था।

...

899-चीर चीर हो जाना = टुकड़े टुकड़े हो जाना।

900-चोबचीनी = बहुत ही लाभकारी दवा। एक लता जिसका उपयोग दवा के रूप में होता है।

901-चौपड़ी = पुस्तक, खाता लिखने की पुस्तक

902-चुहरा = सफाई करने वाले, सफाई कर्मी।

903-छठी = बच्चों के जन्म के छठे दिन होने वाला उत्सव/नामकरण।

904-छम-छम = भयपूर , चमक

माया की छम छम और रिमझिम काम नहीं है इसलिए उससे बचकर रहना।

905- छम छम तालाब = जादुई तालाब।

906-छिड़ जाना = शुरू हो जाना।

ऐसे ऐसे काम करते हैं, तंग कर देंगे तो लड़ाई भी छिड़ जाएगी।

907-चेतन = जीवित,

जीता जागता चित्र (शरीर) को मत देखो बल्कि चित्र के अंदर जो चेतन है उसे देखो।

908-चेष्टा= प्रयत्न ,कोशिश

909-चैतन्य = सचेत, प्रयत्न।

यहां बाप कहते हैं कि तुमको चैतन्य लक्ष्मी नारायण बनना है।

910-चौथ का चन्द्रमा= शास्त्रों में बताया गया है की चौथ का चंद्रमा देखने पर कलंक लगता है।

कृष्ण के लिए कहते हैं की चौथ का चंद्रमा देखा तभी इतनी गाली खाई।

911-छप्पर = परिश्रम करना, दुख का बोझ उठाना।

912-छांछ = दही से निकाला है हुआ मट्ठा।सारहीन।

ज्ञान है मक्खन, भक्ति है छांछ, बाप तुम्हें ज्ञान रूपी मक्खन देकर विश्व का मालिक बना देते हैं, ...

913-छुई-मुई=एक कंटीला पौधा जिसे स्पर्श करने पर मुरझा जाती है; लज्जावती; नाज़ुक मिज़ाज का व्यक्ति।

914-छुटेली = बंधन मुक्त हो।

.. बांधेली गोपिकायें पत्र ऐसे लिखती हैं, जो कभी छुटेली भी नहीं लिखती। उन्हों को फुर्सत ही नहीं। ...

915-छू मंत्र = जल्दी से गायब हो जाना

916-छोरे छोरियां = अनाथ बच्चे

917- छोटेपन = बचपन

918-जंगम = फकीर

आगे जंगम लोग कहते थे - ऐसा कलियुग आयेगा जो 12-13 वर्ष की कुमारियां बच्चा पैदा करेंगी । अब वह समय है ...

919-छी छी = गंदा,भ्रष्ट,पतित

920- जफाकसी = खींचतान, खूब मेहनत करना।

921-जमघटों को फांसी = मृत्यु का जाल

बाप आए हैं तुमको जमघातों की फांसी से छुड़ाने।

922-जमघटों को फांसी = वे सजायें जो यमदूत देते हैं।

923-जागीर = पुरस्कार स्वरूप मिलने वाली जमीन, मिलकियत

924-जमघट = जमा हुए सभी विकर्म ,यमदूत।

.. बाप कहते हैं - मैं कालों का काल भी हूँ । वह जमघट तो एक दो को ले जाते हैं। बाप कहते हैं - मैं तो सब आत्माओं को ले जाऊंगा ...

925-जमते जाम = जन्म लेते ही होशियार राजा

.जमते जाम तो कोई हो नहीं सकता | इस कारण बाबा कहते हैं 5 विकार रूपी रावण पर जीत पानी है, श्रीमत पर ...

926-जरासंध= जरासंध महाभारत कालीन मगध राज्य के नरेश थे । सम्राट जरासंध ने बहुत से राजाओं को अपने कारागार में बंदी बनाकर रखा था पर उसने किसी को भी मारा नहीं था। इसका कारण यह था कि वह चक्रवर्ती सम्राट बनने की लालसा हेतु ही वह इन राजाओं को बंदी बनाकर रख रहा था ताकि जिस दिन 101 राजा हों और वे महादेव को प्रसन्न करने के लिए उनकी बलि दे सके।

चाहे कंस हो, चाहे जरासंध हो, चाहे रावण हो - कोई भी हो लेकिन फिर भी रहमदिल बाप के । बच्चे कभी घृणा नहीं करेंगे।

927- जल मरना न्योछावर होना।बलिहार होना।

928- जहन्नुम= नरक, दोजख।

पुरानी दुनिया से दिल लगाना माना जहन्नुम में जाना है। बाप आकर दोज़क से बचाते हैं ...

929-जहान के नूर = संसार को प्रकाश देने वाला।

जहांन के नूर वह है जो बाप दादा को अपने नयनों में समाने वाले हैं।

930-जागीरवार= जमींदार, भूस्वामी

931-जानीजाननहार = सब कुछ जानने वाला।

बच्चे तो सबकी महिमा को जानते हो।

बाबा को कहा जाता है जानीजाननहार, परन्तु जानी-जाननहार का अर्थ बच्चे पूरा समझते नहीं।

932-जामड़े = छोटा, बौने।

पुण्य आत्मा बनने के लिए पुरूषार्थ कर और फिर पाप करने से सौगुणा पाप हो जाता है फिर जामड़े रह जाते हैं, वृद्धि को पा नहीं सकते।

933-जार जार रोयेंगें = खूब रोयेंगें।

जीते जी मरना = जीते हुए सांसारिक बातों से(मोह माया) मरना।

मनुष्य मरना नहीं चाहते हैं। तुम तो जीते जी मर चुके हो। इस दुनिया में कोई से प्यार नहीं। इस शरीर से भी प्यार नहीं।

934-जीयदान =जीवनदान,प्राणदान,शत्रु या अपराधी के प्राण न हरण करना ।

बाप समान रहमदिल बन हर एक को जीयदान देना है

935-जीवन डोर = जीवन का सहारा।

936-जीवपना = दैहिक स्मृति/ याद।देहीभिमानी स्थिति।

जब परमात्मा बाप आकर के जीव आत्माओं से मिलते हैं तो जीव आत्मा को अपना जीवपना भूल जाता है। ...

937-जुत्ती = शरीर

938-जूं मिसल = जुआं जैसा धीरे - धीरे चलना,

ड्रामा भी जूँ मिसल चलता है ना। तुम भी धीरे-धीरे नीचे उतरते हो तो 1250 वर्ष में दो कला कम हो जाती हैं ...

939-जास्ती= अधिक

940-जिन्न = काल्पनिक भूत,किसी भी स्थान तक मात्र अपनी इच्छा से पहुंच सकते है। उन सभी कार्यों को जिसे एक इंसान कई सालों की मेहनत से कर पाता है वह मात्र अपनी इच्छा से कर सकते हैं।

941-जुलुम = दुर्व्यवहार, जबरदस्ती

942-झझी = बहुत अधिक

943- झटपट का सौदा = तुरन्त करने वाला व्यापार

944-झटपट कुल्फी एक पैसा- कराची में जो भी ओम मंडली में आते थे उन्हें फौरन साक्षात्कार होते थे तो लोग कहते थे जेसे बाजार में एक पैसे में कुल्फी मिलती है ऐसे ओम मंडली में साक्षात्कार होता है।

. जब आरम्भ किया था, बापदादा ने सिन्ध में आरम्भ किया तो सिन्धी में कहते थे, उस समय झटपट कुल्फी एक पैसा ।

945-झलक= क्षणिक दर्शन

946-झांझ= मंजीरा ।गोलाकार पीतल की प्लेट जिसका उपयोग ताल वाद्य यंत्र के रूप में किया जाता है, जिससे विभिन्न प्रकार की धात्विक

ध्वनियाँ उत्पन्न होती हैं जोड़ियों में उपयोग किया जाता है, जिन्हें आपस में टकराकर बजने वाली ध्वनि उत्पन्न होती है।

947-झाटकू=एक झटके में मरना ।

एक धक से मरजीवा बनना इसे ही झाटकू कहते हैं।

948-छुटका खाना =< झपकी खाना।

949-झरमुई झगमुई = पर चिन्तन

इसने क्या किया, उसने क्या किया ... ये सब छोड़कर झरमुई-झगमुई में जाना,फंसना मूर्खता है।

950-झुझकी = हिचकी

951-टट्टू = गधा,कम अकल वाला, विकारी।

रावण का चित्र बिल्कुल क्लीयर है 5 विकार स्त्री से, 5 विकार पुरूष सें । इनसे गधा अर्थात् ट्ट्टू बन जाते हैं इसलिए ऊपर में गधे का शीश“ देते हैं। ...

952-टांगर = एक प्रकार का विषैला पुष्प, जिसमें सुगंध नहीं होती।

सदा गुलाब के फूल वह हैं जो देवी-देवता धर्म के आलराउन्ड ... कोई चम्पा हैं, कोई चमेली हैं, कोई टांगर हैं, कोई अक है

953-टाल टालियां = शाखाएं

954-टिकलू टिकलू करना = बातें करना/आलापन करना

कभी भी मुरली मिस नहीं करनी है। कभी भी रूठना नहीं है। ... ज्ञान की टिकलू-टिकलू, भूं- भूं और शंखध्वनि करते रहना है ।

955-टिप्पड़ = माथा।

956-टिफुटी = तीन फुट

957-टिवाटा = जहां तीन रास्ते एक साथ मिलते हैं।

--तीन गली के बीच में टिवाटा होता है। अब हम किस तरफ जायें? एक गली है मुक्ति की, एक गली है जीवनमुक्ति की और एक है नर्क की। ...

958-टीका करना = आलोचना करना, दोषारोपण करना।

... किसी को सीधा नहीं कहना है कि भगवान् आया हुआ है, ऐसा कहेंगे तो लोग हसी उड़ायेंगे, टीका करेंगे ...

959-टोकरधारी = टोकरी उठाने वाली।

तो ताजधारी हो या टोकरेधारी हो? टोकरा उठाना और ताज पहनना कितना फर्क हो गया। ...

960-टीका टिप्पणी= व्याख्या, विचार विमर्श करना।

961-टपकना = बूंद - बूंद कर गिरना। यह ज्ञान सर बुद्धि में टपकना चाहिए। तो खुशी पूरी रहेगी।

962-टेव = आदत

963- ट्रां ट्रां करना =बकवास करना, बकबक करना।

964- टिंडन = छिफकली।

अगर वह बिच्छू टिंडन पैदा ना हो, तो इन राक्षसों की दुनिया का कैसे होगी... मुरली में तपस्या का रूप बताया-आत्मिक स्थिति में रहना ही है।

965-टिकाड़े = मन्दिर,धार्मिक स्थल।

966-टोपी उतारना = बेइज्जत करना। दूसरों को अपने पद से उतारना।

967-टोली = बाबा के ज्ञान यज्ञ में बनाए गए खाद्य पदार्थ।

968-ठगत = धोखेबाजी,चालाकी

969-ठगी = धूर्तता

970-ठाठ = दिखावट, प्रदर्शन, आडम्बर

बाप कहते हैं कि मुझे साधारण तन में आना है। भभका व ठाट कुछ भी नहीं रह सकता हूं।

971-ठिठकी = मटकी के टुकड़े, कंकड़

972-ठिक्कर- भित्तर = पत्थर के भीतर।

दुनिया वालों ने तो भगवान को सर्वव्यापी कह ठिक्कर भित्तर में कह दिया है इसलिए खुद भी पूरे ठिक्कर बन पड़े हैं।फिर कहते ठिक्कर-भित्तर कण-कण में परमात्मा है, तो सब परमात्मा हो गये।

973-डंक मारना = नुकसान पहुंचाना,कांटना

974-डांवाडोल= चंचल, हिलना ।

यह परानी दुनिया खलास हो जानी है। सागर की एक ही लहर से सारा डांवाडोल हो जायेगा। विनाश तो होना ही है ना।

975-टोलपुट = प्यारे,मीठे बच्चे।

976-ठका सुनना = धड़ाके का शब्द सुनने से। भोगी तो थोड़ा ठका सुनने से ख़त्म हो जायेंगे।

977-ठर जाना = ठंठा या शीतल हो जाना।

978-ठिक्कर ठोबर = व्यर्थ,बेकार,फालतू, कौड़ी तुल्य।

इस पुरानी दुनिया में तो ठिक्कर-ठोबर हैं इनसे बुद्धियोग निकाल बाप और नई दुनिया को याद करना है।

979-ठोकरें खाना= मुसीबत झेलना, तकलीफ आना, आफत मे पड़ना।

जब रावण राज्य शुरू होता है तब ठोकरें खाना शुरू होती है।

980-डाडे = दादा , ब्रह्मा बाबा

981-डात = भगवान की देन,

ज्ञान में कितनी साइलेन्स है इसको ईश्वरीय डात (देन) कहते हैं। साइंस में तो हंगामा ही हंगामा है। वह शान्ति को जानते ही नहीं।

982-डोढा /ढोढा = बाजरे की सूखी रोटी

... जैसे स्थापना के आरम्भ में आसक्ति है वा नहीं, उसकी ट्रायल के लिए बीच बीच में जानबूझकर प्रोग्राम रखते रहे। जैसे, 15 दिन सिर्फ डोढ़ा और छाछ खिलाई, गेहू होते भी यह टायल कराई गईं।

983-ढाका = सीढ़ी

984-तगारी = बाल्टी

985-तत्त्वज्ञानी =ब्रह्म तत्व को ही ईश्वर मानने वाले।

कोई कहते हैं ब्रह्म ही ईश्वर है। तत्वज्ञानी ब्रह्म ज्ञानी ही है।

986-डिब्बी मे ठिकरी = डिब्वा खोला तो मिट्टी मिली;

अर्थात् जो कहा जा रहा है उसे समझ में नहीं आ रहा है तो उस व्यक्ति के दिमाग में कुछ भी नहीं है ।

987-डेगियां = बड़े बड़े पतीले।

बेहद के बाप का बेहद का यज्ञ है। कब से डेगियां चढ़ती आई हैं। अभी तक भण्डारा चलता ही रहता है ...

988-डेल = मोरनी

989-ढाल = रक्षा करने वाला अस्त्र

990-ढ़िढोरा पिटवाना = घोषणा करना। गांव-गांव में ढिंढोरा पिटवा दो कि मनुष्य से देवता, नर्कवासी से स्वर्गवासी ... ब्राह्मणों को ही खिलाते हैं।यह तो तुम ढिंढोरा पिटवा दो जो कोई फिर उल्हना न देवे।

991-तम्बूरा =सितार की तरह का तीन तारों वाला एक बाजा जो स्वर में संगति देने के लिए बजाया जाता है।

992-तख्तनशीन = राजगद्दी पर बैठना।

इस समय सभी बच्चों को ताज व तख्त नशीन बनाते हैं। तख्तनशीन अगर हैं तो ताजधारी भी होंगे।

993-तजना = छोड़ देना ।त्यागना।

994-तड़फना =व्याकुल होना।

भक्त लोग आप की दर्शनीय मूर्तियों का एक सेकेण्ड दर्शन करने के लिए तड़फ रहे हैं। ऐसे भक्तों की तड़फ अनुभव करते हो: ...

995-तत्तल / तत्ते= गरम

996-तरकश = तीर या बाण रखने का पात्र।

ज्ञान रुपी बाणों को बुद्धि रुपी तरकश में भरकर माया को ललकारने वाले ही महावीर योद्धे हैं। ...

997- तिक तिक करना = ज्यादा बात करना,परेशान करना।

998-तकरीब= युक्ति । उपाय । तरीका।ढंग । ढब । जैसे,—उन्हें यहाँ लाने की कोई तरकीब सोचो ।

999-तरस = दया,करूणा

1000-तलाक = माया से बंधन तोड़ना, विवाह विच्छेद

माया को तो सबने तलाक दे दिया है ना ! तलाक देना अर्थात् ... आप सब कितने लकीएस्ट हो , जो दूर - दूर से बाप ने अपने बच्चों को ढूंढ लिया।

1001-तवा टू माउथ = तवा से मुँह तक; बाबा कहते हैं कि जो बच्चे बिना अनुवाद के बाबा के महावाक्यों को सीधा सुनते हैं, वे भाग्यशाली हैं और वे विषय को सीधे अपने मन में समझ लेते हैं

ट्रान्सलेशन तो नहीं करनी पड़ती । इसको कहेंगे तवा टू माउथ | ट्रांसलेशन होने में फिर भी थोड़ी तो रोटी सूखेगी ना। ...

1002-ताउसी तख्त = ईश्वर का दिल तख्त, बादशाही

तख्तनशीन अर्थात् ताउसीतख्त पर बिठाते हैं। शिवबाबा की याद में ही सोमनाथ का मन्दिर बनाया है।

1003-तन्त - मुरली का सार तत्त्व।

1004-तवाई = विचलित, अस्थिरता,पागल

जो बच्चे तवाई होकर बैठते, जिनकी बुद्धि इधर-उधर भटकती रहती, वह ज्ञान को समझते ही नहीं।

1005-तस्मई = खीर

1006-तात और बात = संकल्प और वाचा/ वचन में।

1007-तात और लात = एक ही बात के पीछे पड़ना

1008-ताकीद करना = पुरुषार्थ करना,उमंग दिलाना। आप टीचर और गुरु का काम होता है बच्चों को ताकीद करना।

1009-तोतली भाषा= सरल व मधुर भाषा।

तुम छोटी छोटी बच्चियां तोतली भाषा में किसको भी समझा सकती हो। बड़े बड़े सम्मेलन आदि होते हैं, उनमें तुमको बुलाते हैं

1010-तोता कंठी वाला = सब कुछ दोहराने वाले तोते।

जब तक बाप को नहीं समझा है तब तक भल लिखकर दें, परन्तु तोता कण्ठी वाला नहीं बना है। जंगली तोता आया और गया।

1011-तोबा भर लो = माफी ले लो।

1012-त्रिनेत्री =जिसके पास ज्ञान का तीसरा नेत्र हो। ज्ञान योग बल धारण करने वाले बच्चे ही त्रिनेत्री हैं।

1013-त्रिलोक = तीन लोक अर्थात साकार या स्थूल लोक, सूक्ष्म लोक और परमधाम।

1014-त्रिवेणी = त्रिवेणी संगम के धार्मिक महत्व के बारे में ऐसी धारणा है कि समुद्र मंथन के समय जब अमृत कलश प्राप्त हुआ तब देवता लोग इस अमृत कलश को असुरों से बचाने के प्रयास मे लगे थे इसी खींचातानी में अमृत कि कुछ बूंदें धरती पर गिरी थी और जहां-जहां भी यह बूंदें पडी उन स्थानों पर कुंभ का मेला लगता है यह स्थान उज्जैन, हरिद्वार, नासिक व प्रयाग थे। इस स्थान पर कलश से अमृत की बूदें छलकी थी इसी कारण लोगों का विश्वास है कि संगम में स्नान करने से सारे पाप धुल जाते है व स्वर्ग की प्राप्ति होती है।

1015-तुतारी = तुरही फूंक कर बजाए जाने वाला एक वाद्य यंत्र।

मुरली कोई तुतारी नहीं है। मुरली तो वास्तव में ज्ञान की है।

1016-तृष्णा = प्यास , लालसा, अप्राप्त को पाने की तीव्र इच्छा।

1017-तैलुक -= सम्बन्ध ,नाता

1018-तोड़ निभाना = सम्बन्धों को युक्तियुक्त चलाना अर्थात् उचित सम्बन्ध रखना।

तुम्हें लौकिक और अलौकिक संबंधों से तोड़ निभाना है पर किसी से मोह नहीं करना है।

1019-तोते मुआफिक = तोते की तरह बिना अर्थ समझे शब्द दोहराना।

यह गीत तुम्हारे लिए हीरे जैसा है जिन्होंने बनाया है उनके लिए कौड़ी मिसल है। वह तो जैसे तोते मुआफिक गाते हैं।

1020-तोबा तोबा = पश्चाताप , पछतावा।

1021-त्रिया चरित्र= स्त्रियों की वे युक्तियां जिस पुरुष आसानी से नहीं समझ पाते।

माता में त्रिया चरित्र बहुत होते हैं। चतुराई से पवित्रता में रहने के लिए पुरुषार्थ करना है।

1022थिरक जाते = बाहर निकल जाते, वापस चले जाते ।

बहुत तो ज्ञान को समझते समझते फिर थिरक जाते हैं।

1023- दन्तकथायें =ऐसी कहानियाँ या बातें जो कहीं लिखी नहीं गईं, किंतु परंपरागत रूप से सुनी जाती हैं और दोहराई जाती हैं दन्तकथा कहलाती हैं। ये लोक कथाओं का ही एक रूप है। इनमें सच्चाई हो भी सकती है और नहीं भी हो सकती।

1024-दरिया,=सागर, समुद्र

यह पुरुषोत्तम संगम युग बिल्कुल अलग है बीच का। बीच के दरिया में तुम्हारी बोट है।

1025-थुर = तना

इस समय मनुष्य सृष्टि रूपी झाड़ का थुर सारा जल गया है।

1026-दक्ष प्रजापति= कहा जाता है कि ब्रह्मा की अंगुली से दक्ष प्रजापति का जन्म हुआ और सारी मानव जाति उन्हीं की सन्तान हैं। ये भी मान्यता है कि प्रयाग क्षेत्र में उन्होंने यज्ञ रचा। वास्तव में विश्व कल्याण अर्थ शिव बाबा ही असली रुद्र ज्ञान यज्ञ रचते हैं। और सच्चे प्रजापिता तो ब्रह्मा बाबा है जो आदि देव हैं ।

1027-दखलंदाज़ी = हस्तक्षेप करना, किसी कार्य में फेरबदल करने के लिए प्रयास करना।

1028-दधीचि ऋषि =एक ख्यातिप्राप्त महर्षि थे तथा वेद-शास्त्रों के ज्ञाता, परोपकारी और बहुत दयालु थे। वे सदा दूसरों का हित करने के लिए तत्पर रहते थे। महर्षि दधीचि ने तो अपनी अस्थियां तक दान कर दी थीं, क्योंकि वे जानते थे कि शरीर नश्वर है और एक दिन इसे मिट्टी में मिल जाना है।

ब्राह्मण बच्चों को दधीचि ऋषि मिसल हड्डियां दान की।

1029-दर-दर धक्के खाना= परेशान होकर इधर-उधर घूमना।

दर-दर धक्के खाने की आदत छोड़ भगवान की पढ़ाई पर ध्यान देना है।

1030-दरबदर = बेघर, जगह बदलना।

तुम आसुरी मत पर चलने से दरबदर हो गये, अब ईश्वरीय मत पर चलो तो सुखधाम ले चलेगें।

1031-दांव पर रखना = बाजी लगाना।

1032-दांव जमाना = अपने अधिकार को जमाना।

1033-दातन = दातून , दांत साफ करने की नीम ,बबूल आदि की लकड़ी।

हर कर्म की पूजा होती है। मथुरा में जाओ तो दातन के भी दर्शन कराएंगे।

1034-दाल गलना = युक्ति सफल होना, मतलब निकालना ,जो भी कोशिश है उसमें कामयाब होना।

1035-दिलखुश = मन को प्रफुल्ल रखने वाला।

.जो रोज अमृतवेले दिलखुश मिठाई खाते हैं वो स्वयं भी सारा दिन खुश रहते हैं और दूसरे भी उनको देख खुश होते हैं। ...

1036-दाल में काला = किसी बात पर शक होना, कुछ गड़बड़ होना.

1037-दिल टपकाना = उत्सुक होना, दिल बेताब होना।

जो बात याद रहती है वह फिर औरों को समझाने के लिए दिल टपकती है। याद नहीं होगी तो दिल टपकेगी नहीं ...

1038-दिलतख्तनशीन = ईश्वर के हृदय रूपी सिंहासन पर बैठना।

1039-दिलरूबा = सजनी, माशूक, प्रेमिका

चारों और के दिल के दिलरूबा बच्चों की आवाज चारों तरफ से पहुंचती है।

1040-दिलवाड़ा मंदिर= दिलवाड़ा मन्दिर जैनियों का मन्दिर है जो कि माऊंट आबू के आकर्षक स्थानों में से एक है। मन्दिर में 108 कमरें हैं और एक-एक कमरे में एक राजयोगी तपस्या में बैठा हुआ है। छत पर सुन्दर स्वर्ग की दृश्य भी दिखाते हैं। बाबा कहते हैं कि चैतन्य दिलवाडा मन्दिर में सभी ब्राह्मण बच्चे होंगे। और बाहरवाले स्वर्ग की जानकारी न होने के कारण उसे छत पर दिखाया है जो वास्तव में इस धरती पर आदि युग है।

1041-दलाल = मध्यस्थता करने वाला व्यक्ति।

तुम बच्चे जानते हो - बाबा हमको दलाल के रूप में मिले हैं। कहते हैं - मामेकम् याद करो तो खाद निकल जायेगी। ... शिवबाबा को लिखना पड़े थ्रू ब्रह्मा। ब्रह्मा के सिवाए तो शिवबाबा सुन न सकें।

1042 दासीपने= गुलामी/ दासता

गरीब-निवाज़ बाप आये हैं गरीब कन्याओं-माताओं को दासीपने से छुड़ाने, इसलिए गरीब-निवाज़ कहकर बाप की बलिहारी गाते हैं। ...

1043-दांव लगाना = चाल चलना।

1044-दाढ़ी की लाज रखो = इज्जत या मान रखना।श

1045-दाल रोटी= सादा खाना, सामान्य भोजन।

दाल रोटी तो खाना है आप के गुण गाना है दाल रोटी तो मिलनी ही है।

1046-दाल भात = दाल चावल। साधारण खाना

1047-दिलवर = साजन, प्रेमी

1048-दिलशाह = बड़े दिलवाला।

दिलशिकस्त नहीं बनो। दिलशाह बनो। शाह माना फ्राकदिल, सदा बड़ी दिल ...

1049-दिलहोल = निराश,दिलशिकस्त

हर एक को अपना पुरूषार्थ करना है, दिलहोल मत बनो।

1050-दिलाराम =सबके दिलों को जीतने वाला; सबके दिलों को आराम देनेवाला - शिव बाबा

1051-दिवाला = दिवालियापन, निर्धन अवस्था,अकिंचन

1052-दिव्या दृष्टि = अलौकिक दृष्टि तीसरा नेत्र

1053-दुबन = दलदल

मनुष्य तो बाप को भूल दुबन में फंसे हुए हैं।

1054-दुम = पूंछ

हम तो आत्मा हैं। यह शरीर रूपी दुम बाद में मिला है, इनमें हम क्यों फंसे हैं? ...

1055-दूधपाक = दूध पीने वाले बच्चे,अपरिपक्व

1056-दूरबाज खुशबाज = दूर रहो, खुश रहो।

1057-दूरादेशी =दूर तक सोचने वाला , दूरदर्शी

अभी दूरादशी बाप बच्चों को दूरादशी बनाते हैं।

1058-दृष्टांत = उदाहरण,मिसाल

1059-दिलशिकस्त = दु:खी,निराश

1060-दिलासा = सान्त्वना, तसल्ली

1061-दिव्य चक्षु = ज्ञान नेत्र,दिव्य दृष्टि

1062-दीदार = साक्षात्कार

1063-दुखधाम = दु:ख से भरी दुनिया। 2500 वर्ष पूर्व द्वापर से दुख धाम की दुनिया शुरू होती है और कलयुग अन्त में इसकी अति होती है।

जब बिल्कुल दुखधाम होता है तब बाप आते हैं। दुखधाम के बाद है फुल सुखधाम

1064-दुरस्त - दुरूस्त, शक्तिशाली , प्रभावशाली

अच्छे अच्छे चित्र बनते जायेंगे। कहते हैं ना देर पड़े काम दुरस्त होते हैं। तैयार माल मिलता है, जिससे फट से कोई समझ जाए ...

1065-दूजाव्रता = एक शिव बाबा के साथ दूसरे को भी याद करना।

1066-धक से = तुरन्त,झट से

बाप झट एक धर्म की स्थापना कर बाकी सब अनेक धर्मों का विनाश करा देते हैं, एक धक से ।

1067-धक्के खाना = कष्ट सहना, मारा मारा फिरना।

1068-धन्ना भगत = एक भक्त का नाम।

भक्त माला भी थोड़ों की है ना। धन्ना भगत, नारद, मीरा आदि का नाम है। ...

1069-धन्धाधोरी = कामकाज,

धंधाधोरी तो करना है नहीं तो बच्चे कैसे संभालेंगे।

1070-धर्म गोद लेना = बच्चों को गोद लेना।

1071-धर्माऊ जन्म = धार्मिक जन्म अर्थात संगम युग में ब्राह्मणवंशी बनने का जन्म।

बाप कहते हैं बच्चे, यह है तुम्हारा धर्माऊ जन्म । 84 जन्म तो ठीक हैं। यह है धर्माऊ कल्याणकारी जन्म। ...

1072- धामा खाना =श्राद्ध भोजन खाना।

1073-द्रौपदी = द्रौपदी पाण्डवों की पत्नी है। दिखाते हैं कि द्रौपदी की चीर हरण के समय पर अपने आप को भगवान के आगे समर्पण करके निस्संकल्प हो गर्ड तो श्री कृष्ण ने आकर उनको नंगन होने से बचाया । वास्तव में शिव बाबा कहते हैं कि इस कलियुग में शिवबाबा सबकी लाज़ बचाते हैं। फिर कहते हैं कि कृष्ण ने द्रौपदी के पांव दबाये जिसका आध्यात्मिक भाव है कि भक्ति मार्ग से थककर जो आते हैं उन्हों के मन को बाबा आराम दिलाते हैं।

1074-धनी धोणी = मालिक

सारी दुनिया का कोई धनी धोणी नहीं है। मनुष्य, मनुष्य में लड़ते हैं। जानवर भी लड़ते हैं।

1075- धणका = प्रभु या संरक्षक के बने हुए।

1076- ध्रुव= ध्रुव नाम का एक तारा, दृढ़।

वह है दृढ़ संकल्प वाला सितारा, जिसको अपनी इस दुनिया में “ध्रुव” सितारा कहा जाता है। तो ऐसे हृढ़ निश्चय बुद्धि, और एक-रस स्थिति में सदा स्थित पद्मापद भाग्यशाली बने हो ...

1077-धूतियों = धूर्त, छली,कपटी

1078-धोत्रे = पोत्रे (पोते/नाती) के बच्चे।

1079-नजारा = दृश्य, दृष्टि।

चाहे दु:ख का नजारा भी हो लेकिन जहाँ पवित्रता की शक्ति है, वह कभी दु:ख के नजारे में दु:ख का अनुभव नहीं करेंगे। ...

1080-नटवर = नटखट, श्रीकृष्ण का एक नाम।

1081- धुरिया = होली के दूसरे दिन, लोग विभिन्न रंगों के गुलाल या रंगीन पानी से एक दूसरे को रंग लगाते हैं, रंगों में सराबोर की इस प्रक्रिया को प्रायः होली खेलना कहा जाता है। रंगवाली होली जो मुख्य होली दिवस है, इसे धुलण्डी या धुलेंडी के नाम से उच्चारित किया जाता है।

1082- धूलछाई = धूल या मिट्टी के बराबर, जिसका कोई मूल्य न हो।

यह पुरानी दुनिया मिट्टी में मिल धूल छाई हो जाएगी।

1083 - धोबीघाट = वह घाट जहां धोबी कपड़े धोते हैं। विकारों के वशीभूत रहना।

बाप कहते हैं यह धोबीघाट कितने वर्षो से चलता आ रहा है। कपड़े धोते ही आये हैं। कोई तो अच्छे हो गये हैं। ...

1984-नजराना = उपहार,भेंट।

1985- नफीस = सुंदर, आकर्षक

अमेरिका का कितना भभका हैं । चीजें कितनी नफीस बनती हैं।

1986- नब्ज देखना =अंदाज करना।सयझ जाना।

हर एक की नब्ज देखना है। वृत्ति कैसी है,तवाई होकर तो नहीं बैठता।

1087-नयनों के नूर == बहुत प्यारा

बाप दादा के नयनों के नूर अर्थात विश्व की ज्योति हो।

1088-नर देसावर = सदा संपन्न रहने वाला, सदा साहूकार बनाने वाला

बाम्बे (मुम्बई) को ब्रह्मा बाबा नर देसावर कहते थे।

1089 नाक में दम करना= बहुत परेशान करना।

माया ऐसी है जो नाक में दम कर देती है।

1090- नाम बाला करना = नाम ऊंचा करना।

-सपूत स्टूडेन्ट बन बाप टीचर का नाम बाला करना है। कभी भी काम व क्रोध के भूत के वश हो उल्टा काम नहीं करना है ...

1091-नाज = गर्व, शरारत।

1092-नाज से पलने वाले =< लाड़ प्यार से पालना लिए हुए बच्चे।

.वैसे स्थूल मेहनत का पेपर भी खूब लिया। कहाँ नाज़ से पलने वाले और कहाँ गोबर के गोले भी बनवाये, मैकेनिक भी बनाया।

1093-नामधारी =< केवल नाम मात्र के, नाम धारण करने वाले।

1094- नसीब पर हाथ रखना =<अपनी निंदा करना ।

कोई फेल होते हैं वा देवाला मारते हैं तो नसीब पर हाथ रखते हैं। ज्ञान के साथ योग का जौहर भी जरूर चाहिए ...

1095- नामाचार = प्रसिद्ध

1096- नसल = वंशावली

तुम्हारा पहले पहले नसल है ब्राह्मणों का। फिर तुम देवता और क्षत्रिय बनते हो।

1097- नाक कान काटना = बदनाम करना

1098- नापाक= आपवित्र, पतित।

वास्तव में पाक स्थान तो स्वर्ग को कहा जाता है। पाक और नापाक का ये सारा ड्रामा बना हुआ है। ...

1099- नाफरमदार = आजा को न मानने वाले,अवज्ञा करने वाले।

1100- नार की कंगनी = कुएं से पानी निकलने का तरीका।

नार की कंगनी होती है ना जो फिरती रहती है। यह चक्र भी तुम्हारा फिरता रहता है।

1101- नास्तिक = बेहद के बाप को यथार्थ से न जानने वाले, ईश्वर में विश्वास न करने वाले।

1102- निधणके = अनाथ

.. हम गांव के छोरे निधणके बन गये हैं अब फिर हम स्वर्ग के मालिक बन रहे हैं तो खुशी रहनी चाहिए।

1103- निर्माणचित्त = निर्माणकारी दिल

जो निमित्त बने हुए हैं उनको बहुत निर्माणचित्त बनना होगा।

1104- निर्लेप = जिसको पाप - पुण्य का लेप छेप न लगा हो,मनुष्यों ने आत्मा सो परमात्मा कहा, इसी भूल के कारण आत्मा को निर्लेप मान लिया लेकिन निर्लेप तो एक शिवबाबा है।निर्लेप खत्म नहीं है।

1105-नासूर = व्याधिग्रस्त, पुराना गहरा घाव।

63 जन्म हम बहुत बीमार रहे हैं कोई दवाई नहीं हुई तो नासूर बन गया।

1106-नियम प्रमाण = नियमानुसार नियमबद्ध

1107-निर्जल = पानी के बिना रहने वाला एक प्रकार का उपवास।

तुम्हें पवित्र रहने का व्रत लेना है, बाकी निर्जल रखने, भूख हड़ताल आदि करने की जरूरत नहीं, ...

1108-निबन्ध = लेख

1109-निर्मान् = विनम्र, निरहंकारी

1110-निर्लिप्त = जिसका किसी में लिप्त/आसक्त/ लगाव न हो।

बापदादा सदैव यह पाठ पढ़ाते हैं - निर्लिप्त अर्थात् न्यारे और अति प्यारे। यह बहुतकाल का अभ्यास चाहिए।

1111-निर्वाण = वाणी से परे, मोक्ष, मुक्ति।

बापदादा सदैव यह पाठ पढ़ाते हैं - निर्लिप्त अर्थात् न्यारे और अति प्यारे। यह बहुतकाल का अभ्यास चाहिए।

1112-निवृत्ति = सांसारिकता का त्याग करने वाले संन्यासी

1113-प्रवृत्ति= सांसारिक, दुनियादारी में रहने वाला।

1114-निष्काम = जो काम दुनिया में बिना किसी कामना/इच्छा/ वासना से किया जाये।

इस दुनिया में निष्काम सेवा केवल एक बाप ही करता है, बाकी तुम जो भी कर्म करते हो उसका फल अवश्य मिलता है ...

1115-निहाल = प्रसन्न ,सन्तुष्ट।

1116-नुक्स = कमी

बाप की याद में रहने से तुम किसको समझाने में भी एकरस होंगे। नहीं तो कुछ न कुछ नुक्स निकालते रहेंगे। ...

1117-नूरेचिश्म = आंख की रोशनी, बहुत प्यारा

1118-नूरेरत्न = अत्यन्त प्यारा रत्न/बच्चे

प्रिय चीज़ को नूरे रत्न, प्राण प्यारा कहते। हैं। यह बाप तो बहुत प्रिय है,... ... पतित शरीर में आकर तुम बच्चों को हीरे जैसा बनाते हैं।

1119-नेमीनाथ= नियम प्रमाण चलने वाले परंतु धारणा को जीवन में पालन न करने वाले।

1120-निर्विकल्प = जिसमें कोई विकल्प (आप्शन) न हो।

अब क्या करें, बहुत विचार हो गये हैं, किसका मानें, किसका न मानें?
नि:स्वार्थ, निर्विकल्प भाव से निर्णय करेंगें ।

1121-निष्ठा या नेष्ठा= योग ,निष्ठा का एक अर्थ विश्वास भी होता है

1122-नुमाशाम =< शाम का समय, शाम के समय किए जाने वाला योग

1123- नेती - नेती = नहीं जानते - नहीं जानते।

ऋषि मुनि आदि भी कहते थे हम नहीं जानते । नेती नेती कहते थे ना।
अभी तुम बच्चे तो जानते हो वह रचता बाप है और हमको पढ़ा रहे हैं।

1124-पंसारी =किराने वाले दुकानदार

कहावत है ना चूहे को हल्दी की गांठ मिली, समझा मै पंसारी हूँ... ।
बहुत हैं जो मुरली पढ़ते ही नहीं, ...

1125-परकाया = आत्मा/परमात्मा का दूसरे के शरीर में प्रवेश करना।

1126- परवरिश,= पालन पोषण ,देखभाल।

1127-परीजादा अप्सरा, फरिश्ता।

कहते हैं कि मानसरोवर में स्नान करने से परीजादा है बन जाते हैं

1128-परिस्तान = देवताओं की दुनिया,सतयुग।

यह दुनिया कब्रिस्तान होने वाली है इसलिए इससे दिल नहीं लगाओ, परिस्तान को याद करो।

1129-पर्पजली = विशेष ,खास

1130-पलटन = सेना, पैदल सैनिकों का दल।

रॉकेट ऊपर में जाते हैं, तो समझते हैं खुदा के नजदीक जाते हैं। अब खुदा वहाँ कोई बैठा है क्या? यह सारी पलटन आत्माओं की जाती है।

...

1131-पधरामणी =आगमन

शिव बाबा की प्रवेशता ब्रह्मा बाबा और दादी गुलजार में होती थी।

1132-परछाया = परछाई, प्रतिबिम्ब।

इस आसुरी दुनिया में देवताओं की परछाया नहीं पड़ सकती।

1133-परकाष्ठा = चरम स्थिति।

सर्विस करने के लिए ज्ञान की पराकाष्ठा चाहिए।

1134-परीजादे परीजादियां = स्वर्ग के राजकुमार और राजकुमारियां।

1135-पलस = ऊंचा स्थान ।

पलस में माँ को रखते हैं। माताओं को लिफ्ट देनी होती है। पहले लक्ष्मी फिर नारायण, माताओं का नाम ऊंचा किया जाता है। ...

1136-पाई पैसे = बहुत कम, साधारण, मूर्ख.।

वह पढ़ाई तो पाई पैसे की है। उनको छोड़ यह नॉलेज पढ़ते रहें तो दिमाग भी खुले। ...

1137- पाखण्ड= झूठा, धोखा,फरेब

आर्यसमाजी लोग तो देवताओं को मानते ही नहीं इसलिए समझते हैं यह चित्र आदि जो बनाये हैं यह सब पाखण्ड हैं। ...

1138- पाग = स्थिति, दर्जा ,हैसियत।

दिन प्रतिदिन रावण की पाग बढ़ती जाती है ।दुनिया पतित होती जाती है।

1139- पाठी = पढ़ने वाला, पाठक।

सच्चे गीता पाठी तो तुम हो ।सुनना सुनना। कांटों को फूल बनाना

1140- पातशाह =बादशाह,

मनुष्य बाप को सच्चा पातशाह भी कहते हैं।

1141- पादर = माया ।

माया पादर भी मारती है, इसलिए बच्चों को पुरुषार्थ कर बाप को याद करना है।

1142- पादरी = ईसाइयों के मताध्यक्ष

1143- पान का बीड़ा उठाना = जिम्मेवारी लेना।

इस अन्तिम जन्म में तुम्हें पवित्रता की प्रतिज्ञा कर पान का बीड़ा उठाना है।

1144- पलीत= अपवित्र, गन्दा

1145- पसार = आगे की ओर बढ़ना, फैलाना।

अभी सिर्फ ब्रह्मा बाप आप बच्चों का इन्तजार कर रहा है। रोज़ बांहे पसार कर आओ बच्चे, आओ बच्चे कहते हैं। ..

1146- पहरवाइस = पहनावा, पोशाक

1147- पाई पाई = पैसे पैसे

1148- पाक = पावन, पवित्र ।

पाक स्थान है ही नई दुनिया। फिर पुरानी होने से नापाक दुनिया हो जाती है।

1149-- पाग उतारना = इज्जत बिगाड़ना

1150-- पाठ्यक्रम= साप्ताहिक पाठ्यक्रम (कोर्स)।

नए विद्यार्थियों के लिए साप्ताहिक पाठ्यक्रम बनाया है ना। तो आत्मा की उन्नति के लिए भी साप्ताहिक प्लैन बना सकते हो ।

1151- पाया = प्राप्त हुआ, पैर, खंभा

1152- पासा फिरना = साजिश करना

तुम योगबल में रहते हो, माया पर जीत पाने लिए। परन्तु माया बिल्ली पासा फिरा देती है। ...

1153- पिंजरपुर = वह स्थान जहां दूध न देने वाली गायों को रखते हैं।

1154- पिण्ड = भ्रूण, शरीर।

गर्भ में पिण्ड बढ़ता है।जैसे झाड़ बढ़ता है वैसे पिण्ड बढ़ता है,परन्तु उनमें ज्ञान नहीं।

1155- पिंकी / उबासी= ढिलाई, सुस्ती , आलस्य।

... उबासी वा पिनकी आदि नहीं आयेगी। हे नींद को जीतने वाले बच्चों, कमाई में कभी भी नींद नहीं करना है ...

1156- पीठ करना= विमुख होना, समीक्षा करना।

गीता ,भागवत, रामायण और महाभारत में जो लिखा है अब तुम उसको पीठ कर सकते हो।

1157- पीठ देकर बैठना = पीछे मुड़कर बैठना।

कोई कोई संन्यासी तो स्त्री को पीठ देकर बैठते हैं।

1158- पीन = मीठे स्वभाव वाला

बेहद का बाप है पीन।

1159-पूंजी = मूलधन, संचित धन। वह धन जिसका निवेश किया जा सके।

1160- पुच्छल तारे = एक विशेष प्रकार के तारे का नाम। जिसके पीछे गैस की पूँछ सी लगी प्रतीत होती है, हर बात में पूंछने की पूंछ वाले अर्थात आदत वाले।

हर बात में, हर कार्य में “यह क्यों”, “यह क्या” - यह पूछने की पूँछ वाले अर्थात क्केश्चन मार्क करने वाले पुच्छल तारे हैं।

1161- पुखराज परी= एक परी का नाम, पुखराज परी ने एक विकारी को इन्द्र सभा में ले आयी थी।

सब दु:खी हैं। माताओं की पुकार सुनकर बाप आते हैं। माताओं को बहुत खबरदार रहना चाहिए। नाम भी माताओं का है – पुखराज परी,नीलम परी।इन्द्र सभा में कोई छिपाकर ले आई तो इन्द्रसभा में बास आने लगी।

1162- पारस = दिव्य , स्पर्श मणि

वह पत्थर जिस लोहे से स्पर्श करने पर लोहा भी पारस बन जाता है। वास्तव में पारस बनाने वाला तो बाप है।

1163- पिऊ = माशूक; शिव बाबा; यज्ञ की शुरूआत में प्यार से शिव बाबा को पिऊ कह बुलाते थे।

1164- पारावर = अन्त, सीमा

1165- पिछाड़ी = अन्तिम समय में,पीछे।

यह तो गया हुआ है पिछड़ी में साधु- सन्यासी और राजायें आएंगे।

1166- पित्र = मृत पूर्वज, आत्मा महात्मा जो शरीर छोड़ दूसरा शरीर लेती है।

भारत में हर वर्ष पित्र खिलाने की रस्म चली आई है।

1167-पुरूषोत्तम मास =पुरुषोत्तम मास तीन साल में एक बार आता है। भक्तों का ये मानना है कि इसे स्वयं भगवान ने अपने नाम से जोड़ा था। यह मास धर्म और पुण्य कार्य करने के लिए सर्वोत्तम होता है क्योंकि इस माह में पूजन-पाठ करने से अधिक पुण्य मिलता है।

.. जैसे मनुष्य पुरुषोत्तम मास में बहुत दान पुण्य करते हैं, ऐसे इस पुरुषोत्तम संगमयुग में तुम्हें ज्ञान रत्नों का दान करना है। ...

1168-पुष्कर= पुष्कर (जिसे जगतपिता ब्रह्मा मंदिर के नाम से भी जाना जाता है) भारत के राजस्थान राज्य में पुष्कर में स्थित एक हिंदू मंदिर है, जो पवित्र पुष्कर झील के करीब है, जिससे इसकी कथा का एक अमिट संबंध है।

जगत अम्बा मुख्य है ना। उनका देखो कितना प्रभाव है। ब्रह्मा का इतना नहीं है। सिर्फ पुश्कर में मन्दिर है।

1169-पेट को पट्टी बांधकर देना = भूखे रहकर के भी शिव बाबा को याद करना।

1170-पेट पीठ से लगना = गरीब होना।

दिन प्रतिदिन साहूकार भी रंक होते जायेंगे, पेट पीठ से लग जायेगा। ऐसी आफकतें आनी हैं, मूसलाधार बरसात पड़ेगी ...

1171-पेशगीर = विस्तार,फैलाव।

भक्ति का पेशगीर कितना बड़ा है।

1172- पैगाम = संदेश

बाप कहते हैं मेरा एक एक बच्चा पैगाम देने वाला पैगम्बर है। पैगाम तो देते हो ना!

1173-पोटरी = सचिव

1174-पोलमपोल = निस्सार ,खोखला।

1175-पौढ़ी= सीढ़ी; कहावत; सूक्तियां

इन लक्ष्मी नारायण का राज्य था फिर पुनर्जन्म लेते हो । एक एक जन्म एक एक पौढ़ी है। .. * ... सच के ऊपर भी एक पौढ़ी है - सच खाना, सच पहनना। ...

1176-पूतना = पूतना कंस के अधीन काम करने वाली एक महिला दैत्य थी । कंस ने पूतना को कृष्ण को मारने के लिए गोकुल भेजा । यह जानकर बालक श्री कृष्ण ने पूतना का वध कर दिया ।

1177-प्रज्ज्वलित= जलता हुआ।

विनाश सामने खड़ा है। ज्ञान यज्ञ से यह विनाश ज्वाला प्रकट हुई है।

1178-प्रश्नचित्त = प्रश्नों से भरा हुआ मन।

प्रश्नचित्त हलचल बुद्धि है ,इसलिए प्रश्न का चिन्ह भी टेढ़ा है।

1179-प्रायः लोप = नाश, किसी चीज के अस्तित्व की समाप्ति।

यह तो कोई समझते ही नहीं कि हम आदि सनातन देवी-देवता धर्म के हैं। बाप कहते हैं यह धर्म जब प्राय: लोप हो जाता है तो मैं आकर फिर .....

1180-फजीलत = सभ्यता,महत्ता।

अगर कभी कोई भूल हो जाती है तो बाप से क्षमा मांगने की भी फ़ज़ीलत चाहिए ।बाप को कहना चाहिए आई एम सॉरी।

1181-फकीर = शुद्ध गर्व,नशा

1182-फथकाना = दुःखी करना, व्याकुल करना

हमको बाप को याद करना है इसमें ही माया फथकाती है।

1183-फरमानबरदार = आज्ञाकारी

सच्चाई से बाप की सर्विस में लग जाना है । पूरा वफादार ,फरमानबरदार बनना है ।

1184-फरहत = आनन्द, प्रसन्नता।

सतयुग में गायें ऐसी होती हैं , बात मत पूछो। देखने से ही फरहत आ जाती है ।

1185-फारकती = भागना

जो यहाँ आकर , मेरा बनकर मुझे फारकती दे देते हैं , मेरी निंदा कराते हैं , उनके लिए फिर ट्रिब्युनल बैठती है । ...

1186-फिरंगी= अंग्रेज, विदेशी

1187-फुरना = चिन्ता

आत्मा को फुरना लगा हुआ है हमने 84 जन्म भोगे हैं ।अब बाप को याद करना है, तब विकर्म विनाश होंगे ..

1188-फ़रमान= आज्ञा

कर्मेन्द्रियों से कोई विकर्म न हो, सदा बाप के फरमान पर चलते रहो ...

1189-फलक =शुद्ध गर्व ,नशा

1190-फारिग = दूर , मुक्त

अपनी बुद्धि को ज्ञान मंथन में बिजी रखो तो सब फिकरातों से फारिग हो जायेंगे, सदा खुशी बनी रहेगी ...

1191-फ़िदा= न्यौछावर होना।

शमा पर जो फिदा हो चुके वह स्वयं भी शमा के समान हो गये ।समा गये तो समान हो गये । ...

1192-फ्राकदिल = उदारचित्त

... तुम चावल मुट्टी देकर विश्व का मालिक बनते तो तुम्हें कितना फ्राकदिल होना चाहिए। मैंने बाबा को दिया, यह औख्याल भी कभी नहीं आना चाहिए ...

1193-बाह्यमुखी = दुनियावी बातों पर आसक्ति दिखाने वाला।

1194-बंधायमान = बंधा हुआ

हर 5 हज़ार वर्ष बाद मुझे आना पड़ता है।ड्रामा में मै बंधायमान हूँ । आकर तुम बच्चों को बहुत सहज याद की यात्रा बताता हू...

1195-बड़ का झाड़ = बरगद का पेड़

1196-बख्तावर = सौभाग्यशाली, ऊंची किस्मत वाले।

1197-बट्टा लगाना = कलंक लगाना, निन्दा करना,बदनाम करना।

1198-बदफजीलत = असभ्य।

.. खान-पान, चलन में फजीलत चाहिए।पतित मनुष्यों को बदफजीलत कहेंगे। देवतायें फजीलत (मैनर्स) वाले हैं, तब तो

उन्हों का गायन है।

1199-बरक्कत = बढ़ोत्तरी, वृद्धि, फायदा

मेरापन लाया तो भंडारा या भंडारी में बरक्कत नहीं होगी।

1200-बाजू = समीप ।

1201-बाबुरीनाथ = मुंबई में स्थित शिवजी का एक मंदिर,कांटों को फूल बनाने वाला।

बाम्बे में बाबुरीनाथ का भी मन्दिर है। अब बबुल कहा जाता है काँटों को। बाबुरीनाथ नाम क्यों रखा है? यह कोई समझते नहीं हैं।...

1202-बाजोली= उलटफेर

1203-बाबुल = पिता

... हम पढ़कर पहले बाबुल के पास जायेंगे फिर अपनी-अपनी पढ़ाई अनुसार जाकर नई दुनिया में पद पायेंगे।...

1204-बेगमपुर का बादशाह= चिन्तारहित राज्य का चक्रवर्ती राजा

1205-बुत = पुतला, मूर्ति, चित्र।

... वहां रावण का बुत बनाकर जलाते नहीं। बुत कड़े दुश्मन का बनाया जाता है।...

1206-बेअदब = अशिष्ट, असभ्य।

1207-भंभोर = दुनिया।

भंभोर को आग तो लगनी ही है। पुरानी दुनिया सारी खलास हो नई बनेगी ...

1208-भण्डारा = रसोईघर

1209-भंभट = विस्फोट होना।

... तुम बच्चे समझते हो कभी भी लड़ाई लग सकती है, थोड़ी चिनगारी लगी तो भंभट मच जाने में देरी नहीं लगेगी।...

1210-भट्ठी = गहन तपस्या

1211-भरी उठायेंगे= झुकना,सेवा करना।

...मेहनत करते हैं कि बच्चे स्वर्ग में चल ऊंच पद पायें । नहीं तो पढ़े लिखे के आगे जाकर भरी उठायेंगे।..

1212-भान = एहसास, ज्ञान।

1213-भस्मासुर = एक राक्षस का नाम।

भस्मासुर अपनी तपस्या से भगवान शिव से एक वरदान प्राप्त करता है।और अपनी विकारी दृष्टि के कारण अपने सिर पर हाथ रखकर खुद को जला लेता है।

1214- भासना = अनुभूति,आभास होना।

1215- भीती = आशा,आकर्षण।

... याद की यात्रा से ही ताकत मिलती है और विकर्म विनाश होते हैं। तो यह भी एक भीती लिख देनी चाहिए। ...

1216= भुट्टू = गंवार, मूर्ख, बुद्धू

1217- भूं भूं करना = लगे रहना

1218- भाड़ा = किराया , फल

बाबा कहते- नौधा भक्ति करने से भावना का भाड़ा दे देते हैं।

1219- भूगरे = चने

शिवबाबा पर भल शरीर भी होम देते हैं तो भी मिलते भूगरे हैं, वर्सा तो मिल न सके।...

1220- भोगना = अनुभव करना,कष्ट,पीड़ा

हरेक के सिर पर अनेक जन्मों के विकर्मों का बोझ है, हिसाब- किताब की भोगना है, जिसे योगबल से ही चुक्तू करना है ...

1221- मखमल = मुलायम और कोमल कपड़ा

1222- मगज = दिमाग

1223- मगरूर = घमंडी,जिसे गरूर हो।

.... मगरूर बच्चे देह-अभिमान में आकर मुरली को डोन्ट-केयर करते है, कहावत है ना-चूहे को हल्दी की गांठ मिली, समझा मै

पंसारी हूँ...।

1224- मणका = माला का दाना

कई बच्चे लिखते हैं कि बाबा हम आपकी माला का मणका जरूर बनेंगे।...

1225- मदार = आधार

सारा मदार पवित्रता पर है,इसलिए सम्भाल करनी है कि पतित के अंग से अंग न लगे। ...

1226- मदोगरी =आमदनी

जिज्ञासु और ज्यादा बढ़ेगे इसकी चिंता नहीं करो। मदोगरी भी बहुत बढ़ेगी। इसकी भी चिंता नहीं करो ...

1227- मध्याजीभव = लक्ष्य और वर्से को याद करना

1228- मनोमय = मन से गढ़ा हुआ; अद्भुत

स्टोरी हमेशा मनोमय बनाते हैं, जैसे बाइसकोप, नाटक आदि बनाते हैं। श्रीमद् भगवत गीता ही है सच्ची। ...

1229- मरजीवा = बाहरी दुनिया से मरकर ईश्वरीय परिवार में जन्म लेना।

मरजीवा बने हो तो सब कुछ भूल जाओ, एक बाप जो सुनाते हैं, वही सुनो और बाप को याद करो, तुम्हीं संग बैढूँ...

1230 - मर्तबा= पद

पढ़ाई से मर्तबा मिलता है,खेलकूद से नहीं मिलता।

1231- मलूक= फरिश्ता,शिकारी

... हम मलूक बन अपने माशूक के साथ घर जायेंगे, बाकी सब खलास होना है।...

1232- मलेच्छ = नीच, पापी।

1233-मलूका = शिकारी

पिछाड़ी में भी बहुत साक्षात्कार करेंगे, मिरूआ मौत मलूका शिकार..... इतने ढेर मनुष्य हैं, वह सब शरीर छोड़ देंगे। ...

1234- मर्तबा = पद

पढ़ाई से मरतबा मिलता है। खेल कूद से मर्तबा नहीं मिलता है। खेल आदि की डिपार्टमेन्ट अलग होती है। ...

1235- मस= स्याही

1236- मस्तक मणि = शिरोमणि, सर्वश्रेष्ठ।

ऐसे मस्तक मणि हर संकल्प में, हर कर्म में, अपने को विश्व का आधार और उद्धारमूर्त्त समझ कर हर कदम उठाते हैं।

1237- मांझी = नाव चलाने वाला।

इस दुःखधाम में सबकी नईया अटक पड़ी है तब तो कहते हैं। नईया मेरी पार लगाओ। हे मांझी। सबकी नईयां फंसी पड़ी है।

1238- मांडवे = रंगमंच

1239- माड़ा = मकान का छत, मंजिल

1240-मामेकम् = मुझ एक को ही याद करो।

... शिवबाबा कहते हैं मामेकम् याद करो तो तुम स्वर्ग का मालिक बनेंगे। ...

1241-माल मिलकियत = धन सम्पत्ति

1242-माशूक = प्रेमी

... बाप अथवा मालिक एक ही परमपिता परमात्मा है, वह सब आशिकों का एक ही माशूक है।

1243-मासी का घर नहीं= आसान नहीं।

1244-मिचनू = छोटा बच्चा

अभी अभी बुजर्ग और अभी अभी मिचनू किशोर । हॉ जी करने में मिचनू बन जाओ और सेवा में बुजुर्ग।...

1245-मिट्टी पलीत = अपवित्र,किसी की इज्जत उतारना

1246-मिथ्या = झूठ,असत्य,कल्पित

1247-मिरूआ = जानवर

1248-मीरा= मीरा भगवान श्रीकृष्ण की बहुत बड़ी भक्तिन थीं। वह भक्तों में अग्रसर थी।एक महान भक्तिन जिसने खुद को भगवान के शुद्ध प्रेम में डुबो कर सभी

परिस्थितियों को पार कर लिया था।

1249-मुंह काला करना= अपमानित करना,बदनाम करना।

अच्छे-अच्छे फर्टक्कास सर्विस करने वाले, सेन्टर चलाने वाले को भी माया थप्पड़ मार देती है लिखते हैं बाबा शादी कर मुँह काला कर दिया। ...

1250- मुंझारा,मूंझना = उलझन, गड़बड़ी।

1251-मुआफिक = समान, सदृश्य, अनुसार।

... हमारा बाबा आया हुआ है।कल्प पहले मुआफिक फिर से हमको राजयोग सिखलाकर पवित्र बनाए साथ ले जायेंगे।..

1252-मुकरर= नियुक्त।

सरस्वती है मुख्य, इसलिए सम्भालने के लिए वह मुकरर की जाती है।...

1253-मंत्र- जंत्र = किसी कार्य को सिद्ध करने की युक्ति; उपाय; कर्मकांड ,एक पारंपरिक विद्या।

1254-मुरब्बी बच्चा = अति प्यारा बच्चा।

1255-मुराद = इच्छा, अभिलाषा, मनोकामना।

1256-मुरलीधर= ज्ञान मुरली बजाने वाला।

...मुरलियाँ तो बहुत सुनीं अब ऐसे मुरलीधर बनो जो माया मुरली के आगे न्योछावर (सरेन्डर) हो जाए। ....

1257-महमूद गजनवी= महमूद ग़ज़नवी मध्य अफ़ग़ानिस्तान में केन्द्रित गज़नवी वंश का एक महत्वपूर्ण शासक था।उसने 17 बार

भारत पर आक्रमण किया और यहां की अपार सम्पत्ति को वह लूट कर ग़ज़नी ले गया था।

1258-मुहलरा = सिक्का,मुहर

1259-मूढ़मती = मन्दबुद्धि, दुर्बुद्धि

बाप कहते हैं मूढ़मती जो होंगे वह देह को याद करते रहेंगे, देह से प्यार रखेंगे।...

1260-मूत पलीती = अपवित्र,गन्दे।

भगवान् को बुलाते हैं आकर मूत पलीती कपड़ा हम आत्माओं का धुलाई करो। हम सब आत्माओं के बाबा, आकर हमारा

कपड़ा साफ करो।...

1261-मूवी= मौन का अभिनय; बिना कुछ बोले अभिनय या इशारों के जरिये पूरी बात कह देने की कला।

सूक्ष्म वतन का सिर्फ साक्षात्कार होता है। सूक्ष्मवतन में सिर्फ है मूवी।

1262-मेहर = दया

1263-मोचरा = सजा

मोचरा खाकर फिर कुछ थोड़ा बहुत पद पाना वह क्या काम का। धर्मराज का मोचरा न खायें, बेइज्जती न हो- यह पुरूषार्थ करना है।...

1264-मोचरा मानी= सजा खाकर पद पाना।

1265-मोटे रूप से = साधारण या सामान्य रूप से।

टीचर्स को अपने अन्दर महीन रूप से चैकिंग करनी चाहिए।मोटे रूप से नहीं बल्कि महीन से।

1266-मोतीलाल= मोतीलाल नेहरू प्रयागराज के एक प्रसिद्ध अधिवक्ता एवं ब्रिटिशकालीन राजनेता थे। वे भारत के प्रथम प्रधानमन्त्री जवाहरलाल नेहरू के पिता थे। वे भारत के स्वतन्त्रता संग्राम के आरम्भिक कार्यकर्ताओं में से थे।

1267-मोहताज = परवश, पराधीन

1268-मोहर = सिक्का,ठप्पा, अशरफी

1269-मौला मस्ताने = ईश्वर की याद के नशे में चूर।

... हम मौला के मस्ताने हैं । तुम जानते हो मौला से हमको क्या प्राप्त हो रहा है।.

1270-यवन = मुसलमान,परदेशी

बाकी देवताओं, असुरों की लड़ाई नहीं लगी। यह तो यवन और कौरवों की है। उनका बाम छूटेगा और इनकी लड़ाई शुरू होगी ..

1271-या हुसैन चिल्लाना = हे खुदा, हे ईश्वर करके चिल्लाना

स्त्री का तो पति गया, बस -या हुसैन, या हुसैन करती रहती है। पुरुषों के लिए तो एक जुत्ती गई तो और कर लेंगे। ...

1272-युक्तियुक्त= तर्कसंगत,उचित।

... जो ज्ञानी और योगी तू आत्मा हैं उनके हर कर्म स्वत: युक्तियुक्त होते हैं। युक्तियुक्त

अर्थात् सदा यथार्थ श्रेष्ठ कर्म।..

1273-युगल = जोडा,पति-पत्नी

1274-योनी = गर्भ

1275- रंक से राव बनते हैं = गरीब से धनवान बनते हैं।

... तुम जानते हो वही बाबा कल्प-कल्प आकर हमको रंक से राव बनाते हैं। भारत अब रंक है ना ...

1276-रंज = नाराज, दु:ख

-.. बुद्धि में अगर यह ज्ञान रहे कि अभी दुनिया को नीचे जाना ही है, इसमें नुकसान ही होना है, तो कभी रंज नहीं होंगे। सदा खुशी रहेगी। ...

1277- रग = मोह,नस, स्वभाव बाबा कहे बच्चे- कोई भी चीज़ लोभ के वश अपने पास एक्स्ट्रा नहीं रखनी है। एक्स्ट्रा रखेंगे तो उसमें रग जायेगी। ...

1278- रग टूटना = मोह निकल जाना

1279-रजवाड़े = मध्य-युग तथा ब्रिटिश भारत में देशी रिया्सत। रियासत का मालिक राजा होता था।

... वहाँ दरबार बड़ी बनती है।राजे रजवाड़े आपस में मिलते होंगे। उसको पाण्डव सभा नहीं कहेंगे ...

1280-रड़ी मारना = दुख में चिल्लाना, जोर से कहना।

1281-रद्धी =बेकार की या किसी काम में न आनेवाली वस्तु; खराब।

रिकार्ड में जरा भी नीचे-ऊपर हो जाता है तो वह रिकार्ड हमेशा के लिये रद्धी हो जाता है। तुम्हारा भी 21 जन्मों के लिये सतयुगी राज-धानी का जो रिकार्ड भरता

है तो वह रद्द न हो जाये ...

1282-रत्नागर = रत्नों का भंडार

गायन है बाबा रत्नागर है, सौदागर है। अविनाशी ज्ञान रत्नों का सौदा करता है।

1283-रफडफ = कठोरता

किसी से रफडफ बात नहीं करनी चाहिए। कोई गुस्से से बात करें तो उससे किनारा कर लेना है।

1284-रमजबाजी = चतुराई से,युक्ति,तरीका।

1285-रमण करना = ज्ञान का मनन करते हुए आनन्द लेना; लीन होना; तल्लीन होना।

सवेरे उठकर ऐसे ऐसे ज्ञान की बातों में रमण करना चाहिए।

1286- रमणीक = सुन्दर या मनोहर

बाप की याद में रह सदा हर्षित रहो। याद में रहने वाले बहुत रमणीक और मीठे होंगे।

1287-रमज़ या रम्ज = युक्ति

... बाबा राझू-रमजबज है, तो रमज बताते हैं- ऐसे-ऐसे करो।

1288-रमताजोगी = ज्ञान की मस्ती में रहने वाला, चलता फिरता योगी।

1289-रसातल= अगाध; बहुत ज्यादा नीचे गिरना जहाँ से उबरना मुश्किल हो, पृथ्वी का छठा तल।

... अपना पाप लिख दो। नहीं तो वृद्धि को पाते रहेंगे और रसातल में चले जायेंगे। आते हैं कुछ लेने लिए और ही कान कटा लेते ..

1290-रमत गमत = अजीब विचित्र

... हम उनके बाप बन ही नहीं सकते। उनको बच्चा कह नहीं सकते। हाँ यह तो ज्ञान की रमत-गमत होती है जो कहते हैं।

शिव बालक को वारिस बनाते हैं।

1291-रस्साकसी = खींचतान,कशमकश।

1292-रहबर = मार्गदर्शक, राह दिखाने वाला

.. अभी तो चाहते हैं कि जहाँ अपना रहबर वहीं हम राही भी चलें ।
तुम लोगों की चलन वाणी से भी ज्यादा सर्विस करेगी ...

1293-रहमदिल = दयावान

... सब भक्तियाँ रावण के पहरे में कैद हैं तो बाप को जरूर तरस पड़ेगा ना। बाप रहमदिल है।

1294-रहीखुही = बची हुई

इस समय तुम्हारे कर्मों का हिसाब-किताब चुक्तू होता है। रही-खुही बीमारी आदि सब बाहर निकलेगी।....

1295- रांझू रमज़ूबाज = युक्ति बतानेवाला; युक्ति से चलनेवाला और चलानेवाले बाप को कहा जाता है रांझू रमज़ूबाज। ...

1296-रहवासी = रहने वाला, निवासी

1297-राजऋषि = बापदादा अपने ब्राह्मण बच्चों को राजऋषि का टाईटल देते हैं यानि राजा जैसा सर्व अधिकारी भी और ऋषि समान बेहद के वैराग्य वृत्ति रखने वाले।

1298-राजेन्द्र प्रसाद= भारत के प्रथम राष्ट्रपति।

राजेन्द्र प्रसाद के पास बच्चियाँ जाती थी, कहती थी बेहद के बाप को जानो तो तुम हीरे तुल्य बन जायेंगे। 7 रोज़ का कोर्स करो ...

1299-राणा फैमिली= राणा राजवंश ने 1846 से 1951 तक नेपाल साम्राज्य पर शासन किया। आज राणा परिवार नेपाली समाज में उच्च वर्ग का कुलीन परिवार है।

नेपाल में बाबा जाते थे तो वहाँ राणा फैमिली की सभा लगती थी। बड़े ताज वाले राणे बैठते थे ...

1300-राव = राजा

अविनाशी ज्ञान रत्न तुम्हें राव बनाते हैं।

1301-रास या रासलीला= एक नाच जिसमें चक्कर बांधकर नाचते हैं।

झूले में झूलते रहो। सर्व से रास मिलाते हुए,खुशी की रास करते रहो।

1302-रिंचक = थोड़ा

... रिंचक मात्र भी अपवित्रता का अंश न रहे।

हम आत्मा भाई-भाई हैं... यह अभ्यास करना है।

1303-रिमझिम= प्रकाश, चमक, आकर्षण।

... जैसे जितना घोर अन्थियारा होता है तो सितारों की रिमझिम ज्यादा स्पष्ट दिखाई देती है।

1304-रूहरिहान = रूह से रूह अर्थात आत्मा से आत्मा या आत्मा से परमात्मा की आत्मिक बातचीत।

1305-रामतीर्थ = ये वेदांत की जीती जागती मूर्ति थे। रामतीर्थ के लिए हर प्रत्यक्ष वस्तु ईश्वर का प्रतिबिंब थी। अपने छोटे से जीवनकाल में उन्होंने एक महान् समाज सुधारक, एक ओजस्वी वक्ता, एक श्रेष्ठ लेखक, एक तेजोमय संन्यासी और एक उच्च राष्ट्रवादी का दर्जा पाया।

1306-रीस करना = बराबरी करना

... ऐसे बहुत हैं जो उल्टी सुल्टी भूलें करते हैं, चुगली करना, रीस करना, यह भी विकर्म है ना। ...

1307-रूण्य का पानी = मरुस्थल का पानी, मृगतृष्णा अर्थात जल की वह मिथ्या प्रतीति जो कभी कभी ऊपर मैदानों में भी कड़ी धूप पड़ने के समय होती है।

1308-रूलना= आवारा फिरना

... यह भी घूमना फिरना रुलना हुआ ना। भक्ति मार्ग में रुलना पिटना बहुत होता है क्योंकि अन्धियारा मार्ग है ना। ..

1309- रूण्डमाला = वो माला जिसमें चेहरे होते हैं; बाबा वैजयन्ती माला को ही रुण्ड माला कहते हैं।

1310-रूप बसन्त = दो राजकुमारों का नाम; रूप माना योगी, रूप अर्थात याद बल द्वारा,श्रेष्ठ संकल्प के बल द्वारा विहंग मार्ग की सर्विस करना और बसन्त माना ज्ञान की वर्षा करना, वाणी में आना - बसन्त रूप से एक समय पर अनेक आत्माओं को सन्देश देने का कार्य करना।

1311-रूबरू = सम्मुख, आमने-सामने।

1312-रूसतम = पहलवान,वीर।

माया तुम्हें देह-अभिमान में लाती रहेगी, रूसतम से रूसतम होकर लड़ेगी, इसमें मूंझना नहीं।

1313-रूसना= रूठ जाना,उदास होना।

रूसना, रोना यह सब आसुरी संस्कार तुम बच्चों में नहीं होने चाहिए।...

1314-रूहाब = आत्मिक शक्ति, आत्मिक नशा।

1315-रेगड़ी पहनना = रेंगना, हाथों पैरों के बल खिसकते हुए आगे बढ़ना।

... समझते है - कलियुग तो अभी छोटा बच्चा, रेगड़ी पहन रहा है। तो मनुष्य और ही नींद में सोये हुए हैं।

1316-रेज़गारी= विस्तार

1317-रेढ़ी = फेरीवालों की गाड़ी।

1318-रैयत = प्रजा

... यथा राजा-रानी माना गवर्मेन्ट तथा प्रजा माना रैयत। तो बच्चों को समझाया गया है कि भारत सदा श्रेष्ठाचारी था, स्वर्ग था ..

1319-रोला = विघ्न, हल्ला,रूकावट।

ईश्वर को सर्वव्यापी कह कितना रोला कर दिया है।

1320- लंगर = लंगर सिखों के गुरुद्वारों में प्रदान किए जाने वाले नि:शुल्क, शाकाहारी भोजन को कहते हैं। लंगर, सभी लोगों के लिये खुला होता है चाहे वे सिख हो या नहीं।

1321-लंबी खजूर = असम्भव,अप्राप्य वस्तु।

बाप अपना बन जाए व अपना बना दे, इसको असम्भव समझते हैं। वह लम्बी खजूर कहकर दिलशिकस्त हो जाते हैं।

1322-ल़कब = उपाधि, खिताब

राजा-महाराजा का लकब यहाँ भी मिलता है। पद दूसरा मिलता है, परन्तु नाम वह चलता रहता है, बदल नहीं सकता। ...

1322-ल़कब = उपाधि, खिताब

राजा-महाराजा का लकब यहाँ भी मिलता है। पद दूसरा मिलता है, परन्तु नाम वह चलता रहता है, बदल नहीं सकता। ...

1323-लगाम = काबू रखना, नियंत्रण, अंकुश।

... लगाम ढीला होने से मन चंचलता जरूर करेगा। तो श्रीमत का लगाम सदा अपने अन्दर..

1324-लगे बच्चे = सौतेले बच्चे।

लगे बच्चे - मुख से सिर्फ बाबा मम्मा कहते लेकिन श्रीमत पर पूरा नहीं चल सकते । पूरा-पूरा बलिहार नहीं जाते। ....

1325-लटक पड़ना= मोहित होकर नाचना झूलना।

1326-लथेड़ना = कुश्ती में हराना।

... फिर माया ऐसी प्रबल है जो हमे लथेड़ कर श्रृंगार खराब कर देती हैं। सबसे बड़ी धूल है विकार की। ...

1327-लफड़े = उलझन,झमेले, परेशानी।

जिनको लफड़े ज्यादा है उन्हें जोग लग नहीं सकता है।

1328- लबाड़/ लबाड़ी/ लबार = बहुत बातें करने वाला, गप्पी।

हम इस समय उठता हूँ, इतना याद करता हूँ। कुछ समाचार नहीं देते। ज्ञान की बहुत लबाड़ मारते हैं। योग है नहीं।.

1329-लवलीन = प्रेम या भक्त में लीन, निमग्न

... अगर स्वयं बाप के साथ लवलीन रहेंगे तो औरों को भी सहज ही आप-समान व बाप-समान बना सकेंगे। ...

1330-लश्कर = सेना,फौज।

1331-लाख/ लाखा भवन= लाखा भवन

(लक्षागूह) एक भवन था। जिसे दुर्योधन ने घर में रहने पांडव आएं तो चुपके से इसमें आग लगा कर उन्हें मारा जाये। पांडवों के विरुद्ध एक षड्यंत्र के तहत उनके ठहरने के लिए बनाया था। इसे लाख से निर्मित किया गया था ताकि पांडव जब यहां जा सके। पर पांडव सकुशल इस भवन से बच निकले।

1332-लाही चाढ़ी = उतार- चढ़ाव

. मनुष्य कहेंगे इनको ईश्वर ऐसी मत देते हैं जो आसुरी चलन दिखाते हैं! लाही-चाढ़ी भी होता है ना। बच्चे हार भी खाते हैं ...

1333-लून= नमक

...मैं जानता हूँ- गीता में आटे में लून मिसल कुछ है। वही गीता का एपीसोड, वही महाभारत की लड़ाई, वही मनमनाभव-मध्याजी भव का ज्ञान है ...

1334-लूनपानी = लड़ना,खारा पानी।

आपस में बहुत-बहुत रूहानी स्नेह से चलना है, कभी भी लूनपानी नहीं होना है । बाबा का सपूत बच्चा बनना है ...

1335-लेवता = लेने वाला

याद में रहने वाले बच्चे सदा ही दाता होंगे,

लेवता नहीं। देवता माना देने वाला ...

1336-लैला मजनू = अरब के प्रेमी युगल लैला (प्रेमिका) मजनू (प्रेमी) अपने अमर प्रेम से दुनिया में अमर रह गये।

1337-लॉ मुजीब = नियमानुसार, कायदा अनुसार

ऐसे ही निमित्त नहीं बनाया है, सोच-समझ के ड्रामा के लॉ-मुजीब निमित्त बनाया गया।

1338-लोथ = मुर्दा

आत्मा शरीर से निकल जाती तो जैसे एक लोथ पड़ा रहता है आत्मा को इन आंखों से देख नहीं सकते ...

1339-लोप = गायब,मुक्त

... अपने धर्म को भी नहीं जानते। यह है भावी। जब लोप हो जाए तब तो बाप आकर फिर से स्थापना करे। अब वह धर्म प्राय:लोप है। ...

1340-लोरी = बच्चों को सुलाने का गीत।

1341-बक्खर/बखर= सामान,सामाग्री,माल।

1342-वनवाह = जंगल में निवास

1343-वन्नी = पत्नी

तब ब्रह्मा को खुद कहते हैं तुम हमारा बच्चा भी हो, वन्नी भी हो। बरोबर बाप इन द्वारा एडाप्ट करते।

1344- वरसी / बरसी =पुण्य तिथि; मृत

व्यक्ति का वार्षिक श्राद्ध;

1345-वल्द = औलाद, बेटा, पुत्र

... ब्रह्मा को भी शिवबाबा एडाप्ट करते हैं। कहते हैं तुम मेरे हो। यह भी कहता है बाबा मैं आपका हूँ, तो ब्रह्मा वल्द शिव हो गया।

1346-वल वल = बार-बार।

अन्तकाल जो शिवबाबा सिमरे..... सो फिर नारायण योनि वल-वल उतरे,

1347-बल्लभ = अत्यन्त प्रिय, प्रियतम,प्यारा।

1348-वहम = शक,संदेह

सदा दिलतरख्तनशीन बनो, रहमदिल बनो। अहम भाव और वहम भाव को समाप्त करो।...

1349- वाढ़े = बढ़ई, लकड़ी का कार्य करने वाला।

1350- वानप्रस्थ= वानप्रस्थ चार आश्रमों में तीसरा आश्रम और हिंदू धार्मिक संस्कारों में चौदहवां संस्कार है।जिसमें मनुष्य वानप्रस्थ वह अवस्था पारिवारिक दायित्वों से मुक्त होकर अपने जीवन को समाज के प्रति समर्पित करने का संकल्प लेता है।शास्त्रों के अनुसार अपने से तीसरी पीढी यानि दादा बनने के पश्चात व्यक्ति पितृ ऋण से मुक्त हो जाता है।

1351- वाम मार्ग = उल्टा मार्ग

... द्वापर में वाम मार्ग शुरू होता है फिर हर एक के कर्मों पर मदार है ...

1352- वामन = बौना, छोटा, विष्णु का एक अवतार ।वामन ने राजा बलि से तीन पग भूमि मांगी थी क्योंकि राजा बलि सौवाँ अश्वमेध यज्ञ कर रहे थे और उसके पूर्ण होने के बाद वह इन्द्र के सिंहासन के अधिकारी बन जाते,इसलिये वामन भगवान ने राजा बलि से तीन पग भूमि मांगी ताकि वह अपना यज्ञ पूरा न कर सके और इन्द्र का सिंहासन सुरक्षित रह सके।

1353- वाराह - सूअर, शास्त्रों के अनुसार भगवान विष्णु का मानवीय शरीर में धरती पर पहला अवतार था। इस अवतार में भगवान विष्णु ने शरीर मानवीय लिया था, जबकि उनका मुख वराह के समान था। इसीलिए इस अवतार को वराह अवतार कहा गया। विष्णु जी ने यह अवतार दैत्य हिरण्याक्ष का वध करने के लिए लिया था।

1354- वारिस = उत्तराधिकारी

1355- वासधूप = धूप; देव पूजन और वायु शुद्धि आदि के लिए उक्त पदार्थों को जलाने पर निकलने वाला धुँआ।

रोज अमृतवेले ज्ञान और योग की वासधूप जगाओ तो विकारों रूपी भूत भाग जायेंगे।

1356- विदीर्ण = फटा हुआ

साहूकारों का हृदय विदीर्ण होता है। बाबा का नाम ही है गरीब निवाज।

1357- विल कराना = वसीयतनामा द्वारा अपना धन आदि दूसरों को देना।

जैसे बाप ने पूरा ही अपने को विल किया, वैसे आप लोगों की जो स्मृति है उसको भी पूरा विल करना है।

1358- विलाप = रोना , दुःख प्रकट करना।

1359 - विषय सागर = सांसारिक विषय वासनाओं का आकर्षण।

1360- व्यभिचारी = जिस प्रकार विवाहित लोगों के मध्य में अपने पति या पत्नी के अतिरिक्त किसी अन्य के साथ किए जाने वाले सम्बन्ध को व्यभिचार कहते है, उसी प्रकार एक शिव बाबा के अतिरिक्त अन्य देवी देवताओं की आराधना पूजा को व्यभिचारी भक्ति कहा जाता है।

1361-शास्त्रार्थ= शास्त्र के ठीक अर्थ तक पहुँचने के लिए होनेवाला तर्क-वितर्क या विवाद।

1362-शंकराचार्य = शंकराचार्य सन्यास धर्म के स्थापक थे और अद्वैत मत के विश्वासी थै। लेकिन बाबा पहले पाठ में ही समझाते हैं कि आत्मा और परमात्मा अलग -अलग है।

1363-शडपंथ = बहुत किनारे,बहुत समीप।

तुम अभी बिल्कुल शडपंथ पर खड़े हो, तुम्हें अब इस पार से उस पार जाना है, घर जाने की तैयारी करनी है ...

1364-शनीचर की दशा= शनि की दशा ,दुर्दशा।

सीढ़ी उतरते आये, शनीचर की दशा हुई। इस समय सब पर राहू की दशा है...

1365-शब्क,शबक = पाठ।

तुम्हारा पहला-पहला शब्क है मैं आत्मा हूँ, शरीर नहीं, आत्म-अभिमानी होकर रहो तो बाप की याद रहेगी...

1366-शमशानी वैराग्य= क्षणिक वैराग्य जो श्मशान में मृत शरीरों को जलते हुए देखकर संसार की असारता के सम्बन्ध में मन में उत्पन्न होता है।

1367-शर्मबूटी = छुईमुई; लजावंती; एक छोटा काँटीला पौधा जिसको स्पर्श करने से उसके पत्ते सिकुड़ जाते हैं।

1368-शल = कभी, आश्चर्य व्यक्त करने के लिए सिंधी भाषा में इस शब्द का प्रयोग करते हैं।

1369-शादमाना = ठाठ बाठ से उत्सव मनाना; उत्साह दिलाने वाले उत्सव; खुशी; हर्ष।

1370-शादी में मनुष्य कितना शादमाना करते हैं, कर्जा लेकर भी शादी कराते हैं । एक तो कर्जा उठाते, दूसरा पतित बनते ...

1371- शिवोहम् = मैं शिव हूं।

आजकल तो अपने को ही शिवोहम् कह देते हैं। फिर कहते तुम परमात्मा के ही रूप हो,आत्मा सो परमात्मा।

1372-शिशुपाल = शिशुपाल कृष्ण की बुआ का लड़का था। श्रीकृष्ण ने कहा कि मैं इसके 100 अपराधों को क्षमा करने

का वचन देता हूं। कालांतर में शिशुपाल ने अनेक बार श्रीकृष्ण को अपमानित किया और उनको गाली दी, लेकिन श्रीकृष्ण ने उन्हें हर बार क्षमा कर दिया।श्रीकृष्ण को ललकारते हुए गाली दी, तब श्रीकृष्ण ने गरजते हुए कहा, 'बस शिशुपाल! मैंने तेरे एक सौ अपशब्दों को क्षमा करने की प्रतिज्ञा की थी। फिर अपने सुदर्शन चक्र से शिशुपाल का वध कर दिया।

1373-श्रवण कुमार= श्रवण कुमार एक पौराणिक चरित्र है। ऐसा माना जाता है कि श्रवण कुमार के माता-पिता अंधे थे। श्रवण कुमार अत्यंत श्रद्धापूर्वक उनकी सेवा करते थे। एक बार उनके माता-पिता की इच्छा तीर्थयात्रा करने की हुई। श्रवण कुमार ने कांवर बनाई और उसमें दोनों को बैठाकर कंधे पर उठाए हुए यात्रा करने लगे।

1374-संग्रहालय= वह स्थान जहां अनेक प्रकार की विशेष वस्तुओं का संग्रह किया जाए।

1375-संदली = गद्दी, आसन।

... यह भी पतित थे। यह तो बाबा का रथ है, तब यहाँ संदली पर बैठना पड़ता है। नहीं तो बाबा कहाँ बैठे ..

1376-सगीर = छोटा

.. कहते हैं हम पढ़ने नहीं देंगे।इस हालत में जब तक सगीर हैं।तो माँ-बाप का कहना मानना पड़े। हम ले नहीं सकते।...

1377-सज्जे = सज्जन,नेत्रवाले

... अन्धे और सज्जे कौन हैं -यह भी तुम जानते हो। अभी सारे सृष्टि के आदि-मध्य- अन्त को बाप द्वारा जाना है ...

1378-सर्प भी मरे लाठी न टूटे = सफलता भी प्राप्त हो और किसी को दुःख भी न मिले, ऐसी युक्ति से हर कर्म करना चाहिए।

1379-सावरकर = सावरकर भारत के क्रांतिकारी, स्वतंत्रता सेनानी, समाज सुधारक, इतिहासकार, राजनेता तथा विचारक थे। उनके समर्थक उन्हें वीर सम्बोधित करते हैं। सावरकर के नाम से हिन्दू राष्ट्रवाद की राजनीतिक विचारधारा 'हिन्दुत्व को विकसित करने का श्रेय दिया जाता है।

1380-साहेबजादे= भगवान के बच्चे, रईस के बच्चे, राजा के बच्चे।

तुम साहेबजादे सो शहजादे बनने वाले हो, तुम्हें किसी भी चीज़ की इच्छा नहीं रखनी है, किसी से कुछ भी मांगना नहीं है।

1381-सिजरे = वंशावली, वंश वृक्ष

... हम सब आत्मायें बच्चे शिवबाबा की माला हैं। जैसे सिजरा बनाते हैं।..

1382-सिर हथेली पर रखना= मरने के लिए तैयार हो जाना।

शिवबाबा आकर तुमको अपना बनाते हैं । कहते हैं - सिर हथेली पर रखकर बाप का बने हैं। उनके डायरेक्शन पर चलने के लिए। ..

1383-सिरकुल्हे = बच्चों को कंधे पर बैठाते हैं।

आप का बच्चों पर बहुत प्यार होता है। बच्चों को सिरकुल्हे पर बैठाते हैं।

1384- अंगना बच्चा= सदा खुशी में रहने वाले।बाबा की याद में सदा खुशी से नाचते रहने वाले।

1385-सीरान = सान, वह पत्थर जिस पर रगड़ कर धार तेज की जाती है

1386-सुख घनेरे = अपार सुख

... गाया जाता है तुम मात-पिता. अगर तुमको सुख घनेरे चाहिए तो गृहस्थ व्यवहार में रहते राजयोग सीखो।

1387-सुरजीत= जागृत

... कोई गिरेंगे तो कोई उठते वा सम्भलते रहेंगे । सुरजीत और मूर्छित होते रहेंगे । सुरजीत होने लिए यह संजीवनी बूटी है। ..

1388-सुहैज = मनोरंजन

1389-साबुत = दुरूस्त, स्थिर।

... वहाँ तो भल बूढ़ा हो जाए तो भी दांत आदि सभी साबुत रहते हैं।...

1390-सूपनखा = सूपनखा रावण की बहन थी। राम लक्ष्मण की सुंदरता पर मोहित सूर्पनखा ने उन्हें उससे शादी करने को कहा । उनके मना करने पर सूपनखा ने सीता पर

आक्रमण कर दिया।तब लक्ष्मण ने उसके नाक-कान काट दिए। बाबा सूर्पनखा का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि ऐसी भी स्त्रियां होती हैं।जिनके विकारों की इच्छा होती है।

1391-सूरदास= सूरदास हिन्दी के भक्तिकाल के महान कवि थे। हिन्दी साहित्य में भगवान श्रीकृष्ण के अनन्य उपासक और ब्रजभाषा के श्रेष्ठ कवि महात्मा सूरदास हिन्दी साहित्य के सूर्य माने जाते हैं।

1392-सूली से कांटा = सूली से यहाँ अभिप्राय भयंकर सजा या दंड से है। और शूल का अर्थ कांटा है। जब हम प्यारे बाबा की याद की यात्रा पर अग्रसर होते हैं, तो हमारे प्रारब्ध कर्मों द्वारा प्राप्त

होने वाले से अपार कठिन और कठोर दंड और सजा की पीड़ा होती है ।

1393-सेक = ताप,अग्नि

1394-सोझरा = प्रकाश

.. घर-घर में सोझरा हो जाता है। अभी घर -घर में अन्थियारा है अर्थात् आत्मा डिम हो गई है। ...

1395-स्थेरियम = स्थिरता

घर-घर में सोझरा हो जाता है। अभी घर-घर में अन्धियारा है। अर्थात् आत्मा डिम हो गई है।..

1396-स्वहेज = विधिपूर्वक मनोरंजन।

1397-हजूर = हुजूर,प्रभु।

1398-हट्टी = दुकान।

1399-हड्डी मेहनत= बहुत मेहनत

माया के तूफान भी बहुत आयेंगे। यह बहुत हड्डी मेहनत है। लक्ष्मी-नारायण बनना मासी का घर नहीं है ...

1400-हथियाला = बन्धन गांठ

.... विष की लेन-देन के लिए जो हथियाला बांधते थे वह बाप ने आकर अब कैन्सिल किया है।..

1401-हप करना= निगलना, कोई चीज मुंह में जल्दी से डालकर निगल लेना।

... यूँतो ज्ञान सागर को हप करना है। कोई तो सारा हप करते हैं, कोई तो बूँद लेते हैं फिर भी स्वर्ग में तो जायेंगे ...

1402-हमजिन्स = साथी लोग

चैरिटी बिगन्स एट होम, अपने परिवार वालों को ज्ञान सुनाओ,अपने हमजिन्स का कल्याण करो

1403-हमशरीक = अपने समान के लोग।

1404- सब्ज परी= इंद्रसभा की परी, जो नवरत्नों में से एक थी

1405-हवाई किले बनाना = काल्पनिक मंसूबा

जो स्वयं के संकल्पों के बन्धनों में है वह बहुत समय इसी में बिजी रहता है। जैसे आप लोग भी कहते हो ना कि हवाई किले बनाते हैं।

1406- हषद = ईर्ष्या,जलन

तुम राम को याद करते हो तो रावण को हषद होता है।

1407-हाजिर नाजिर = सामने उपस्थित; जो किसी स्थान पर उपस्थित भी हो और सारी घटनाएँ देखता भी हो।

1408-हाजिर हुजूर = प्रभु उपस्थित हैं।

कह देते हैं सतयुग है ही है। जैसे कहते हैं कृष्ण हाजिरा हजूर है, राधे भी हाजिरा हज़ूर है।अनेक मत-मतान्तर, अनेक धर्म...

1409-हाथ की सफाई करना = चमत्कार करना, जादू करना, हाथ के प्रयोग से किए जाने वाला ऐसा कार्य जो लोगों को अचंभित कर दे।

1410-हिर जाना = आदत पड़ जाना।

... तुम्हारी बुद्धि में है विश्व की बादशाही, जो यहाँ से मिलती है वह फिर समझते हैं दाना यहाँ मिलता है तो फिर हिर जाते हैं।

1411-हिरोशिमा = द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान अमेरिका द्वारा जापान के हिरोशिमा शहर पर परमाणु बम गिराया गया था, जिसके कारण व्यापक रूप से जनधन की हानि हुई।

1412- हूबहू = ठीक उसी तरह।

1413-ह्रास = कमी, दुःखी,पतन

1414-क्षीरसागर = दूध से भरा हुआ सागर

... बाप खिवैया बन आया है तुम सबकी नईया को विषय सागर से निकाल क्षीर सागर में ले जाने,

1415-क्षीरखंड बनना = दूध और पानी की तरह मिलजुल कर रहना।

तुमको यहां क्षीरखंड बनना है। आपस में बहुत लव रहना है।

1416-त्राहि-त्राहि =संकट मैं लगाई जाने वाली परमात्मा से गुहार।

... कहते हैं ना दुःख के पहाड़ गिरते हैं, जब अर्थक्वेक आदि होती है तो कितना त्राहि-त्राहि करते हैं।...

1417-त्रिनेत्री= जिसको ज्ञान का तीसरा नेत्र हो।

1418-त्रिया चरित्र= स्त्रियों की युक्तियाँ जिसे पुरुष सहज में नहीं समझ सकते।

1419-त्रिलोक = स्थूल या मानव लोक, सूक्ष्म लोक और परमधाम । शास्त्रों और मनमत के आधार पर स्वर्ग,नर्क और धरती।

1420-त्रिवेणी = त्रिवेणी संगम (इलाहाबाद) में गंगा- यमुना व सरस्वती (गुप्त) का संगम होता है। भक्त लोगों का विश्वास है कि संगम में स्नान करने से सारे पाप धुल जाते है व स्वर्ग की प्राप्ति होती है।

1421-ज्ञान गुल्जारी = ज्ञान से प्रफुल्लित, ज्ञान वाटिका।

...मीठे-मीठे ज्ञान गुल्जारी, ज्ञानयोग के पुरुषार्थी बच्चों को मात-पिता बापदादा का यादप्यार और गुडमार्निंग।

हिन्दी मुरली में आयी कहावतों के अर्थ

1422- आप मुये मर गई दुनिया = जब कोई मर जाता है तो उसके लिए यह दुनिया खत्म हो जाती है। ब्राह्मण बच्चे भी दुख सुख , निंदा स्तुति भूलकर शिव बाबा की याद में लीन हो जाते हैं।

1423-अन्धों की औलाद अंधे और सज्दे की औलाद सज्दे = माया रूपी रावण के बच्चे रावण (आसुरी) अर्थात् ज्ञान नयनहीन होंगे और ईश्वर की सन्तान ईश्वरीय बुद्धिवाले होंगे अर्थात् ज्ञान नेत्रवान होंगे।

1424-अंधेर नगरी चौपट राजा टके सेर भाजी टके सेर खाजा = जहाँ राजा या मालिक मूर्ख होता है वहाँ अन्याय तो होगा ही।

1425-अपनी घोट तो नशा चढ़े= अपनी घोटना अर्थात बुद्धियोग इधर-उधर न भटकाकर एक बाप को याद करना । एक बाप बुद्धि में याद रहे तो नशा चढ़े; अपनी विशेषताओं को जितना याद करते रहेंगे, उतना नशा चढ़ेगा।

1426-अम्मा मरे तो भी हलुवा खाना, बाप मरे तो भी हलुआ खाना =किसी भी परिस्थिति में ज्ञान का हल्वा अर्थात् मुरली सुनना नहीं छोड़ना है और नष्टोमोहा बनना है।लौकिक युगल ने जब शरीर छोड़ा, तब निर्मला शान्ता दादीजी (ब्रह्मा बाबा की लौकिक बेटी) ने कहा।

1427- आत्मा परमात्मा अलग रहे बहुकाल, सुन्दर मेला कर दिया जब सतगुरू मिला दलाल = आत्मा और परमात्मा अलग रहे बहुत काल, सतगुरू दलाल बनकर सुन्दर मेला कराते हैं -आत्मा और परमात्मा कल्प में संगमयुग पर दलाल के माध्यम से मिलन मना रहे हैं। आत्मा और परमात्मा का मिलन 5000 साल में हुआ है।अब फिर से शिवबाबा ब्रह्मा बाबा दलाल के माध्यम से मिलन मना रहे हैं।

1428-आप मुये मर गई दुनिया = जब कोई मर जाता है तो उसके लिए यह दुनिया खत्म हो जाती है। ब्राह्मण बच्चे भी दुख सुख , निंदा स्तुति भूलकर शिव बाबा की याद में लीन हो जाते हैं।

1429 - कम खर्च बालानशीन = खर्चा कम हो और कार्य शानदार हो -ईश्वरीय सेवा का यही लक्ष्य है कि अनेक आत्माओं तक ईश्वरीय संदेश पहुँचे। उस के लिए जो खर्चा होता है उसके लिए हिचकिचाना नहीं। यह भी नहीं कि धन को जैसे चाहें वैसे खर्च करें।

1430-करो सेवा तो मिले मेवा = सेवा करो और भाग्य बनाओ - कर्म का सिद्धान्त कहता है। जैसा कर्म वैसा फल। ईश्वरीय सेवा करने इस संगमयुग में ही प्राप्त होता है।सेवा कर सारे कल्प का खाता जमा करना है। जिसका अनेक गुणा भाग्य सारे कल्प में सिर्फ संगम पर बनता है।

1431-ईश्वर की गति मति न्यारी है = ईश्वर जो गति सद्गति की मत देते हैं वह सबसे न्यारी है।

1432-चढ़ती कला तेरे भाने सर्व का भला = आपकी सद्गति के साथ साथ सर्वात्माओं को गति अर्थात् मुक्ति मिल जाती है। तो

आपकी चढ़ती कला में सर्व का भला है।

1433-चढ़े तो चाखे बैकुण्ठ रस गिरे तो चकनाचूर = ज्ञान सम्भाल के लेना पड़ता है। हर कदम में राय लेनी पड़ती है। जो ज्ञान मार्ग की सीढ़ी पर निरन्तर आगे चढ़ते रहते हैं, वे वैकुण्ठ रस चखने के अधिकारी बनते हैं,मार्ग में हर कदम अगर माया के वश होकर नीचे गिर जाते हैं तो अधोगति को प्राप्त करते हैं।

1434-चिंता ताकि कीजिए जो अनहोनी होय = किसी भी बात की चिंता नहीं करनी चाहिए क्योंकि जो अटल भावी है,

वह होकर ही रहेगा।

1435-जैसा अन्न वैसा मन = जैसी आहार वैसा विचार - अन्न का प्रभाव मन पर बहुत पड़ता है। इसलिए एक राजयोगी को

सिर्फ शुद्ध, शाकाहारी चाहिए जो उसके मन को निर्मल और भोजन खाना एकरस बनाए रखता है।

1436-जैसे काग वैसे बच्चे = जैसा बाप वैसे बच्चे शिव बाबा कहते हैं कि जैसे मैं शान्ति का सागर हूँ वैसे बच्चे भी अपने को मास्टर ज्ञान सागर समझना चाहिए क्योंकि जैसे बाबा वैसे बच्चे।

1437-जो ओटे सो अर्जुन = जो अपने आप आगे आकर सेवा की जिम्मेवारी निभाता है, वो ही अर्जुन (विजयी) है और अव्वल नंबर (नंबरवन) में आता है। जैसे ब्रह्मा बाप सदा

"पहले मैं" के स्लोगन से अर्जुन अर्थात अर्जुन बना, ऐसे फॉलो फादर।

1438-जो चुल पर वह दिल पे = जो रसोई में अथक होकर सेवा करते हैं, वो भगवान की दिल पर चढ़ते हैं। जो चुल पर है वह भगवान की दिल पर है।

1439-ज्ञान अंजन सतगुरु दिया अज्ञान अंधेरा विनाश = सतगुरू परमात्मा (शिव बाबा) जो ज्ञान (अंजन) देते हैं उससे अज्ञान अंधकार,मानसिक अंधेरा दूर हो जाता है।

1440-डूबे हुए मनुष्य को तिनके का सहारा= मुसीबत के समय थोड़ा सा भी सहयोग मनुष्य को सहारा देता है।

1441-20 नाखूनों का जोर = अपनी पूरी शक्ति, जोर से।

... ज्ञान सागर बाप से वर्सा लेना है तो 20 नाखूनों का जोर देकर भी पढ़ाई जरूर पढ़ो, पढ़ाई से ही राजाई वा

जीवनमुक्ति पद प्राप्त होगा ...

1442-तुलसीदास चंदन घिसे तिलक देत रघुवीर = तुलसीदास ने चंदन दिया रघुवीर को - मैं आत्मा और मेरा बाप अन्दर घोटना है घिसा और तिलक शिवबाबा -यही (चंदन घिसना) । इस निरन्तर स्मृति के आधार से ही राजाई का तिलक मिलेगा।

1443-दे दान छूटे ग्रहण = विकारों का दान देने से आत्मा पर जो तमोप्रधानता का ग्रहण है वह छूट जायेगा।

1444-धन दिए धन न घुटे = ज्ञान रूपी धन कितना भी दान करने से कभी कम नहीं होता है - ईश्वरीय प्राप्तियों को दान करने से प्रमाण, जितना दान ईश्वरीय नियम करेंगे, उतनी वृद्धि होगी अर्थात् देना ही बढ़ाना है।

1445-धन्धे सब में धूर, बिगर धन्धे नर से नारायणबनाने के

= सब धन्धों में सिर्फ वही धन्धा श्रेष्ठ है जो नर से नारायण बनाता है, बाकी किसी धन्धे से कोई अविनाशी प्राप्ति नहीं हो सकती - भक्ति मार्ग में बहुत पूजा आदि करते रहते हैं। लेकिन उनको परमात्मा की यथार्थ पहचान नहीं है।

1446-धरत परिये धर्म नहीं छोड़िए = किसी भी परिस्थिति में अपने धर्म अर्थात् धारणा से डगमग नहीं होना। ईश्वरीय नियम स्व उन्नति के लिए ही बनाये गये हैं। अत: कितनी भी विकट नियमों पर अटल रहें।

1447-नजर से निहाल स्वामी कींदा सतगुरु =

बाबा अर्थात् स्वामी और सतगुरु अपने बच्चों को अपने नज़रों से तृप्त कर देते हैं और उनकी नज़र से हम तर जाते हैं - बाबा कहते - बच्चे, देही-अभिमानी बन तुम मेरे से नज़र लगाओ अर्थात् मुझे याद करो, और संग तोड़ एक मेरे संग जोड़ो।

1448-न चाहत कुछ और भई कुछ और की और = मनुष्य कुछ चाहता है और भगवान को कुछ और ही मंजूर होता है।

1449-नष्टोमोहा स्मृतिलब्धा = हे परमात्मा! आपकी कृपा से मेरा मोह नष्ट हो गया है और मैंने स्मृति प्राप्त कर ली है। अब मैं संशय रहित होकर स्थित हूँ । आपकी आज्ञा का पालन करुंगा - मोह को नष्ट कर निरन्तर स्थित रहने से ही आत्मा को सद्धति प्राप्त होती है।

1450-निर्भय,निर्वैर, अकालमूर्त....सतगुरू प्रसाद जप साहेब...= भगवान को किसी का भय नहीं, किसी से वैर नहीं और उसको कभी काल खा नहीं सकता है।

1451- भृकुटी के बीच चमकता है अजब सितारा = एक अद्भुत सितारा रूपी आत्मा भृकुटी के बीच सदा चमकता है।

1452- मांगने से मरना भला = किसी से कुछ मांगने से अच्छा मरना भला है।

... दाता है ना। तो सब आपेही देते रहते हैं। मांगने से मरना भला। कोई भी चीज़ मांगनी नहीं होती है। ...

1453- मिरूआ मौत मलूक शिकार = मिरु जानवर को कहते हैं और मलूक शिकारी को कहते हैं। जब शिकारी मिरू को तीर मारता है तो उसकी मौत होती है।लेकिन मलूक को खुशी होती है - ऐसे ही विनाश के समय पर माया और प्रकृति दोनों ही फुल फोर्स से अपना अंतिम दांव लगायेंगे। ऐसे ही कमज़ोर आत्माओं के लिए अन्त समय का दया हास पैदा करने वाला होगा और मास्टर सर्वशक्तिमान आत्माओं के लिए हिम्मत और हुल्लास देने वाला होगा। उनके सामने नई दुनिया के नज़ारे होंगे।

1454 - मुझे निर्गुण हारे में गुण नाहीं,आपेही तरस परोई = हे परमात्मा! मेरे में कोई गुण नहीं है।आप मुझ पर तरस योग्य बनाओ कि मैं सर्वगुण सम्पन्न बन सकूँ - कलियुग के अन्त में

शिव बाबा आत्माओं को सृष्टि के आदि, मध्य औरअन्त का ज्ञान सुनाकर आत्माओं को सर्व गुण सम्पन्न बना रहे हैं।

1455- राम गए , रावण गए, जाको बहु परिवार = राम, रावण, उनके ंपरिवार वाले सभी चले गये - कोई भी यहाँ सदाकाल नहीं रह सकता।

1456- राम सिमर प्रभात मोरे मन = हे मेरे मन ! राम नाम को प्रातः काल याद करो अर्थात अमृतवेला अवश्य करो शिव बाबा की याद में।

1457- वाट वेदे वामन फाथो = जैसे रास्ता चलते ब्राह्मण फंस गया - दादा लेखराज, जब से ब्रह्मा बाबा बने, तब से उनको बहुत कठिनाइयों का सामना करना पड़ा।

1458 -विनाश काले प्रीत बुद्धि विजयन्ती विनाश काले विपरीत बुद्धि विनश्यन्ती = अन्त समय जिनकी बुद्धि में

भगवान के प्रति प्रीत नहीं होगी वो विनाश को पाते हैं। अर्थात् हार जाते हैं।जिनकी बुद्धि में और अन्त समय भगवान के प्रति प्रीत होगी उनको विजय प्राप्त होगी।

1459- शेरनी का दूध सोने के बर्तन में ही ठहरता है = बाबा जो श्रेष्ठ ज्ञान दे रहे हैं वह स्वच्छ मन और बुद्धि में ही धारण हो सकता है।

1460- सत नाम संग है = सत नाम अर्थात शिवबाबा ही सच है। बाकी सब झूठ या धोखा है इसलिए सच अर्थात शिवबाबा की आज्ञा का पालन करो, सच कर्म करो, सच बोलो.. तो शिवबाबा आप बच्चों को साथ ले जायेंगे।

1461- सतगुरु का निंदक ठौर ना पावे =

सतगुरू की निंदा करता या कराने के निमित्त बनता है, वह ऊँच स्थान (पद) नहीं पा सकता है।

1462-सतगुरु बिन घोर अन्धियारा= सतगुरू के बिना घोर अंधकार - जिनके जीवन में शिव परमात्मा का सत्य ज्ञान नहीं उनका जीवन अंधकार से भरा रहता है। ज्ञान ही प्रकाश है।

1463- सतयुग आदि सत, है भी सत, होसी भी सत... = सतयुग, आदि काल सच्चाई का युग है।यह सत्य है एवं यह पुनः सत्य सिद्ध होगा।

1464-सब दिन होत न एक समान = जीवन में कभी सुख आते तो कभी दुख,जरूरी नहीं सब दिन अच्छे हो या सभी दिन बुरे हो।

1465-सर्वाणि धर्माणि परित्यज्य मामेकम् शरणम् क्रज = देह के सर्व धर्मों को त्याग तू केवल मुझ एक सर्वश्क्तिमान की ही शरण में आ जा, मैं तुझे सर्व पापों से मुक्त कर दूँगा। तू शोक मत कर।

1466-सवेल सुमण सवेल उथण = जल्दी सोओ, जल्दी उठो।

1467-साठ लगी लाठ = 60 वर्ष के बाद लाठी पकड़कर चलना पड़ता है।

... 60 वर्ष में वानप्रस्थ अवस्था होती है। कहते हैं साठ लगी लाठ। इस समय सबको लाठी लगी हुई है।

1468-सुबह का सांई बेड़ा बने लाई = हे प्रातः स्मरणीय प्रभू! बेडा पार लगाना, कोई गाँठ की धनी और मन का भोला मिलाना - मुझे ऐसा आमदनी देकर जाये -ग्राहक भेजो जो मेरे सारे दिन की अच्छी कमाई हो।व्यापारी लोग भगवान से ऐसी प्रार्थना करते हैं।

1469-सिमर सिमर सुख पाओ कलह क्लेश तन माह मिटाये= भगवान को ऐसा याद करो जो सब झगड़े एवं शारीरिक बीमारी दूर हो जायें और सुख मिले।

1470-सुरमण्डल के साज़ से देह-अभिमानी सांड़े क्या जाने =जिन्हें अहंकार होता है, उन्हें देह अभिमानी सांडा (गिरगट) कहा जाता है। वे देवताओं की सभा की दिव्यता को जान भी नहीं सकते।

1471-हथ जिसका हिय पहला पुर सो पहुंचे =जिसका हाथ सदा दाता के समान होता है, उसे प्राप्त भी प्रथम स्तर की होती है; दाता समान हाथ है तो वह पहले नम्बर पर पहुंच जाते हैं।

1472-हीरे जैसा जन्म अमोलक, कौड़ी बदले खोया रे = संगमयुगी जीवन हीरे तुल्य है। इसे विनाशी धन (कौड़ियों) के पीछे नहीं गँवाना है।

हिंदी मुरली में आये कठिन अंग्रेजी शब्दों के अर्थ*

1473- एडम ईव = मानव जाति के पिता। इस्लाम में आदम और हव्वा,ईसाई धर्म में जूदेव ईसाई,हिन्दू धर्म शास्त्रों में मनु श्रद्धा को माना जाता है।

शिव को ही फादर कहेंगे। एडम-ईव अर्थात् ब्रह्मा-सरस्वती यहाँ हुए हैं।

1474- एक्सन कान्सेस = कर्म की स्मृति

भल बॉडी कान्सेस कम होते हो लेकिन एक्शन कॉन्सेस ज्यादा हो जाते हो ।

1475- एक्सन प्लान = कार्य योजना

1476- 7 वन्डर्स ऑफ़ द वर्ल्ड = दुनिया के 7 अजूबे; विश्व के सात अजूबे दुनिया भर के स्मारकों की एक संकलित सूची है जो शिल्प कौशल और वास्तु कला में उत्कृष्टता प्राप्त करते हैं।

7 वन्डर्स आफ वर्ल्ड कहते हैं, परन्तु उनमें कोई स्वर्ग बताते नहीं। स्वर्ग तो पीछे आता है।

1477- एडीसन पेपर = परीक्षा के दौरान अतिरिक्त लेखन की आवश्यकता पड़ने पर अतिरिक्त पेपर लिया जाता है।

1478-एडाप्टेड चिल्ड्रेन= गोद लिया बच्चा।

ब्रह्माकुमार और कुमारियाँ ढेर हैं । इससे सिद्ध होता है यह एडाप्टेड चिल्ड्रेन हैं क्योंकि एक ही बाप के बच्चे हैं।...

1479-एडल्ट्रेशन= मिलावट

बाप कहते हैं कितनी एडल्ट्रेशन, करेप्शन है। अब मुझे कन्याओं माताओं के द्वारा... जो पवित्रता की गैरन्टी करते हैं।

1480-एडवांस पार्टी= वो समूह जो पुरुषार्थ में बहुत आगे हैं; वो आत्मायें जो सतयुगी स्थापना में पहले से ही तैयारी कर रहे हैं।

1481-एम आब्जेक्ट = लक्ष्य , उद्देश्य। ब्राह्मण जीवन का लक्ष्य लक्ष्मी नारायण समान बनना है।

1482-एल्बम = चित्रपंजी, जिसमें बहुत सी फोटो रखी जाती है।

... जो पवित्रता की गैरन्टी करते हैं। उनका फोटो निकाल हम एलबम बनाते हैं। पावन बने बिगर पावन दुनिया में जाने का सर्टिफिकेट मिलन सरके ...।

1483-अलाएं = मिश्र धातु,खाद,विकार।

1484-अलमाइटी = सर्वशक्तिमान।

1485-अलमाइटी अथारिटी= असीम शक्ति युक्त।

... आधाकल्प पहले सुखधाम था। आलमाइटी गवर्मेन्ट थी क्योंकि आलमाइटी अथॉरिटी ने भारत में देवताओं के राज्य

की स्थापना की।

1486-आलवेज सी फादर = हमेशा बाप को ही देखो।

1487-एम्बेसडर = राजदूत, विदेश में किसी देश का आधिकारिक प्रतिनिधि।

... भारत के एम्बसडर बन कर गये तो भारत का नाम बाला हुआ ना! चक्रवती बन चक्र लगाने में मजा आता है ना! ...

1488-एप्स = बन्दर, वनमानुष

1489-आरग्यु = वाद विवाद करना।

1490-ऐरो = बाण,तीर,तीर चिन्ह

... जैसे रास्ते दिखाने के चिन्ह होते हैं ना। ऐरो दिखाता है कि यहाँ जाओ ।

1491-आर्टिकल = लेख,वस्तु

1492-आर्टिफिशियल= झूठा,बनावटी अभी तुम समझते हो यह तो रीयल बात है । बाकी यह सब हैं आर्टीफिशल बातें।

...

1493-एज सरटेन एज डेथ =इतना निश्चित जितना मृत्यु का आना निश्चित है - बाबा ने इस कथन का उपयोग यह कहने के लिए किया कि स्वर्ग की राजधानी को आना ही है, यह निश्चित है।

1494-एशलम = शरण का स्थान

बाप कहते हैं आधाकल्प से तुमको माया ने हैरान किया है। अब तुम प्रभू का एशलम माँगते हो। ...

1495-एसेम्बली = सभा, विधानसभा,संसद

1496-अथारिटी = अधिकार, सत्ता वाला व्यक्ति

1497-आस्पीशियस = शुभ

1498-बबूल ट्री = बबूल एक मध्यम आकार का, कांटेदार, पीले फूलों वाला लगभग सदाबहार पेड़ है जो 20-25 मीटर की ऊंचाई तक पहुंच सकता है।

1499-बैचलर = कुमार, अविवाहित

कहते हैं गृहस्थी हो, चाहे बैचलर हो सिर्फ श्रीमत पर चलने का पुरूषार्थ करो।

1500-बैकबोन = कमर की हड्डी, मुख्य आधार।

... वैकबोन तो बाप है ही । अगर बाप बैकबोन न बने तो आप अकेले थक जाओ।...

1501-बैग बैगेज = यात्रा की सामग्री।

1502-बेगर टू प्रिन्स = भिखारी से राजकुमार

1503-बेगरी लाइफ = भिखारी जीवन

1504-बायोग्राफी= जीवन चरित्र

1505-बाइस्कोप = सिनेमा

1506-बिरला = लक्ष्मी नारायण मंदिर, जिसे बिड़ला मंदिर के नाम से भी जाना जाता है, दिल्ली के प्रमुख मंदिरों में से एक है और एक प्रमुख पर्यटक आकर्षण है। 1939 में उद्योगपति श्री जे. के. विरला द्वारा निर्मित यह खूबसूरत मंदिर कनाट प्लेस के पश्चिम में स्थित है।

1507 ब्लेसिंग = आशीर्वाद, वरदान

1508-ब्लिसफुल = खुशी देना, खुशी से भर देना।

1509-बोर्डिंग = ऐसा स्थान जहां रहने और भोजन का स्थान मिलेगा।

बोर्डिंग में रहते हैं तो फिर बाहर का संग नहीं लगेगा। यहाँ भी स्कूल है ना..।

1510-बॉडी कान्सेस = देह अभिमानी

1511-बान्डेज = बन्धन

1512-बाक्सिंग = मुक्केबाजी

माया की बहुत बड़ी बॉक्सिंग है जिससे हार कर बहुत कमजोर हो जाते हैं।

1513-ब्राइडग्रुम = दूल्हा

... सब ब्रइड्स का एक ही भगवान है- ब्राइडग्रुम यह मनुष्य नहीं जानते, इसलिए पूछा जाता है- आत्मा का बाप कौन है?

...

1514-ब्रदरहुड= भाईचारा

1515-बुलेटिन = विवरणिका

1516-कैड ग्रुप = योग की शक्ति से हृदय रोग को ठीक करने के इरादे से बनाया गया एक समूह।

1517-कैलमिटीज = आपदायें, विपत्ति,संकट।

1518-कैनल = नाला,नहर

1519-कांस्टेबल = शिवबाबा की लाईट।

1520-सेरेमनी = उत्सव

1521-सर्टेन = निश्चित

यह बेहद का बड़ा ड्रामा है। यह सर्टेन है हम फिर से देवता बनते हैं।

1522- चैरिटी बेगेन्स होम = दान करना घर से

आरम्भ करना है -पहले अपना घर का कल्याण कर फिर गाँव का कल्याण करना है।

1523-चियरफुल =हर्षित

1524-चिटचैट = बातचीत

1525-क्लोरोफॉर्म= बेसुध करने की औषधि।

1526-सरकमस्टान्स = परिस्थितियां

1527-सिविल आई = निर्विकारी दृष्टि, पवित्र दृष्टि।

1528-सिविलियन= असैनिक, नागरिक

सभी धर्म वालों के लिए यह ज्ञान है। चाहे मिलेट्री का हो, चाहे सिविलियन हो, ज्ञान सबके लिए है।

1529-कोट आफ आर्मस = राज मुद्रा,राज- चिन्ह।

गवर्मेन्ट के कोट ऑफ आमर्स की मोहर होती है। जो भी बड़ी-बड़ी राजधानियां हैं उन सबके कोट ऑफ आर्मस हैं।

1530-कागनीटो = दर्शनीय

आत्मा है इनकागनीटो । शरीर है कागनीटो। मैं भी हूँ अशरीरी।...

1531-कम्फर्ट =आराम, सुविधा

1532-कम्पेनियन= दोस्त ,साथी।

1533-कम्पार्टमेन्ट= विभाग

1534-कान्फ्रेंस= सभा, सम्मेलन

1535-कान्सेस = चेतन

1536-कन्स्ट्रक्शन = बनावट संरचना।

1537-कान्ट्रैक्ट = ठेका।

1538-कान्ट्रास्ट = भेद, विरोध

1539-कनविन्स = मनवाना,निश्चय दिलवाना।

1540-कोरोनेशन = राज्याभिषेक

दीपमाला होती है कारोनेशन पर। बाकी इस समय जो उत्सव मनाये जाते हैं वह वहाँ होते नहीं ..

1541-कारपोरियल वर्ड = स्थूल दुनिया ।

वह दुःख सुख का पार्ट तो इस कारपोरियल वर्ल्ड में चलता है। इस ही सृष्टि पर जब स्वर्ग है तो इंटरनल आत्मिक लव रहता है ...

1542-क्रिमिनल आई = विकारी दृष्टि जब तक क्रिमिनल आई है तो भाई-बहन का जो डायरेक्शन मिला है वह भी नहीं चल सकता।

1543-क्राउन सेरेमनी= राज्याभिषेक

1544-कल्ट = पंथ,धर्म सम्प्रदाय

1545-कर्जन = ब्रिटिश के राजनेता जो भारत के वायसराय थे।

1546-डैम = बांध

1547-डिबेट = वाद ,चर्चा।

1548-डिफेम = बदनाम

सर्वव्यापी कहना यह तो बाप को डिफेम करना है। बाप कहते हैं। ग्लानि करते-करते धर्म ग्लानि हो गई।

1549-डिटीज्म/डीटी = देवी- देवता धर्म

... मुख्य पहले-पहले डिटीज्म फिर सबकी वृद्धि होते-होते झाड़ बढ़ता जाता है। अनेकानेक धर्म, अनेक मतें हो जाती हैं ।...

1550-डिस्ट्रक्शन = सत्यानाश

1551-डेविल वर्ड = आसुरी दुनिया

.... यह है डेविल वर्ल्ड । डेविल कहा जाता है असुर को । कितना दिन और रात का फ़र्क है।...

1552-डायमण्ड हाल = शांतिवन का एक बड़ा हाल जिसमें 25000 लोग एक साथ बैठ सकते हैं।

1553-डायमण्ड हार्बर = कोलकाता से 50 किमी की दूरी पर स्थित डायमंड हार्बर शहर, नदी और बंगाल की खाड़ी के संगम पर हुगली नदी के पूर्वी तट पर स्थित है।

1554-डायमंड जुबली = साठवीं वर्षगांठ

-लेकिन सिर्फ फंक्शन नहीं करने हैं, इस डायमण्ड जुबली में डायमण्ड बन डायमण्ड देखना, डायमण्ड बनाना, ये रोज का फंक्शन है। ...

1555-डिसफिगर = बदसूरत

1556-डिसरिगार्डर = निरादर।

1557-डिवाइन यूनिटी = दिव्य एकता

1558-डबल क्राउन = दो मुकुट, एक पवित्रता का और दूसरा राज्य का।

1559-डबल इंजन = डबल पावर से चलने वाला इंजन; शिवबाबा और ब्रह्मा बाबा का कम्बाइण्ड रूप।

1560-डबल फारेनर्स = डबल विदेशी - विदेश (भारत देश के नहीं) में रहने वाले और जो अपना स्वदेश यानी परमधाम छोड़कर

पराया राज्य यानी इस स्थूल दुनिया में रहने वाले।

1561-डबल लाइट = ज्ञान का प्रकाश और मन का हल्कापन।

1562-डबल लाक = दो ताला, बाबा कहते हैं कि याद और सेवा ही डबल लाक है।

1563-डॉउन फॉल आफ भारत = भारत का पतन

1564-डलहेड = मूर्ख,मूढ़, सुस्त।

अब बाप कहते हैं तुम कितने डलहेड पत्थरबुद्धि बन गये हो। अब फिर अपनी बैटरी को भरो। सिवाए बाप की याद के आत्मा कभी पवित्र हो नहीं सकती। ....

1565-इमर्ज = निकलना,प्रकट होना।

बाप भी बच्चों को याद करने बिना नहीं रह सकते हैं। बाप भी इमर्ज करके मिलते हैं, रह नहीं सकते हैं।

1566-एपिक= इतिहास,युग।

1567-ईविल सोल/ ईविल स्प्रिट = प्रेतात्माएं, पापात्मायें।

1568-एक्सकरशन = आमोद-प्रमोद, मनोरंजन।

1569-एग्जीबिशन= प्रदर्शनी।

1570-फेदफुल =विश्वसनीय, वफादार।

1571-फाल एण्ड राइज भारतवंशीज = भारतवंशियों का पतन और उत्थान।

1572- फैमिलिअरिटी = किसी से बहुत अधिक करीब होनी की अवस्था।

1573-फैमन = अकाल,दुर्भिक्ष।

...पहले तो अनाज आदि भी बहुत सस्ते होते हैं । फैमन आदि भी बाद में पड़ती है। तुम्हारे पास बहुत धन रहता है ...

1574-फ्लोरेंस = बेदाग, दोषरहित

फ्लोरेंस हीरा बनने के लिए अन्तर्मुखी बन देह अभिमान की खामी को निकालना है।...

1575-फाउन्टेन= फुआरा

1576-फंक्शन = काम, कार्यक्रम।

फंक्शन करो, प्रदर्शनियां करो, खूब करो लेकिन उसकी रिजल्ट सभी की नजर में आनी चाहिए।

1577-गैलप = तेजी से दौड़ना।

जितना यहाँ गैलप करेंगे उतना समझो अपना भविष्य के तख्त को भी गैलप करेंगे। चान्स अच्छा है।..

1578-गार्डन आफ फ्लावर = फुलवारी, फूलों का बगीचा।

1579-गेट वे टू हेविन = स्वर्ग का द्वार

1580-जर्म्स =कीटाणु, जीवाणु

1581-ग्लोबल हास्पिटल = यह मधुबन के पास ब्रह्माकुमारी संस्था द्वारा निर्मित एक अस्पताल का नाम है।

1582-ब्लिसफुल= भगवान मुक्तिदाता है,मार्ग दर्शक है और आनन्द का सागर है।

1583-गाड गाडेज = देवी देवता

वहाँ गॉड-गॉंडेज रहते थे इसलिए उन्हों के चित्र भी बहुत खरीद करते हैं। परन्तु वह स्वर्ग फिर कहाँ गया।

1584-गाडली बर्थ राइट = ईश्वरीय जन्म सिद्ध अधिकार ।

1585-गाड इज ओमनी प्रेजेन्ट= ईश्वर सर्वव्यापी है।

... मनुष्य तो बहुत भोले होते हैं। कह देते हैं - गॉंड इज़ ओमनी प्रेजन्ट। बाप तो अपने घर में ही रहता है,और कहाँ रहेगा? ....

1586-गोल्डेन डाल्स = सुनहले पुतले।

1587-गोल्डेन स्पून इन माउथ = भाग्य और धन सम्पन्न जन्म लेना।

1588-गोल्डन स्पैरो =सोने की चिड़िया; भारत अपने समृद्धि के कारण सोने की चिड़िया के रूप में जाना जाता है।

1589-गोल्डेन वर्ल्ड = सतयुगी दुनिया

1590-ग्रेट ग्रेट ग्रैंड फादर = आदि पिता, ब्रह्मा बाबा

1591-ग्रीटिंग कार्ड= बधाई और शुभकामनाओं से भरा संदेश

1592-हैमर = हथौड़ा

1593-हैंड शेक = हाथ मिलाना

1594हेड क्वार्टर= मुख्य कार्यालय

1595-हेल्थ कान्सिअस = स्वास्थ्य के प्रति जागरूक।

1596-हेल्थ वेल्थ हैप्पिनेस = स्वास्थ्य,संपदा,खुशी।

यह है प्रीचुअल नेचर-क्योर। हेल्थ वेल्थ हैप्पीनेस 21 जन्मों के लिए मिलती है।

1597-हियर नो ईविल, सी नो ईविल टाक नो ईविल =बुरा मत सुना, बुरा मत देखो, बुरा मत बात करो।

1598-हेविन= स्वर्ग

बाबा हेविन का रचयिता है। हम उस बाबा से कल्प-कल्प वर्सा लेते

हैं। 84 जन्म पूरे करते हैं।...

1599-हाई वे = राजमार्ग

1600-हाईएस्ट होस्ट = मेहमानी करने वाला ऊंचा व्यक्ति।

... बापदादा हाइएस्ट होस्ट भी है और गोल्डन गेस्ट भी है । होस्ट बनकर भी मिलते हैं, गेस्ट बनकर आते हैं।..

1601-हिस्ट्री हाल = पांडव भवन, मधुबन के एक ध्यान कक्ष का नाम।

1602-होलीएस्ट आफ द होली = परम पावन।

1603-होलीनेस = पवित्रता

1604-आनर =सम्मान, इज्जत

1605-होपफुल = आशाजनक।

1606-हॉस्पिटल कम कालेज =वह स्थान जहां शिक्षा और स्वास्थ्य एक ही स्थान पर दिया जाता है जैसे बाबा का सेवा केंद्र।

1607-ह्यूज ड्रामा = विशाल नाटक।

1608-ह्यूमिनिटी= मानवता, दया।

1609-हिप्नोटाइज= वशीकरण, सम्मोहन

1610-आइडल वर्शिप = मूर्ति पूजा।

1611-इमीटेशन= बनावटी,नकली।

1612-इमार्टल इम्प्रैसिबुल =अमर और अविनाशी

1613-इनकागनीटो= गुप्त।

1614-इनकारपोरियल = निराकारी।

वह इनकारपोरियल गाड फादर, निराकार आत्माओं का बाप है।

1615-इनश्योर =बीमा करना, रक्षा करना।

1616-इन्टरफेयर = दखल देना, हस्तक्षेप करना।

1617-इन्टरप्रेटर = व्याख्याता, अनुवाद करने वाला।

1618-इन्वेन्शन = आविष्कार,नई कल्पना।

1619-आइरन एज = कलियुग,लोहे का युग।

1620-जुबली = महोत्सव

1621-किटबैग = सामान थैला

1622-लैंडलेडी = भू स्वामिनी

1623-लास्ट सो फास्ट = देरी से आए तो भी जल्दी जाना।

1624-लीप युग = चार युगों के बाद आने वाला छोटा सा युग संगमयुग

1625-लास्ट सो फास्ट, फास्ट सो फस्ट = अन्त में आते भी तीव्र जा सकते हैं और तीव्र जानेवाले फस्ट आ सकते हैं।

1626-लिबरेट = मुक्ति देना।

1627-लिबरेटर = मुक्तिदाता

1628-लाइट-माइट = प्रकाश शक्ति

1629-लिथो = प्रिन्ट या मुद्रण तकनीक

1630-मेल ट्रेन =डाक गाड़ी

तुम सब पुरुषार्थी हो, आगे चल मेल ट्रेन बन जायेंगे। जैसे मम्मा स्पेशल मेल ट्रेन थी। ...

1631-मैजिस्टिक = राजसिक,महाराजा

1632-मेजोरिटी= अधिक संख्या, बहुतायत,आधे से अधिक।

1633-मैनर्स = शिष्टाचार , अच्छा व्यवहार।

स्कूल में मैनर्स भी सिखलाते हैं। इसमें भी मैनर्स अच्छे चाहिए। दैवीगुण धारण करने हैं।...

1634-मार्जिन= मौका,किनारा।

1635-मार्शल= सेना का प्रमुख

1636-मास्टर अलमाइटी अथारिटी= सर्व शक्तियों के अधिकारी शिव बाबा की संतान।

1637-मेमोरेण्डम = स्मरण लेख,ज्ञापन।

1638-मर्सीफुल = दयालु, रहमदिल।

1639-मर्ज = एक साथ मिल जाना

1640-मिल्युनर =करोड़पति

1641-मिनटो = मिनटो भारत का गवर्नर जनरल था।

1642-मिसाइल = फेंककर चलाने वाला अस्त्र

1643-मिशन = समूह , विशेष कार्य

... सन्यासियों की भी मिशन है। सिर्फ पुरुषों को सन्यास कराए मिशन बढ़ाते हैं। बाप फिर प्रवृत्ति मार्ग की नई मिशन बनाते हैं।...

1644-मिशनरी = धर्म प्रचारक

1645-मिसअन्डरस्टैंडिंग = गलतफहमी

1646-मोनोऐक्टिंग = एक अकेला व्यक्ति एक ही दृश्य में वैकल्पिक तरीके से कई भूमिकाएँ निभाता है।

1647-मोल्ड = सांचा,अनुकूल व्यवहार

1648-म्युजियम = अजायबघर, जहां ऐतिहासिक वस्तुओं का संग्रहालय होता है।

1649-नाइट क्लब = मनोरंजन के लिए रात में खुला रहने वाला क्लब।

1650-नावेल्स = कल्पित कहानी संग्रह

1651-नाउ आर नेवर = अभी नहीं तो कभी नहीं।

1652-नन्स = ईसाई मत की योगिनी

1653-नटशेल = संक्षित,सारांश

1654-आब्जर्वर= ध्यान देने वाला

1655-आक्यूपेशन = व्यवसाय

1656-ओशन आफ नालेज = आनन्द का सागर

1657-ओमनी प्रेजेन्ट= सर्वव्यापी

1658-वन रिलीजन, वन डीटी किंगडम, वन लैंगवेज =एक धर्म, एक दैवी राज्य, एक भाषा।

1659-वन सावरन्टी, वन रिलीजन, वन लैंगवेज = एक राज्य, एक धर्म, एक भाषा।

1660-वननेस = एकता

1661-आरफन = अनाथ

1662-पेपर टाइगर = कागज का शेर, बाबा कहते हैं कि माया केवल एक कागज का शेर है।

1663-आरगन्स =अंग,इन्द्रियां।

1664-पैराडाइज= स्वर्ग, बैकुंठ,सतयुग

1665-पार्लियामेंट= शासन सभा,संसद।

रिद्धि सिद्धि वाले भी बहुत होतेहैं। यहाँ बैठे भी लण्डन की पार्लियामेन्ट आदि देखते रहेंगे।

परन्तु इस रिद्धि-सिद्धि से फायदा कुछ भी नहीं।

1666-पास विद् आनर = परीक्षा में अच्छे अंकों से पास होना।

असम्भव को सम्भव करना और दृढ़ संकल्प से करना - यह है पास विद ऑनर की निशानी।

1667-पैशन = धीरज,सब्र

1668-पीस पार्क = मधुबन के पास एक पार्क का नाम।

1669-फ्लैन्थ्रोफिस्ट = परोपकारी,महादानी।

तुम हो फ्लैन्थ्रोफिस्ट । देह सहित सब कुछ बाबा को बलि चढ़ते हो।...

1670-पिलर्स =आधार, स्तम्भ।

... पवित्रता पिलर्स हैं - जिसके आधार पर द्वापर से यह सृष्टि कुछ न कुछ थमी हुई है। पवित्रता लाइट का क्राउन है।

1671-प्लेटिनम जुबली=75 वीं वर्षगांठ।

1672-पोलार = अन्तरिक्ष स्थान,खाली स्थान।

परन्तु नाम-रूप से न्यारी कोई चीज़ हो न सके। जैसे आकाश है, कोई चीज़ तो नहीं है ना। पोलार ही पोलार है।...

1673-पोलूशन = प्रदूषण।

1674- प्रीसेप्टर = उपदेशक ,गुरू।

1675-प्रोब = शिकायत, किसी विषय की भली-भांति परीक्षा करना।

पहले-पहले जब प्रदर्शनी शुरु की थी तब प्रोब रखते थे, प्रोब के रूप में ऐसी प्वाइंटस रखते थे, अभी नहीं रखते हैं ...

1676-प्रोजेक्टर= परदे पर चित्र दिखाने का यन्त्र।

1677-पंक्चुअल= समयनिष्ठ,वक्त का पाबंद, विलंब न करने वाला

1678-क्वारन टाइन = नये जिज्ञासुओं को अलग बैठाना।

यह ईश्वरीय कालेज है, इनमें नया आदमी कोई समझ नहीं सकेंगे इसलिए 7 रोज क्वारन टाइन में बैठायेंगे।

1679-रिफाइननेस = बेहतरीन, पवित्र स्थिति।

1680- स्लोगन=नारा

1681-रीइनकारनेशन = अवतरण, पुनर्जन्म।

भारत प्राचीन गाया जाता है तो जरूर भारत में ही रीइनकारनेशन होता होगा अथवा जयन्ती भी भारत में ही मनाते हैं। जरूर फादर यहाँ आता है ...

1682-रिज्युवनेट = नया बल देना, फिर से युवा करना।

सारे सूष्टि को पलटाने वाला, रिज्युवनेट करने वाला अर्थात् नर्क को स्वर्ग बनाने वाला बाप ।

1683-रिमार्क = आख्या,उक्ति, टिप्पणी।

1684-सेनोटोरियम = स्वास्थ्य सुधार केंद्र, आरोग्य निवास।

1685-स्क्रू = पेच।

पुरूषार्थ वा प्लैन को कमजोर करने का स्क्रू एक ही है- अलबेलापन' । वह भिन्न-भिन्न रूप में आता है।

1686-सेल्फ रियलाइजेशन कोर्स = आत्मानुभूति कराने वाला कोर्स।

1687-सेमी = आधा, अर्द्ध

समय की समाप्ति का इन्तजार होता है। बाप से लगन के बजाय सेमी निन्द्रा के नशे की लगन ज्यादा होती है।..

1688-सर्विस सेन्टर = सेवा केन्द्र

1689-सुविंग टीचर = सिलाई टीचर

टीचर बनें, सुविंग टीचर बनें, क्योंकि आ्जीविका तो चाहिए ना। बाप का वर्सा होते हुए भी पढ़ते हैं। कि हम भी अपनी कमाई करें।

1690-शेकिंग = हलचल।

जिसको आप लोग फ्लू की बीमारी कहते हो। फ्लू क्या करता है? एक तो शेकिंग होती है। उसमें शरीर हिलता है और यहां आत्मा की स्थिति हिलती है।

1691-शॉक = झटका, सदमा।

1692-शुरूडनेस =, होशियारी।

1693-सिल्वर जुबली= 25वीं वर्षगांठ ।

1694-सिल्वर एज = त्रेतायुग,.. गोल्डन एज है तो सिल्वर एज

नहीं, कॉपर एज है तो आइरन एज नहीं। यह सब बातें बुद्धि में रखनी है।

1695-स्लेट= पत्थर की पट्टी।

1696-स्लाइड= पर्दे पर दिखाने वाला चित्र।

... एक-एक चित्र स्लाइड से इतना बड़ा दिखाई पड़े जो सामने कोई भी पढ़ सके।

1697-सन आफ साइलेंस फादर = शान्ति के सागर की संतान।

1698-सन शोज फादर = बच्चा बाप को प्रत्यक्ष करेगा।

... अहम् आत्मा जरूर अपने फादर का शो करेंगे ना। सन शोज फादर।

1699-सोल कान्सेस = आत्मा अभिमानी,देहीभिमानी।

सोल कान्सेस होकर रहना ही अंतर्मुखी बनना है।

1700-साउथ पोल = दक्षिणी ध्रुव।

... जैसे नक्शे में देखा- नार्थ पोल में 6 मास रात होती है तो जरूर साउथ पोल में 6 मास दिन होगा। यहाँ भी ब्रह्मा का दिन आधाकल्प तो ब्रह्मा की रात आधाकल्प ...।

1701-सावरन्टी = साम्राज्य

1702-स्पिरिट = आत्म शक्ति, हिम्मत, उमंग।

जितनी जितनी स्पिरिट होगी उतनी स्पीड भी होगी। तो यह देखकर हर्षा रहे हैं।...

1703-स्टैम्प पेपर= डाक टिकट,मोहर,छाप।

... भिन्न-भिन्न वर्ग को तैयार कर स्टैम्प जरूर लगानी है। पासपोर्ट पर भी स्टैम्प लगाने सिवाए जाने नहीं देते हैं ना। तो स्टैम्प यहाँ मधुबन में ही लगेगी।

1704-स्टैच्यू= प्रतिमा, मूर्ति।

1705-स्टीमर = वाष्प शक्ति से चलने वाला जहाज।

1706-सटल वर्ग = आकारी दुनिया, सूक्ष्म लोक।

... साइलेन्स वल्ल्ड फिर सटल वर्ल्ड, वहाँ शरीर ही नहीं है तो आत्मा आवाज कैसे करेगी।...

1707-सुपरवाइज = निगाह रखना।

... कम समझाने वालों को हटा देना चाहिए। सुपरवाइज़ करने पर एक अच्छा होना चाहिए।

1708-स्वीट टेम्पर = मधुर स्वभाव,मधुर मिजाज।

1709-सिम्बल = चिन्ह

कमल पुष्प का सिम्बल बुद्धि में रख, अपने को सैम्पुल समझने वाले न्यारे और प्यारे भव ...

1710-सिम्पथी = तरस, सहानुभूति, हमदर्दी। सिम्पथी की सम्पत्ति सबसे बड़े ते बड़ी है। और कुछ भी नहीं दो लेकिन सिम्पथी से सबको सन्तुष्ट कर सकते हो। ...

1711-टोन्ट = निन्दा करना,ताना मारना।

1712- थ्योरी = सिद्धांत

.. कर्मों की थ्योरी चलती है। श्रीमत से अच्छे कर्म होते हैं ...

1713-थर्ड वर्ल्ड वार दी लास्ट वार = तीसरा विश्व युद्ध ही अंतिम विश्व युद्ध होगा।

नेचुरल कैलेमिटीज भी होनी है। थर्ड वर्ल्ड वार दी लास्ट वार कहते हैं।फाइनल विनाश भी जरूर होना है ...

1714-थॉट रीडर =दूसरों के संकल्पों को जानने वाला; किसी के विचारों का अध्ययन करने वाला।

... बाप कहते हैं मैं कोई थॉट रीडर नहीं हूँ, इतनी बड़ी दुनिया है, इनको क्या बैठ रीड करेंगे।...

1715-टाइम बम = ठीक समय पर फुटने वाला बम।

1716-टिपटॉप =बढ़िया,ठाट बाट, श्रेष्ठ।

मिलेट्री वाले कितने टिपटॉप रहते हैं। तुम बच्चों का नाम कितना बड़ा है शिव शक्ति सेना! ...

1717-टचिंग = ग्रहण करना।

... अमृत्वेले मन का भाव मिक्स करके नहीं बैठो लेकिन प्लेन बुद्धि होकर बैठो फिर टचिंग यथार्थ होगी।

1718-ट्रैफिक कन्ट्रोल= संकल्प रूपी ट्रैफिक (विचारों की दौड़) को नियंत्रण करने के लिए निर्धारित किया गया निश्चित समय।

1719-ट्रेटर = द्रोही, बाबा का बनकर भी ईश्वरीय मत पर न चलने वाले।

ईश्वर के बच्चे बनकर अपनी चलन सुधारते नहीं, आपस में मायावी बातें करते, एक दो को दुःखी करते, वह हैं ट्रेटर। ...

1720-ट्रिब्यूनल= न्याय सभा, धर्म सभा।

...जो दान की हुई चीज़ को वापस लेने का संकल्प करते, माया के वश हो डिससर्विस करते हैं उन्हों के लिए ट्रिव्युनल

बैठती है।

1721-अन्डरस्टुड = साफ, आसानी से समझा जा सकने वाला।

... देवतायें नामीग्रामी हैं । कहते हैं। इनका स्वभाव एकदम देवताई है। तो बाकी का अन्डरस्ट्ड आसुरी हुआ ना। ...

1722-विशश वर्ल्ड = विकारी दुनिया।

यह है ही विशश वर्ल्ड , सब पतित हैं। सतयुग में सभी सम्पूर्ण निर्विकारी हैं। ...

1723-विम्जीकल = अस्थिर।

सभी एक जैसे नहीं हैं - कोई- कोई ऐसे हैं जो अपनी कमजोरी वर्णन करते हैं, विम्जीकल बन जाते हैं ।

1724-वन्डर आफ वर्ल्ड = दुनिया का अद्भुत।

... कहा जाता बाप का एक ही स्वर्ग है वन्डर ऑफ दी वर्ल्ड। नाम ही है पैराडाइज़ ...

1725-वर्ल्ड आलमाइटी अरथॉरिटी = सर्वशक्तिमान; सब वेदों शास्त्रों को जानने वाला।

1726-वर्ल्ड ट्री = कल्पवृक्ष।

बापदादा इस बेहद के वर्ल्ड ट्री में आप चमकते हुए सितारों को, संगमयुगी श्रेष्ठ धरती के सितारों को अविनाशी लाइट-माइट स्टार सजाते हैं।...

1727-वर्थ नॉट ए पेनी = कौड़ी का भी मूल्य नहीं।

कोई धन में मस्त, कोई साइन्स में मस्त, कोई किसमें मस्त.. परन्तु तुम्हारे आगे सब वर्थ नॉट ए पेनी हैं। सबका धन मिट्टी में मिल जाता है।..

1728-वर्थ पाउण्ड = योग्य

श्री लक्ष्मी-नारायण जो वर्थ पाउन्ड थे उन्हों को भी 84 जन्म पूरे करने हैं।...

इति सिद्धम्